Machine Translated by Google

INTERMEDIATE MACROECONOMICS-I: FOUNDATIONS OF AGGREGATE INCOME DETERMINATION

COURSE CREDIT -4

SEMESTER-III
B.A. (HONS.) ECONOMICS - DSC-8

SEMESTER-IV
B.A. (PROGRAMME)- MINOR PAPER (DSC-7)

DEPARTMENT OF DISTANCE AND CONTINUING EDUCATION
CAMPUS OF OPEN LEARNING, SCHOOL OF OPEN LEARNING, UNIVERSITY OF DELHI

AS PER THE UGCF-2022 AND NATIONAL EDUCATION POLICY 2020

Machine Translated by Google

संपादक - मंडल

प्रो. जे. खुंटिया, श्री देवेन्द्र

सामग्री लेखक

सुश्री मनदीप कौर, श्री राजेश कुमार, श्री स्वरूप संतरा

अकादमिक समन्वयक

श्री दीक्षांत अवस्थी

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग

आईएसबीएन: 978-81-19169-91-7

प्रथम संस्करण: 2024

ई-मेल: ddceprinting@col.du.ac.in
economics@col.du.ac.in

द्वारा प्रकाशित:
दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग
ओपन लर्निंग कैम्पस/स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

मुद्रित:
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

इस अध्ययन सामग्री को 11/08/2023 को आयोजित शैक्षणिक परिषद की बैठक में मद संख्या 1015 के तहत तथा तत्पश्चात 25/08/2023 को आयोजित कार्यकारी परिषद की बैठक में मद संख्या 1267 के तहत विधिवत अनुशंसित एवं अनुमोदित किया गया है।

बाह्य समीक्षा समिति

डॉ. अनंत कुमार, सुश्री सरबजीत कौर

स्व-शिक्षण सामग्री (एसएलएम) में हितधारकों को शामिल किया जाएगा

वेबसाइट https://sol.du.ac.in पर अपलोड किया जाएगा। कोई भी फीडबैक या सुझाव ईमेल- feedbackslm@col.du.ac.in पर भेजा जा सकता है।

मुद्रित पता: टैक्समैन पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, 21/35, वेस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली - 110026 (1200 प्रतियां, 2024)

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

पाठ्यक्रम

इंटरमीडिएट मैक्रोइकॉनॉमिक्स I: समग्र आय निर्धारण की नींव

पाठ्यक्रम	मानचित्रण
इकाई I: अल्पावधि और मध्यमावधि संतुलन: श्रम बाजार, मजदूरी निर्धारण; मजदूरी, कीमतें और बेरोजगारी; बेरोजगारी की प्राकृतिक दर; रोजगार से उत्पादन तक, समग्र आपूर्ति वक्र की व्युत्पत्ति, संतुलन उत्पादन, मूल्य स्तर और रोजगार का निर्धारण करने के लिए समग्र मांग और आपूर्ति की परस्पर क्रिया।	पाठ 1: श्रम बाज़ार (पृष्ठ 3-18) पाठ 2: का निर्धारण संतुलन आउटपुट (पृष्ठ 19-42)
इकाई II: फिलिप्स वक्र और अपेक्षाओं का सिद्धांत मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और अपेक्षाएं, फिलिप्स वक्र; अनुकूली और तर्कसंगत अपेक्षाएं; नीति अप्रभावशीलता बहस।	पाठ 3: फिलिप्स वक्र और अपेक्षाओं का सिद्धांत पाठ 4: मुद्रास्फीति और फिलिप्स वक्र (पृष्ठ 45-81)
इकाई III: समष्टि आर्थिक व्यवहारों के सूक्ष्म आर्थिक आधार उपभोग: कीनेसियन उपभोग फलन; फिशर का इष्टतम अंतरकालिक विकल्प का सिद्धांत; जीवन-चक्र और स्थायी आय परिकल्पना; उपभोग व्यय के अन्य सिद्धांत। निवेश: व्यवसाय निश्चित निवेश के निर्धारक; आवासीय निवेश और इन्वेंट्री निवेश।	पाठ 5: उपभोग खर्च (पृष्ठ 85-107) पाठ 6: सिद्धांत उपभोग व्यय (पृष्ठ 109-135) पाठ 7: निवेश कार्य (पृष्ठ 137-159)

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

अंतर्वस्तु

इकाई I: लघु-अवधि और मध्यम-अवधि संतुलन

पाठ 1 श्रम बाज़ार 3-18

1.1 सीखने के उद्देश्य 1.2 परिचय

1.3 मजदूरी निर्धारण 1.4 बेरोजगारी
की प्राकृतिक दर 1.5 रोजगार से उत्पादन तक 1.6 सारांश
1.7 शब्दावली 1.8 पाठ्य में प्रश्नों के उत्तर 1.9 आत्म-
मूल्यांकन प्रश्न

1.10 संदर्भ

1.11 सुझाए गए पठन

पाठ 2 संतुलन उत्पादन का निर्धारण 19-42

2.1 सीखने के उद्देश्य 2.2 परिचय

2.3 बेरोजगारी के प्रकार 2.4 मजदूरी निर्धारण और
मूल्य निर्धारण संबंध के निहितार्थ 2.5 बेरोजगारी की प्राकृतिक दर और संभावित उत्पादन 2.6 समग्र मांग
वक्र 2.7 AD वक्र में बदलाव

2.8 समग्र आपूर्ति वक्र 2.9 समग्र आपूर्ति वक्र की
व्युत्पत्ति 2.10 समग्र मांग और समग्र आपूर्ति की अंतःक्रिया

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

2.11 सारांश 2.12

शब्दावली 2.13 पाठ्य-

अंतर्गत प्रश्नों के उत्तर 2.14 आत्म-मूल्यांकन प्रश्न

2.15 संदर्भ

इकाई II: फिलिप्स वक्र और सिद्धांत अपेक्षाएं

पाठ 3 फिलिप्स वक्र और अपेक्षाओं का सिद्धांत 45-66

3.1 सीखने के उद्देश्य 3.2 परिचय

3.3 बेरोजगारी के प्रकार 3.4 फिलिप्स वक्र 3.5

बेरोजगारी की प्राकृतिक दर

3.6 अर्थशास्त्र में अपेक्षाएँ

3.6.1 अनुकूली अपेक्षाएँ 3.6.2 तर्कसंगत

अपेक्षाएँ 3.7 अपेक्षा-संवर्धित फिलिप्स

वक्र 3.8 अनुकूली अपेक्षाओं के अंतर्गत फिलिप्स वक्र 3.9 तर्कसंगत

अपेक्षाओं के अंतर्गत फिलिप्स वक्र 3.10 अपेक्षा नीति अप्रभावीता बहस 3.11

सारांश 3.12 शब्दावली 3.13 पाठ में प्रश्नों के उत्तर 3.14 आत्म-मूल्यांकन

प्रश्न

3.15 संदर्भ

3.16 सुझाए गए पठन

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,

स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

पाठ 4 मुद्रास्फीति और फिलिप्स वक्र 67-81

4.1 सीखने के उद्देश्य
4.2 परिचय
4.3 मुद्रास्फीति का अर्थ 4.4
मुद्रास्फीति के प्रकार 4.5
फिलिप्स वक्र 4.6
फिलिप्स वक्र की समीक्षा 4.7 मुद्रास्फीतिजनित
मंदी 4.8
मुद्रास्फीतिजनित मंदी के लिए 'शॉक' थेरेपी की आवश्यकता
4.9 सारांश 4.10
शब्दावली 4.11 पाठ
में प्रश्नों के उत्तर 4.12 आत्म-मूल्यांकन प्रश्न

4.13 संदर्भ
4.14 सुझाए गए पठन

इकाई III: सूक्ष्म आर्थिक आधार
समष्टि आर्थिक व्यवहार

पाठ 5 उपभोग व्यय 85-107

5.0 सीखने के उद्देश्य
5.1 परिचय
5.2 कीनेसियन उपभोग फ़ंक्शन 5.3 दो-अवधि मॉडल:
उपभोग का अनुकूलन 5.4 इरविंग फिशर का इंटरटेम्पोरल ऑप्टिमाइज़ेशन
मॉडल 5.5 सारांश 5.6 शब्दावली 5.7 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

5.8 पाठ्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर

5.9 संदर्भ

5.10 सुझाए गए पठन

पाठ 6 उपभोग व्यय के सिद्धांत 109-135

6.0 सीखने के उद्देश्य

6.1 परिचय

6.2 जीवन-चक्र परिकल्पना 6.3 स्थायी

आय परिकल्पना (पीआईएच)

6.4 सापेक्ष आय परिकल्पना 6.5 उपभोग व्यय के

अन्य सिद्धांत 6.6 सारांश 6.7 शब्दावली 6.8 स्व-मूल्यांकन प्रश्न 6.9 पाठ में प्रश्नों

के उत्तर

6.10 संदर्भ

6.11 सुझाए गए पठन

पाठ 7 निवेश कार्य 137-159

7.0 सीखने के उद्देश्य 7.1 परिचय

7.2 निश्चित निवेश: नवशास्त्रीय दृष्टिकोण 7.2.1 पूंजी का वांछित स्टॉक 7.2.2 पूंजी

की सीमांत उत्पादकता 7.2.3 पूंजी की किराया

लागत

7.2.4 निवेश की वास्तविक दर

7.2.5 कर और पूंजी की किराया लागत 7.2.6 शेयर बाजार और

पूंजी की लागत 7.2.7 वांछित पूंजी स्टॉक पर राजकोषीय और मौद्रिक

नीति के प्रभाव 7.2.8 वांछित पूंजी स्टॉक से निवेश तक 7.2.9 पूंजी स्टॉक समायोजन

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,

स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

7.2.10 निवेश का समय और निवेश कर क्रेडिट 7.2.11 अनुभवजन्य परिणाम

7.3 व्यवसाय निश्चित निवेश: वैकल्पिक दृष्टिकोण

7.3.1 व्यवसाय निवेश निर्णय

7.3.2 एक्सेलेरेटर मॉडल और पूंजीगत प्रभाव की लागत 7.3.3 क्रेडिट राशनिंग

और वित्त के आंतरिक स्रोत 7.3.4 निवेश में उतार-चढ़ाव क्यों होता है?

7.4 आवासीय निवेश

7.4.1 सिद्धांत

7.4.2 मौद्रिक नीति और आवास निवेश

7.5 इन्वेंटरी निवेश 7.5.1 प्रत्याशित

बनाम अप्रत्याशित इन्वेंटरी निवेश 7.5.2 व्यापार चक्र में इन्वेंटरी 7.5.3 जस्ट-

इन-टाइम इन्वेंटरी निवेश

7.6 सारांश 7.7

शब्दावली 7.8 पाठ्य-

अंतर्गत प्रश्नों के उत्तर 7.9 आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 7.10 संदर्भ

7.11 सुझाए गए पठन

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

इकाई I: लघु-अवधि और मध्यम-अवधि संतुलन

पाठ 1 श्रम बाज़ार

पाठ 2 संतुलन का निर्धारण आउटपुट

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ 1
श्रम बाजार

डॉ. मनदीप कौर सहायक
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय

संरचना

1.1 सीखने के उद्देश्य 1.2 परिचय 1.3
मजदूरी निर्धारण 1.4
बेरोजगारी की प्राकृतिक दर 1.5 रोजगार से
उत्पादन तक 1.6 सारांश 1.7 शब्दावली 1.8 पाठ्य-अध्याय
प्रश्नों के उत्तर 1.9 आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1.10 संदर्भ 1.11
सुझाए गए पठन

1.1 सीखने के उद्देश्य

यह समझना कि श्रम बाजार में मजदूरी का निर्धारण कैसे किया जाता है।

श्रमिकों की सौदेबाजी शक्ति को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में जानना।

दक्षता मजदूरी सिद्धांतों के बारे में जानने के लिए।

कीमतों और बेरोजगारी दर के आधार पर मजदूरी के बीच संबंध को समझना।

मजदूरी और बेरोजगारी दर के अलावा मजदूरी को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों को समझना। इन अन्य कारकों में रोजगार बीमा, रोजगार सुरक्षा और न्यूनतम मजदूरी कानून शामिल हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

प्राकृतिक दर बेरोजगारी (बेरोजगारी की वह दर जिसकी ओर अर्थव्यवस्था मध्यम अवधि में बढ़ती है) की अवधारणा के साथ श्रम बाजार में संतुलन को समझना।

रोजगार और उत्पादन स्तर के बीच संबंध स्थापित करना।

1.2 परिचय

वस्तुओं की मांग में वृद्धि से फर्मों को अपना उत्पादन स्तर बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाता है। फर्मों को अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए, अर्थव्यवस्था में रोजगार में वृद्धि होनी चाहिए। रोजगार में वृद्धि से अर्थव्यवस्था में मजदूरी में वृद्धि होती है।
मजदूरी में यह वृद्धि उत्पादन की लागत में वृद्धि की ओर ले जाती है, जिससे कीमतों में वृद्धि होती है। कीमतों में यह वृद्धि श्रमिकों को निरंतर जीवन स्तर बनाए रखने के लिए उच्च मजदूरी की मांग करने के लिए प्रेरित करती है।

आईएस-एलएम मॉडल अर्थव्यवस्था में स्थिर मूल्य स्तर को मानता है। हालांकि, जब स्थिर कीमतों की धारणा को छोड़ दिया जाता है, जैसा कि मध्यम और लंबी अवधि में अनुभव किया जाता है, तो मजदूरी, कीमतों और उत्पादन से संबंधित नई अंतर्दृष्टि उभरती है।

इस मॉड्यूल का उद्देश्य कीमतों और अर्थव्यवस्था में रोजगार के स्तर के आधार पर मजदूरी निर्धारण की इन अवधारणाओं को समझना है।
इसके अलावा, मध्यम अवधि में रोजगार और उत्पादन के बीच संबंध का भी आकलन किया जाता है। श्रम बाजार संतुलन के किसी भी विश्लेषण से पहले, हम श्रम बाजार से संबंधित कुछ प्रमुख अवधारणाओं को संक्षेप में परिभाषित करते हैं।

अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी का एक माप बेरोजगारी दर है, जिसे श्रम बल में लोगों की संख्या के अनुपात के रूप में बेरोजगार लोगों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) विभिन्न गतिविधि स्थितियों के आधार पर गतिविधि स्थिति (चाहे रोजगार या बेरोजगार) को परिभाषित करता है, जैसे, कार्यरत (या किसी आर्थिक गतिविधि में लगे हुए और इसलिए, कार्यरत), काम के लिए उपलब्ध (या बेरोजगार), और न तो काम की तलाश कर रहे हैं और न ही काम के लिए उपलब्ध हैं।

भारत में बेरोजगारी को निम्नलिखित तरीकों के आधार पर मापा जाता है:

(ए) सामान्य स्थिति दृष्टिकोण: यह दृष्टिकोण मृत्यु की तिथि से पहले के 365 दिनों के दौरान बड़े पैमाने पर बेरोजगार व्यक्तियों के अनुमानों का उपयोग करता है।

सर्वेक्षण।

स्व निर्देशात्मक
4 सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

(बी) साप्ताहिक स्थिति दृष्टिकोण: वह दृष्टिकोण जो बेरोजगारी की तिथि से पहले सप्ताह के किसी भी दिन एक घंटे के लिए बेरोजगार व्यक्तियों के अनुमानों का उपयोग करता है।

सर्वेक्षण।

(सी) दैनिक स्थिति दृष्टिकोण: यह दृष्टिकोण उन व्यक्तियों के अनुमानों का उपयोग करता है जो

एक दिन में एक घंटे के लिए भी काम नहीं किया जा सकता।

एनएसएसओ द्वारा परिभाषित रोजगार और बेरोजगारी से संबंधित परिभाषाओं का संक्षिप्त अवलोकन करने के बाद, अगले अनुभाग में मजदूरी निर्धारण के सैद्धांतिक पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

1.3 मजदूरी निर्धारण

वेतन निर्धारित करने के कई तरीके हैं। कभी-कभी, वे सामूहिक सौदेबाजी द्वारा निर्धारित किए जाते हैं, जिसका अर्थ है कि वेतन किसी फर्म और श्रमिकों के संघ के बीच सौदेबाजी द्वारा निर्धारित किया जाता है। अन्य समय में, वेतन पूरी तरह से नियोक्ता द्वारा या नियोक्ता और व्यक्तिगत कर्मचारी के बीच सौदेबाजी द्वारा निर्धारित किया जाता है।

सामान्य तौर पर, किसी विशेष कार्य को करने के लिए आवश्यक कौशल बढ़ने पर सौदेबाजी बढ़ जाती है। आरक्षण मजदूरी को उस मजदूरी स्तर के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके नीचे काम करने वाला व्यक्ति काम करने और बेरोजगार न रहने के बीच उदासीन रहता है। आरक्षण मजदूरी से ऊपर, मजदूरी का स्तर श्रम बाजार की स्थितियों पर निर्भर करता है, जिसका अर्थ है कि जब बेरोजगारी दर कम होती है तो मजदूरी अधिक होती है और इसके विपरीत।

मजदूरी निर्धारण के उपर्युक्त सामान्य सिद्धांत को दो कारकों द्वारा समझाया गया है: श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति (अर्थात्, श्रमिकों के पास अपने आरक्षित वेतन से अधिक मजदूरी पाने के लिए कुछ सौदेबाजी की शक्ति होती है), और दूसरा, दक्षता मजदूरी (अर्थात्, फर्म श्रमिकों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए स्वयं आरक्षित वेतन से अधिक मजदूरी प्रदान करती हैं)।

(ए) श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति: श्रमिकों के पास यह तय करने के लिए कुछ हद तक सौदेबाजी की शक्ति होती है कि उन्हें कितना वेतन मिलना चाहिए। सौदेबाजी की शक्ति किसी विशेष कार्य को करने के लिए आवश्यक कौशल के स्तर पर निर्भर करती है। जितना अधिक कौशल की आवश्यकता होगी, श्रमिक की सौदेबाजी की शक्ति उतनी ही अधिक होगी। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि फर्म के लिए मौजूदा कर्मचारी की जगह नया कर्मचारी ढूँढना कितना महंगा है। उदाहरण के लिए, मैकडॉनल्ड्स में किसी कर्मचारी के लिए आवश्यक कौशल को आसानी से सिखाया जा सकता है। यदि कर्मचारी अधिक वेतन के लिए सौदेबाजी करता है, तो उसे बदला जा सकता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

दूसरे कर्मचारी के साथ जिसे वही कौशल सिखाया जाता है जिसकी लागत कम होती है। इस प्रकार, इस मामले में कर्मचारी की प्रतिस्थापन लागत कम है जिससे कर्मचारी की सौदेबाजी की ताकत कम हो जाती है। दूसरी ओर, उच्च कौशल सेट वाले कर्मचारी के पास सौदेबाजी की शक्ति अधिक होती है क्योंकि कर्मचारी को बदलना महंगा होता है।

दूसरे, किसी कर्मचारी की सौदेबाजी की शक्ति भी श्रम बाजार की स्थितियों पर काफी हद तक निर्भर करती है। बेरोजगारी दर जितनी कम होगी, कर्मचारियों की सौदेबाजी की शक्ति उतनी ही अधिक होगी क्योंकि कंपनियों को अपने कर्मचारियों की प्रतिस्थापन लागत अधिक उठानी पड़ती है।

(बी) दक्षता मजदूरी: कर्मचारी की सौदेबाजी की शक्ति के बावजूद, फर्म खुद अपने कर्मचारियों से उच्च उत्पादकता प्राप्त करने के लिए आरक्षण मजदूरी से अधिक मजदूरी प्रदान करती हैं। आरक्षण मजदूरी से अधिक मजदूरी न केवल कर्मचारियों के लिए फर्म में कार्यरत रहना आकर्षक बनाती है (जिससे टर्नओवर दर कम होती है, यानी एक फर्म से दूसरी फर्म में कर्मचारियों का स्थानांतरण), बल्कि यह कर्मचारियों को उनके काम के संबंध में अधिक उत्पादक भी बनाती है।

दक्षता मजदूरी सिद्धांत, श्रमिकों की सौदेबाजी शक्ति पर आधारित उपरोक्त सिद्धांतों के अनुरूप, यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मजदूरी श्रमिकों के कौशल सेट और श्रम बाजार की स्थितियों दोनों पर निर्भर करती है। इस प्रकार, उच्च कौशल सेट की आवश्यकता वाली फर्में, जैसे उच्च-प्रौद्योगिकी फर्में, अपने श्रमिकों को लंबे समय तक उनके साथ रहने के लिए अधिक भुगतान करती हैं।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

1. मजदूरी निम्नलिखित में से किस तरीके से निर्धारित की जाती है:

(क) फर्मों और यूनियनों के बीच सौदेबाजी। (ख) नियोक्ता द्वारा एकतरफा। (ग) नियोक्ता और व्यक्तिगत कर्मचारी के बीच सौदेबाजी। (घ) उपर्युक्त सभी।

2. निम्नलिखित में से कौन आरक्षित मजदूरी को परिभाषित करता है: (a) कर्मचारी के लिए विशेष कार्य आरक्षित करने के लिए आवश्यक मजदूरी। (b) कार्य के लिए विशेष कर्मचारी को आरक्षित करने के लिए आवश्यक मजदूरी। (c) न्यूनतम मजदूरी जो कर्मचारी को काम करने और बेरोजगार रहने के बीच उदासीन बनाती है। (d) कर्मचारी को दी जाने वाली अधिकतम मजदूरी।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

3. किसी कर्मचारी का उच्च कौशल:

(a) किसी फर्म के कर्मचारी की प्रतिस्थापन लागत बढ़ जाती है। (b) किसी फर्म के कर्मचारी की प्रतिस्थापन लागत कम हो जाती है। (c) कौशल फर्म की प्रतिस्थापन लागत को प्रभावित नहीं करते हैं। (d) किसी श्रमिक की सौदेबाजी की शक्ति कम हो जाती है।

4. मंदी के समय में:

(क) बेरोजगारी दर कम है और अच्छे प्रतिस्थापन श्रमिकों को ढूंढना मुश्किल है। (ख) बेरोजगारी दर अधिक है और अच्छे प्रतिस्थापन श्रमिकों को ढूंढना मुश्किल है।
कठिन।

(c) बेरोजगारी दर कम है और अच्छे प्रतिस्थापन कर्मचारी ढूंढना आसान है। (d) बेरोजगारी दर अधिक है और अच्छे प्रतिस्थापन कर्मचारी ढूंढना आसान है।
आसान।

5. दक्षता मजदूरी सिद्धांत सुझाव देते हैं कि:

(क) श्रमिकों की उत्पादकता और उनको दिए जाने वाले वेतन के बीच संबंध है। (ख) अधिक वेतन से फर्म की टर्नओवर दर कम हो जाती है। (ग) उच्च प्रौद्योगिकी फर्म अपने कर्मचारियों को अन्य फर्मों की तुलना में अधिक भुगतान करेंगी। (घ) उपर्युक्त सभी।

मजदूरी, कीमतें और बेरोजगारी

इस प्रकार, हम मजदूरी निर्धारण को निम्नलिखित समीकरण के आधार पर चित्रित कर सकते हैं:

WPF उज़ैं , (1)

समीकरण (1) बताता है कि नाममात्र मजदूरी दर (W) तीन चर द्वारा निर्धारित की जाती है: अपेक्षित मूल्य स्तर (पीई), बेरोजगारी दर (यू) और अन्य सभी चर (जेड)।

(ए) अपेक्षित मूल्य स्तर: अपेक्षित मूल्य स्तर में वृद्धि से नाममात्र मजदूरी में उसी अनुपात में वृद्धि होगी, जिस अनुपात में वास्तविक मजदूरी में वृद्धि होगी, जो स्थिर रहेगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि श्रमिकों का उद्देश्य उच्च नाममात्र मजदूरी प्राप्त करना नहीं है, बल्कि नाममात्र मजदूरी की राशि से खरीदे जा सकने वाले सामानों की मात्रा से अधिक वास्तविक मजदूरी प्राप्त करना है। इस प्रकार, यदि नाममात्र मजदूरी को W के रूप में दर्शाया जाता है, तो वास्तविक मजदूरी है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

इसे W/P के रूप में दर्शाया जाता है, जहाँ P का अर्थ है कीमतें। उच्च मूल्य स्तर, P, वास्तविक मज़दूरी दर को स्थिर रखने के लिए उच्च नाममात्र मज़दूरी दर की गारंटी देता है।

इस प्रकार, यदि यह उम्मीद की जाती है कि भविष्य में कीमतें बढ़ेंगी, तो श्रमिक अपने वर्तमान स्तर से दोगुनी मजदूरी दर की मांग करेंगे। साथ ही, फर्म के दृष्टिकोण से, यदि फर्म को उम्मीद है कि भविष्य में मूल्य स्तर दोगुना हो जाएगा (या कि उनके माल की बिक्री से उन्हें मिलने वाला रिटर्न दोगुनी कीमत के संदर्भ में बढ़ जाएगा), तो वे अपने श्रमिकों को दिए जाने वाले वेतन को दोगुना करना चाहेंगे।

इस प्रकार, प्रासंगिक मूल्य चर वास्तविक मूल्य स्तर के बजाय अपेक्षित मूल्य स्तर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि फर्मों और यूनियनों (या फर्मों और व्यक्तिगत श्रमिकों के बीच या नियोक्ता द्वारा स्वयं निर्धारित) के बीच सौदेबाजी आने वाले वर्षों के लिए अग्रिम रूप से मजदूरी निर्धारित करती है। इसलिए, आने वाले कुछ वर्षों के लिए नाममात्र मजदूरी का आकलन करने के लिए आने वाले वर्षों में अपेक्षित मूल्य स्तर (पीई) का आकलन आवश्यक है। किसी विशेष वर्ष में कीमत में अप्रत्याशित वृद्धि के आलोक में भी, मजदूरी सौदेबाजी समझौते के आधार पर स्थिर रहती है।

(b) बेरोज़गारी दर: बेरोज़गारी दर में वृद्धि से आयु कम होगी, और इसके विपरीत। उच्च बेरोज़गारी दर से कर्मचारी की सौदेबाजी की शक्ति कम हो जाती है, जिससे उनका वेतन स्तर कम हो जाता है। उच्च बेरोज़गारी दर से फर्म द्वारा अपने कर्मचारियों को प्रतिबद्ध और फर्म के प्रति आकर्षित रखने के लिए दी जाने वाली दक्षता वेतन की मात्रा भी कम हो जाती है, जिससे वेतन दर कम हो जाती है। (c) अन्य कारक: वेतन दर निर्धारित करने वाले कुछ अन्य कारकों में बेरोज़गारी बीमा, न्यूनतम वेतन और रोज़गार सुरक्षा शामिल हैं। बेरोज़गारी बीमा उन कर्मचारियों को बेरोज़गारी लाभ प्रदान करता है,

जो अपनी नौकरी खो देते हैं। बेरोज़गारी के एक निश्चित स्तर पर, उच्च बेरोज़गारी बीमा उनकी सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाकर वेतन स्तर को बढ़ा देगा। इसी तरह, न्यूनतम वेतन में वृद्धि से भी एक निश्चित बेरोज़गारी दर पर वेतन दर बढ़ जाती है

स्व निर्देशात्मक
8 सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

1.4 बेरोजगारी की प्राकृतिक दर

मजदूरी-निर्धारण और मूल्य-निर्धारण संबंध संतुलन दर निर्धारित करते हैं
बेरोज़गारी, जिसे बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर के रूप में भी जाना जाता है।

(ए) मजदूरी निर्धारण संबंध

यह धारणा बनाना कि नाममात्र मजदूरी वास्तविक मूल्य स्तर या पी पर निर्भर करती है और
समीकरण (1) में मानी गई अपेक्षित मूल्य स्तर (पीई) पर नहीं, हमें निम्नलिखित मिलता है
वेतन निर्धारण संबंध:

WPF यू, जेड (2)

समीकरण (2) को दोनों तरफ कीमतों (P) से विभाजित करने पर निम्नलिखित प्राप्त होता है:

$$\frac{\text{डब्ल्यू}}{\text{पी}} \quad \text{फ़ूज़} \quad , \qquad (3)$$

इस प्रकार, समीकरण (3) का तात्पर्य है कि वास्तविक के बीच एक नकारात्मक संबंध है
मजदूरी दर, डब्ल्यू/पी और बेरोजगारी दर, यू। मजदूरी और के बीच यह संबंध
बेरोजगारी दर को आंकड़ा 1.1 द्वारा दर्शाया गया है, जो नीचे की ओर झुकाव दर्शाता है
मजदूरी-निर्धारण संबंध, जिसमें x-अक्ष पर बेरोजगारी दर और y-अक्ष पर वास्तविक मजदूरी है।

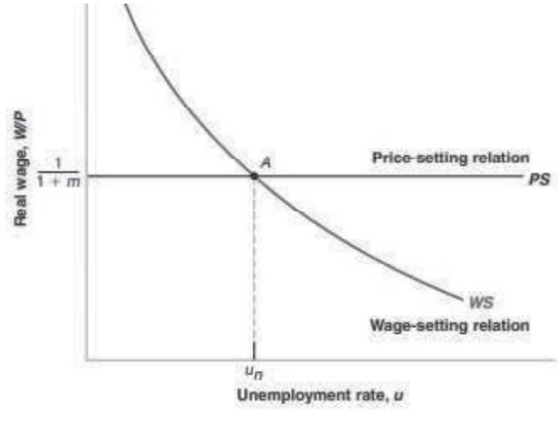

चित्र 1.1

स्व निर्देशात्मक
सामग्री 9

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

(बी) मूल्य-निर्धारण संबंध

मूल्य-निर्धारण संबंध उन कीमतों को निर्धारित करता है जो फर्म द्वारा सामना की जाने वाली उत्पादन लागत के आधार पर फर्मों द्वारा निर्धारित की जाती हैं। उत्पादन की लागत फर्म के उत्पादन कार्य के प्रकार पर निर्भर करती है। उत्पादन कार्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए उपयोग किए जाने वाले इनपुट और आउटपुट की मात्रा और उनकी कीमतों के बीच संबंध को दर्शाता है।

यह मानते हुए कि फर्म कारक उत्पादन के रूप में केवल श्रम का उपयोग करती है, हम उत्पादन फलन को इस प्रकार लिख सकते हैं:

वाई = एएन (4)

जहाँ, Y उत्पादन मात्रा है, N रोजगार है और A को श्रम उत्पादकता (या प्रति श्रमिक उत्पादित उत्पादन) के रूप में परिभाषित किया गया है। समीकरण 4 में परिभाषित उत्पादन फ़ंक्शन का तात्पर्य है कि श्रम उत्पादकता A पर स्थिर है, और पैमाने पर स्थिर रिटर्न वाला उत्पादन फ़ंक्शन (यानी जब श्रमिकों की संख्या दोगुनी हो जाती है, उदाहरण के लिए, उत्पादित उत्पादन की मात्रा भी दोगुनी हो जाती है)।

इसके अलावा, हम A=1 की एक और सरलीकरण धारणा बनाते हैं जिसका अर्थ है कि श्रम उत्पादकता 1 पर स्थिर है या एक श्रमिक उत्पादन की एक इकाई का उत्पादन करता है।
इस प्रकार प्राप्त उत्पादन फलन निम्नलिखित समीकरण द्वारा दिया गया है:

वाई = एन (5)

इस प्रकार समीकरण 5 का तात्पर्य है कि उत्पादन की एक और इकाई के उत्पादन की सीमांत लागत एक और कर्मचारी को नियुक्त करने की सीमांत लागत, या W (यह देखते हुए कि श्रम उत्पादन का एकमात्र कारक है और मजदूरी फर्म के उत्पादन की एकमात्र लागत है) द्वारा दी गई है। इसलिए, उपरोक्त समीकरण से, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि उत्पादन की एक और इकाई के उत्पादन की सीमांत लागत W के बराबर है। एक पूरी तरह से प्रतिस्पर्धी बाजार अर्थव्यवस्था में, कीमतें (P) हमेशा एक फर्म के संतुलन के लिए सीमांत लागत (MC) के बराबर होती हैं। हालांकि, एक अपूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था (जैसे एकाधिकार, एकाधिकार और अल्पाधिकार) के लिए, संतुलन में, कीमतें (P) हमेशा उत्पादन की सीमांत लागत से अधिक होती हैं।

ये परिणाम बुनियादी सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण से प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार, एक संबंध प्राप्त करने के लिए जो दिखाता है कि कीमतें (P) उत्पादन की सीमांत लागत (MC) से अधिक हैं, जो मजदूरी (W) के बराबर है, जैसा कि ऊपर दिए गए सरलीकृत उत्पादन फ़ंक्शन से प्राप्त किया गया है, निम्नलिखित संबंध लिया जाता है: P = (1 + m)W

(6)

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

जहाँ, m को लागत पर कीमत के मार्कअप के रूप में परिभाषित किया गया है। पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में, m 0 के बराबर होता है और P W के बराबर होता है। अपूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धी बाजारों के मामले में, m सकारात्मक होता है और P W से अधिक होता है (जो उत्पादन फ़ंक्शन से प्राप्त उत्पादन की सीमांत लागत के बराबर होता है)।

मूल्य निर्धारण समीकरण से, हम दोनों पक्षों को W से विभाजित करके और समीकरण के दोनों पक्षों का व्युत्क्रम लेकर मूल्य निर्धारण संबंध प्राप्त करते हैं, जैसा कि निम्नलिखित समीकरण द्वारा दिया गया है:

$$\frac{\text{डब्ल्यू}}{\text{पी}} \quad \frac{1}{1 \quad \text{एम}} \qquad (7)$$

समीकरण 7 में कहा गया है कि जब फर्म मार्कअप (m) बढ़ाती हैं, तो कीमतों (P) में वृद्धि के कारण वास्तविक मजदूरी में कमी आती है। मूल्य-निर्धारण संबंध को चित्र 1.1 में x-अक्ष के समानांतर खींची गई एक क्षैतिज रेखा के रूप में दिखाया गया है, जिसमें y-अक्ष पर वास्तविक मजदूरी और x-अक्ष पर बेरोजगारी दर, u है।

(सी) संतुलन वास्तविक मजदूरी

श्रम बाजार संतुलन तब प्राप्त होता है जब मजदूरी-निर्धारण संबंधों में चुनी गई वास्तविक मजदूरी मूल्य निर्धारण-संबंधों में चुनी गई वास्तविक मजदूरी के बराबर होती है । जैसा कि चित्र 1.1 में दिखाया गया है, संतुलन बिंदु A द्वारा दिया जाता है, जो बेरोजगारी की संतुलन दर को निर्धारित करता है ।

संतुलन बेरोजगारी दर, अन वह स्तर है जहाँ मजदूरी-निर्धारण संबंध द्वारा निर्धारित वास्तविक मजदूरी, मूल्य निर्धारण संबंध द्वारा निहित वास्तविक मजदूरी के बराबर होती है। बेरोजगारी की इस संतुलन दर को बेरोजगारी की प्राकृतिक दर कहा जाता है।

बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर वेतन निर्धारण संबंध में किसी भी परिवर्तन के साथ बदलती है। चर z में वृद्धि (उदाहरण के लिए, बेरोज़गारी लाभों में किसी भी वृद्धि से) वेतन-निर्धारण संबंध वक्र को दाईं ओर स्थानांतरित करती है। उच्च बेरोज़गारी लाभ श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाते हैं, जिससे बेरोज़गारी की एक निश्चित दर पर वेतन में वृद्धि होती है। चित्र में दिखाए अनुसार WS से WS' तक वेतन निर्धारण का दाईं ओर स्थानांतरण, जिससे बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर में वृद्धि होती है (चित्र 1.2(a))।

बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर भी मूल्य-निर्धारण संबंध में किसी भी बदलाव के साथ बदलती है। फर्मों द्वारा लगाए गए मार्कअप में वृद्धि वास्तविक मज़दूरी को कम करती है, जैसा कि मूल्य निर्धारण संबंध द्वारा निहित है, जिससे मूल्य निर्धारण में नीचे की ओर बदलाव होता है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

संबंध, जैसा कि चित्र 1.2(बी) में दिखाया गया है। इससे बेरोजगारी की प्राकृतिक दर में वृद्धि होती है। मार्कअप में वृद्धि तभी संभव है जब मौजूदा फर्में आपस में मिल जाएं या मिलीभगत करें, जिससे अर्थव्यवस्था में फर्मों के बीच प्रतिस्पर्धा कम हो। इस प्रकार, अर्थव्यवस्था में फर्मों की संख्या कम करके (मिलीभगत के कारण), फर्म अधिक कीमत वसूलने में सक्षम हो जाती हैं (मार्कअप, एम बढ़ाकर)। इससे अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी की प्राकृतिक दर बढ़ जाती है क्योंकि श्रमिक इस कम मजदूरी दर को केवल बेरोजगारी के उच्च स्तर पर ही स्वीकार करते हैं।

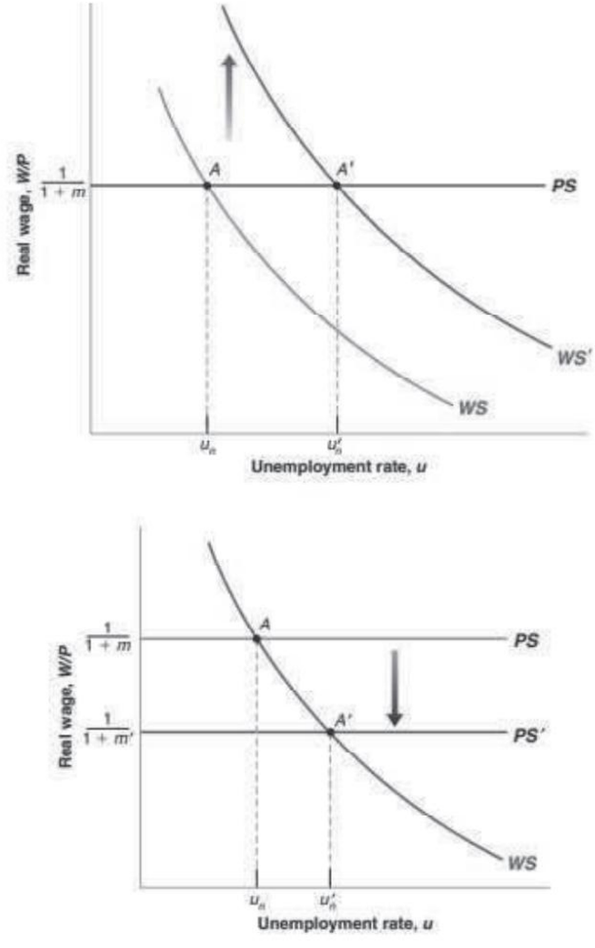

चित्र 1.2 (ए) (बी)

इस प्रकार बेरोजगारी की प्राकृतिक दर काफी हद तक उन नीतियों और संस्थाओं पर निर्भर करती है जो उन नीतियों को लागू करती हैं।

स्व निर्देशात्मक
12 सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

बेरोजगारी लाभ या जो किसी अर्थव्यवस्था में फर्मों के बीच अधिक प्रतिस्पर्धा को कम करते हैं, फर्मों की बाजार शक्ति को बढ़ाते हैं, बेरोजगारी की प्राकृतिक दर को बढ़ाते हैं। बेरोजगारी की प्राकृतिक दर को बेरोजगारी की संरचनात्मक दर भी कहा जाता है, क्योंकि बेरोजगारी की प्राकृतिक दर (जैसे बेरोजगारी लाभ की मात्रा) निर्धारित करने वाले चर अर्थव्यवस्था की संरचना से संबंधित होते हैं। इस प्रकार बेरोजगारी की संरचनात्मक दर को बदलने के लिए अर्थव्यवस्था की संरचना को बदलने की आवश्यकता होती है।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

6. मजदूरी निर्भर करती है: (क)
अपेक्षित मूल्य स्तर और बेरोजगारी दर। (ख) न्यूनतम मजदूरी कानून (ग)
वास्तविक मूल्य स्तर और बेरोजगारी दर।
(घ) विकल्प (क) और (ख)।

7. वेतन निर्धारण संबंध दर्शाता है:
(क) मजदूरी निर्धारकों द्वारा चुनी गई वास्तविक मजदूरी और बेरोजगारी दर के बीच नकारात्मक संबंध।

(b) वास्तविक मजदूरी और बेरोजगारी बीमा के बीच सकारात्मक संबंध। (c) विकल्प (a) और (b)
दोनों। (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

8. फर्मों द्वारा मार्कअप में वृद्धि कर्मचारियों को दिए जाने वाले वास्तविक वेतन को कम करती है: (a) कर्मचारियों
को दिए जाने वाले नाममात्र वेतन को कम करके। (b) फर्मों की कीमतों में
वृद्धि करके। (c) आउटपुट स्तर को कम करके। (d)
उपरोक्त में से कोई नहीं।

9. श्रम बाजार में संतुलन का तात्पर्य निम्नलिखित में से कौन सा है:
(क) श्रम की मांग की मात्रा, आपूर्ति की गई श्रम की मात्रा के बराबर होती है। (ख) मजदूरी निर्धारण संबंध से प्राप्त वास्तविक
मजदूरी, मजदूरी निर्धारण संबंध से प्राप्त वास्तविक मजदूरी के बराबर होती है।
(ग) बेरोजगारी की प्राकृतिक दर
नीतियों से अप्रभावित रहती है। (घ) उपर्युक्त सभी।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

10. बेरोजगारी की प्राकृतिक दर बढ़ती है: (क) बेरोजगारी लाभ में कमी
के साथ। (ख) फर्मों के मार्कअप में कमी के साथ। (ग)
फर्मों के बीच प्रतिस्पर्धा के स्तर में कमी के साथ। (घ)
उपरोक्त में से कोई नहीं।

1.5 रोजगार से उत्पादन तक

अब तक का विश्लेषण बेरोज़गारी के संतुलन स्तर को निर्धारित करता है। किसी अर्थव्यवस्था में बेरोज़गारी के एक विशेष स्तर को देखते हुए, उस अर्थव्यवस्था में रोज़गार का स्तर निर्धारित किया जा सकता है। किसी दिए गए उत्पादन फ़ंक्शन (जो नियोजित श्रमिकों की संख्या का एक फ़ंक्शन है) के साथ, किसी अर्थव्यवस्था का उत्पादन स्तर निर्धारित किया जा सकता है। इस प्रकार, रोज़गार की प्राकृतिक दर किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादन की प्राकृतिक दर निर्धारित करती है।

आईएस-एलएम विश्लेषण किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के संतुलन स्तर को निर्धारित करता है। आईएस-एलएम विश्लेषण के ढांचे के भीतर, मौद्रिक या राजकोषीय नीति में परिवर्तन (जैसा कि आईएस और एलएम वक्रों में बदलाव से निहित है) संतुलन उत्पादन में परिवर्तन की ओर ले जाता है। हालाँकि, वर्तमान मॉड्यूल का व्यापक निष्कर्ष यह है कि श्रम बाजार संतुलन अर्थव्यवस्था में उत्पादन के स्तर को निर्धारित करता है।

अर्थव्यवस्था में उत्पादन के स्तर को निर्धारित करने वाले कारकों के बीच यह अंतर उत्पादन के निर्धारण के लिए ली गई समय अवधि पर निर्भर करता है। इस प्रकार, अल्पावधि में, मौद्रिक और राजकोषीय नीतियां उत्पादन के संतुलन स्तर को निर्धारित करती हैं। हालांकि, दीर्घावधि में, उत्पादन रोजगार (या बेरोजगारी) के प्राकृतिक स्तर पर बना रहता है, जैसा कि उपरोक्त श्रम बाजार संतुलन स्थितियों द्वारा निर्धारित किया जाता है।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

11. किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादन का स्तर इस पर निर्भर करता है:
(क) अल्पावधि में मौद्रिक और राजकोषीय नीतियाँ। (ख) मध्यम
अवधि में बेरोज़गारी दर। (ग) विकल्प (क) और (ख) दोनों। (घ)
उपर्युक्त में से कोई नहीं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

12. बेरोजगारी दर को इस प्रकार परिभाषित किया
जाता है: (क) श्रम बल में लोगों की संख्या का कार्यशील आयु वाली आबादी से अनुपात। (ख) बेरोजगारों की संख्या का कार्यशील आयु वाली आबादी से अनुपात। (ग) श्रम बल में लोगों की संख्या का बेरोजगारों की संख्या से अनुपात। (घ) बेरोजगार लोगों की संख्या का श्रम बल में लोगों की संख्या से अनुपात
बल।

13. मध्यम अवधि में वस्तुओं की मांग में वृद्धि: (a) रोजगार, मजदूरी, उत्पादन की लागत और वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होगी। (b) दी गई कीमतों पर किसी भी मात्रा में वस्तुओं की आपूर्ति में वृद्धि होगी। (c) (a) और (b) दोनों। (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

1.6 सारांश

जो व्यक्ति काम कर रहे हैं और जो काम की तलाश कर रहे हैं, वे मिलकर किसी अर्थव्यवस्था की श्रम शक्ति का निर्माण करते हैं। श्रम शक्ति में व्यक्तियों की संख्या में बेरोजगार व्यक्तियों के अनुपात को किसी अर्थव्यवस्था की बेरोजगारी दर के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह बेरोजगारी और अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। मजदूरी दर बेरोजगारी दर (उलटा) और सीधे अपेक्षित मूल्य स्तर पर निर्भर करती है। मजदूरी और बेरोजगारी दर के बीच के इस संबंध को मजदूरी-निर्धारण संबंध कहा जाता है। मजदूरी विभिन्न तरीकों से निर्धारित की जाती है जिसमें सामूहिक सौदेबाजी, श्रमिकों और नियोक्ताओं के बीच सौदेबाजी या नियोक्ताओं द्वारा स्वयं एकतरफा सौदेबाजी शामिल है।

मूल्य-निर्धारण संबंध वास्तविक मजदूरी और फर्मों द्वारा लगाए गए मूल्यों पर मार्कअप के बीच व्युत्क्रम संबंध को रेखांकित करता है। अंत में, श्रम बाजार में संतुलन तब प्राप्त होता है जब मजदूरी निर्धारण संबंध में निर्धारित वास्तविक मजदूरी, मूल्य-निर्धारण संबंध से प्राप्त मजदूरी के बराबर होती है। इस संतुलन बेरोजगारी दर को बेरोजगारी की प्राकृतिक दर कहा जाता है। मध्यम अवधि में, बेरोजगारी और उसके संगत रोजगार और उत्पादन स्तर बेरोजगारी की प्राकृतिक दर पर वापस आ जाते हैं।

अल्पावधि में, उत्पादन मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों से प्रभावित होता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

1.7 शब्दावली

बेरोजगारी दर: इसे श्रम बल में लोगों की संख्या के अनुपात में बेरोजगार लोगों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है।

सामूहिक सौदेबाजी: एक या फर्मों के समूह और कर्मचारियों के संघ या संघ के समूह के बीच सौदेबाजी।

आरक्षित वेतन: वह वेतन जो कर्मचारियों को कार्यरत या काम न करने के बीच विभेदित करता है।

दक्षता मजदूरी सिद्धांत: वे सिद्धांत जो श्रमिकों की उत्पादकता को श्रमिकों को दी जाने वाली मजदूरी दर से सकारात्मक रूप से जोड़ते हैं।

बेरोजगारी बीमा: बेरोजगारी लाभ उन कर्मचारियों को दिया जाता है जो अपनी नौकरी खो देते हैं।

रोजगार संरक्षण: विभिन्न कानूनों और उनके कार्यान्वयन के रूप में उठाए गए उपाय, जिससे श्रमिकों की छंटनी करना कठिन हो जाता है।

न्यूनतम मजदूरी: इसे पारिश्रमिक की न्यूनतम राशि के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे नियोक्ता को एक निश्चित अवधि के दौरान किए गए कार्य के लिए मजदूरों को भुगतान करना होता है, जिसे सामूहिक समझौते या व्यक्तिगत अनुबंध द्वारा कम नहीं किया जा सकता है।

उत्पादन फलन: उत्पादन में प्रयुक्त इनपुट और उत्पादित आउटपुट की मात्रा के बीच संबंध।

मार्कअप: किसी वस्तु के उत्पादन की कीमत और सीमांत लागत के बीच का अंतर। पूर्ण प्रतिस्पर्धा में, कीमत सीमांत लागत के बराबर होती है और मार्कअप शून्य होता है। अपूर्ण बाज़ारों में, मार्कअप सकारात्मक होता है क्योंकि कीमतें सीमांत लागत से अधिक होती हैं
लागत।

मजदूरी-निर्धारण संबंध: वास्तविक मजदूरी और बेरोजगारी दर के बीच विपरीत संबंध।

मूल्य-निर्धारण संबंध: फर्मों द्वारा भुगतान की गई वास्तविक मजदूरी और उनके द्वारा लगाए गए मार्कअप के बीच व्युत्क्रम संबंध।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

बेरोजगारी की प्राकृतिक दर: वह संतुलन बेरोजगारी दर जिसमें मजदूरी निर्धारण संबंध में निर्धारित वास्तविक मजदूरी, मूल्य निर्धारण संबंध द्वारा प्राप्त वास्तविक मजदूरी के बराबर होती है।

1.8 पाठ्य-अध्याय में प्रश्नों के उत्तर

1. (घ)

2. (सी) 3.

(ए)

4. (बी)

5. (घ) 6.

(घ)

7. (क)

8. (बी) 9.

(बी)

10. (सी)

11. (सी) 12.

(सी)

13. (सी)

1.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

प्रश्न 1. किसकी सौदेबाजी की शक्ति अधिक है: स्विगी डिलीवरी व्यक्ति या कंप्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियर? क्यों?

प्रश्न 2. श्रम बाजार की स्थितियां श्रमिक की सौदेबाजी की शक्ति को कैसे प्रभावित करती हैं?

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

प्रश्न 3.माना कि सीमांत लागत पर वस्तुओं का मार्कअप 5 प्रतिशत है और मजदूरी निर्धारण समीकरण है:

W= P(1-u), जहाँ u बेरोज़गारी दर है।

क. मूल्य निर्धारण समीकरण द्वारा निर्धारित वास्तविक मजदूरी क्या है? ख. बेरोजगारी की प्राकृतिक दर क्या है? ग. मान लीजिए कि लागत पर कीमतों का मार्कअप 10 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।
बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर का क्या होता है? समझाइए।

1.10 संदर्भ

1. ब्लैंचर्ड, ओ. (2006, चौथा संस्करण). मैक्रोइकॉनॉमिक्स, पियर्सन एजुकेशन.

2. ब्रैनसन, डब्ल्यू. (2013). मैक्रोइकॉनॉमिक्स: थ्योरी एंड पॉलिसी, तीसरा संस्करण, ईस्ट वेस्ट प्रकाशन.

1.11 सुझाए गए पठन सामग्री

रिचर्ड लेयर्ड, स्टीफन निकेल और रिचर्ड जैकमैन (1994)। बेरोजगारी संकट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ 2

संतुलन उत्पादन का निर्धारण

डॉ. मनदीप कौर सहायक
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय

संरचना

2.1 सीखने के उद्देश्य 2.2 परिचय 2.3
बेरोजगारी के प्रकार 2.4
मजदूरी निर्धारण और मूल्य निर्धारण संबंध के
निहितार्थ 2.5 बेरोजगारी की प्राकृतिक दर और संभावित उत्पादन 2.6 समग्र मांग वक्र 2.7 AD वक्र में
बदलाव 2.8 समग्र आपूर्ति वक्र 2.9 समग्र आपूर्ति वक्र की व्युत्पत्ति 2.10 समग्र मांग और समग्र आपूर्ति की
परस्पर क्रिया 2.11 सारांश 2.12 शब्दावली 2.13 पाठ में दिए
गए प्रश्नों के उत्तर 2.14 आत्म-मूल्यांकन
प्रश्न 2.15 संदर्भ

2.1 सीखने के उद्देश्य

बेरोजगारी के विभिन्न प्रकारों को समझना, जैसे घर्षणात्मक, संरचनात्मक और चक्रीय बेरोजगारी।

प्रत्येक प्रकार की बेरोजगारी के कारणों का मूल्यांकन करना।

बेरोजगारी की प्राकृतिक दर के घटकों और संतुलन बेरोजगारी की अवधारणा का आकलन करना।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

मूल्य और मजदूरी निर्धारण मॉडल के निहितार्थ को समझना जो बेरोजगारी की प्राकृतिक दर निर्धारित करता है।

संभावित सकल घरेलू उत्पाद और बेरोजगारी की प्राकृतिक दर के साथ उसके संबंध की जांच करना।

समग्र मांग अनुसूची की व्युत्पत्ति का विश्लेषण करना।

समग्र मांग में बदलाव का अनुमान लगाना।

समग्र आपूर्ति अनुसूची की व्युत्पत्ति का मूल्यांकन करना।

संतुलन उत्पादन और कीमतों को निर्धारित करने के लिए समग्र मांग और आपूर्ति की अंतःक्रिया का आकलन करना।

शास्त्रीय और कीनेसियन एएस वक्र के महत्व को समझना

कीन्ज़ियन और क्लासिकल AS वक्रों के मामले में उत्पादन और कीमत पर AD नीतियों के प्रभाव की जांच करना।

2.2 परिचय

पाठ 1 में बेरोजगारी की प्राकृतिक दर के निर्धारण पर चर्चा की गई। यह पाठ अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक बेरोजगारी की प्रकृति पर चर्चा करता है। बेरोजगारी दर अर्थव्यवस्था में उन लोगों के प्रतिशत को मापती है जो काम करना चाहते हैं लेकिन उनके पास नौकरी नहीं है। बेरोजगारी दर का माप घरेलू सर्वेक्षणों से गणना की जाती है जो घर में 16 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक व्यक्ति को तीन श्रेणियों में से एक में रखते हैं, अर्थात, नियोजित, बेरोजगार और श्रम बल में शामिल नहीं (जैसे छात्र, गृहिणी और सेवानिवृत्त व्यक्ति)।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) बेरोजगारों को निम्नलिखित प्रकार के लोगों के रूप में परिभाषित करता है: वे लोग जो संदर्भ अवधि (चार सप्ताह तक) के दौरान बिना काम के थे और न तो वेतनभोगी रोजगार में थे और न ही स्वरोजगार में थे, काम के लिए उपलब्ध थे, और काम की तलाश कर रहे थे, यानी वेतनभोगी या स्वरोजगार पाने के लिए कदम उठा रहे थे।

चित्र 2.1 कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या को नियोजित और बेरोजगार समूहों में विभाजित करता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

चित्र 2.1

श्रम बल शब्द को नियोजित और बेरोजगारों के योग के रूप में परिभाषित किया जाता है।

इसलिए, श्रम बाजार के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए कई उपाय निकाले जा सकते हैं। बेरोज़गारी दर बेरोज़गारों और श्रम शक्ति का अनुपात है।

बेरोज़गारी दर = बेरोज़गार/श्रम बल एक संबंधित अवधारणा श्रम बल भागीदारी दर

है, जो कुल वयस्क आबादी के लिए श्रम बल का अनुपात है। सामान्य तौर पर, पिछले कुछ वर्षों में, महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर बढ़ रही है क्योंकि बड़ी संख्या में महिला श्रमिकों ने श्रम बल में प्रवेश किया है। साथ ही, महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर में गिरावट आई है।

महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी दर में वृद्धि अनेक सामाजिक परिवर्तनों के कारण हुई है, जैसे कि कामकाजी महिलाओं के प्रति सामाजिक धारणा में बदलाव, बेहतर जन्म नियंत्रण, तथा गृह व्यवस्था के लिए नई प्रौद्योगिकियों जैसे वाशिंग मशीन, रेफ्रिजरेटर, डिशवॉशर आदि का प्रचलन।

पुरुषों की भागीदारी दर में गिरावट के कई कारण हैं, जिनमें युवा पुरुषों में उच्च शिक्षा, पुरुषों की उच्च जीवन प्रत्याशा, तथा बच्चों के पालन-पोषण के लिए घर पर रहकर काम करने वाले पिताओं की बढ़ती प्रवृत्ति शामिल है।

टिप्पणियाँ

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

2.3 बेरोजगारी के प्रकार

मैक्रोइकॉनॉमिक्स के दृष्टिकोण से, अर्थशास्त्री तीन प्रकार की बेरोजगारी की पहचान करते हैं: संरचनात्मक बेरोजगारी, घर्षण बेरोजगारी और चक्रीय बेरोजगारी। संरचनात्मक और घर्षण बेरोजगारी का योग एक अर्थव्यवस्था में संतुलन बेरोजगारी के बराबर होता है, जिसे बेरोजगारी की प्राकृतिक दर भी कहा जाता है।

एक अर्थव्यवस्था जो अपने सभी संसाधनों का पूर्ण उपयोग कर रही हो, उसमें भी कुछ सकारात्मक बेरोजगारी दर होगी, जिसे बेरोजगारी की प्राकृतिक दर कहा जाता है।

घर्षण बेरोजगारी का तात्पर्य अर्थव्यवस्था में क्षेत्रीय परिवर्तनों के कारण उत्पन्न बेरोजगारी से है। किसी अर्थव्यवस्था में श्रम शक्ति के पास एक विशेष प्रकार का कौशल होता है जो किसी विशेष प्रकार के सामान का उत्पादन करने के लिए उपयुक्त होता है। यदि वस्तुओं की मांग बदलती है, तो श्रमिकों को अपने कौशल सेट को नई मांगों के अनुकूल बनाने में समय लगता है। मांग में परिवर्तन और श्रमिकों द्वारा नए कौशल सेट को अपनाने में लगने वाले समय से उत्पन्न बेरोजगारी को घर्षण बेरोजगारी कहा जाता है। उदाहरण के लिए, कंप्यूटर के आविष्कार के साथ, टाइपराइटर अप्रचलित हो गए। इसलिए, श्रमिकों को कंप्यूटर बनाने के लिए अपने कौशल सेट को अनुकूलित करना पड़ा। इस तरह के क्षेत्रीय बदलावों से उत्पन्न बेरोजगारी को घर्षण बेरोजगारी कहा जाता है। एक व्यापक परिभाषा घर्षण बेरोजगारी को लोगों के एक नौकरी से दूसरी नौकरी में जाने के कारण उत्पन्न बेरोजगारी के रूप में परिभाषित करती है। कार्यकर्ता के दृष्टिकोण से, घर्षण बेरोजगारी नौकरी चाहने वाले वे लोग हैं जो पहली बार नौकरी की तलाश कर रहे हैं, अपनी पुरानी नौकरी से असंतुष्ट हैं, या श्रम बाजार में फिर से प्रवेश कर रहे हैं।

क्योंकि श्रमिकों को अपनी व्यक्तिगत कुशलताओं और रुचियों के अनुसार सबसे उपयुक्त नौकरी की तलाश करने में समय लगता है, इसलिए कुछ घर्षणात्मक बेरोजगारी अपरिहार्य है। बेरोजगारी बीमा जैसी विभिन्न सरकारी नीतियां घर्षणात्मक बेरोजगारी की मात्रा को बदल देती हैं।

संरचनात्मक बेरोज़गारी अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण उत्पन्न होने वाली बेरोज़गारी को दर्शाती है। उदाहरण के लिए, अर्थव्यवस्था में तकनीकी परिवर्तन अर्थव्यवस्था के आईटी क्षेत्र में नौकरियाँ पैदा करते हैं, जबकि अधिकांश श्रमिकों के पास आईटी से संबंधित कौशल नहीं होते हैं।
कंपनियों की जरूरतें और कर्मचारी क्या दे सकते हैं, के बीच बेमेल से संरचनात्मक समस्याएं पैदा होती हैं।
बेरोज़गारी। संरचनात्मक बेरोज़गारी लंबे समय तक चलती है, आम तौर पर इसे हल होने में दशकों लग जाते हैं, और इसे उलटने के लिए अर्थव्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

तकनीकी परिवर्तन, खराब प्रशिक्षण और प्रासंगिक शिक्षा कार्यक्रमों की कमी संरचनात्मक बेरोजगारी के मुख्य कारण हैं। यह वैश्वीकरण और अधिक प्रतिस्पर्धा के कारण भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, दुनिया भर में अलग-अलग मजदूरी दरें कंपनियों को ऑफशोर विनिर्माण प्रक्रियाओं को देखने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। कंपनियाँ अधिक कुशल घरेलू कामगारों को काम पर रखने से मना कर सकती हैं जो कम वेतन पर काम करने के लिए तैयार श्रमिकों के पक्ष में अधिक मुआवजे की मांग करते हैं।

संरचनात्मक बेरोज़गारी तब होती है जब वास्तविक मज़दूरी उस स्तर से ऊपर रहती है जो श्रम आपूर्ति और श्रम मांग को संतुलित करती है। न्यूनतम मज़दूरी कानून मज़दूरी कठोरता का एक कारण है। यूनियनें और यूनियनीकरण का ख़तरा दूसरा कारण है। अंत में, दक्षता-मज़दूरी सिद्धांत बताते हैं कि, विभिन्न कारणों से, फ़र्मों को श्रम की अधिक आपूर्ति के बावजूद मज़दूरी को उच्च रखना लाभदायक लग सकता है।

यदि संरचनात्मक बेरोजगारी को संबोधित नहीं किया जाता है, तो यह मंदी के खत्म होने के बाद भी बेरोजगारी दर को बढ़ा सकता है और बेरोजगारी की प्राकृतिक दर को बढ़ा सकता है। उदाहरण के लिए, जबकि 2007-2009 की वैश्विक मंदी ने चक्रीय बेरोजगारी का कारण बना, इसने संयुक्त राज्य अमेरिका में संरचनात्मक बेरोजगारी को भी बढ़ाया। अक्टूबर 2009 में जब बेरोजगारी दर 10% से अधिक हो गई, तो लाखों श्रमिकों के लिए औसत बेरोजगारी अवधि में काफी वृद्धि हुई। लंबे समय तक बेरोजगारी के इस समय के दौरान इन श्रमिकों के कौशल में गिरावट आई, जिससे संरचनात्मक बेरोजगारी हुई। इसका गंभीर नकारात्मक पहलू यह है कि श्रमिकों के लिए नौकरी ढूंढना और उसे बनाए रखना और भी कठिन हो गया है।

आवास बाजार में मंदी ने बेरोजगारों की नौकरी की संभावनाओं को भी प्रभावित किया और इसलिए संरचनात्मक बेरोजगारी में वृद्धि हुई। दूसरे शहर में नई नौकरी के लिए स्थानांतरित होने का मतलब था कि घर को काफी नुकसान में बेचना, जो कि बहुत से लोग करने को तैयार नहीं थे, जिससे कौशल और नौकरी की उपलब्धता में बेमेल पैदा हो गया। इसलिए, संरचनात्मक बेरोजगारी का एक अलग नुकसान यह है कि इसे संभावित रूप से बड़े व्यक्तिगत वित्तीय नुकसान उठाकर हल किया जा सकता है।

यही बात शिक्षा या प्रशिक्षण के बारे में भी कही जा सकती है। अगर कोई कंपनी अपने कर्मचारियों के लिए इनमें से किसी में भी निवेश करने में असमर्थ है या अनिच्छुक है, तो कर्मचारी को खुद ही अवसर तलाशने होंगे।

इसका मतलब यह नहीं है कि कर्मचारी को न केवल सीखने के अवसरों के लिए भुगतान करना होगा, बल्कि कर्मचारी को अपनी संभावित पूर्णकालिक नौकरी के साथ-साथ अपने कौशल को विकसित करने का भी बोझ उठाना पड़ेगा।

कोविड-19 महामारी के दौरान, संयुक्त राज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था में गिरावट आई संरचनात्मक बेरोजगारी और चक्रीय बेरोजगारी में अभूतपूर्व परिवर्तन।

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

बेरोज़गारी की चरम दर पर, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इनमें से कई नौकरियाँ अस्थायी थीं। हालाँकि, COVID-19 द्वारा संरचनात्मक रूप से प्रभावित भूमिकाओं के निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें:

रिसेप्शनिस्ट: जैसे-जैसे अधिक कम्पनियां पूर्णकालिक दूरस्थ भूमिकाओं में स्थानांतरित हो रही हैं, फ्रंट-डेस्क कर्मचारियों की संख्या में व्यवस्थित गिरावट आई है, यहां तक कि उन कम्पनियों में भी जो सप्ताह में केवल कुछ दिन ही कार्यालय आती हैं।

उत्पाद प्रदर्शक: जैसे-जैसे मॉल बंद हुए और खरीदारी की प्राथमिकताएं ऑनलाइन ऑर्डर करने में बदल गईं, ग्राहकों के साथ काम करने में विशेषज्ञ डिपार्टमेंट स्टोर के कर्मचारियों को अपने कौशल में बदलाव का अनुभव हुआ।

इवेंट समन्वयक: जैसे-जैसे कार्यक्रम दूरस्थ स्थानों पर आयोजित होने लगे, इवेंट नियोजकों को अनुभव हुआ
कौशल-सेट बदलने और तकनीकी रूप से अधिक कुशल बनने का जबरदस्त दबाव।

संरचनात्मक बनाम घर्षण बेरोजगारी: जबकि घर्षण बेरोजगारी एक स्वैच्छिक प्रकार की बेरोजगारी है, जिसके तहत व्यक्ति अपने कौशल सेट में सुधार करने या कम मांग वाली भूमिकाएँ चुनकर कार्य जीवन को संतुलित करने के लिए अपनी नौकरी छोड़ देते हैं, संरचनात्मक बेरोजगारी एक अनैच्छिक प्रकार की बेरोजगारी है जिसमें व्यक्तियों को अपनी बेरोजगार स्थिति के बारे में ज़्यादा कुछ कहने का अधिकार नहीं होता है। जबकि संरचनात्मक बेरोजगारी को पूरे बाजार या उद्योग के स्तर पर संबोधित करने की आवश्यकता है, घर्षण बेरोजगारी को मामले-दर-मामला स्तर पर संबोधित करने की आवश्यकता है।

संरचनात्मक बेरोजगारी पर काबू पाना कठिन है क्योंकि कुछ नौकरियाँ पहले अर्थव्यवस्था में बहुत गहरी पैठ रखती थीं, फिर भी अब इन नौकरियों की ज़रूरत नहीं है। संरचनात्मक बेरोजगारी पर काबू पाने के लिए, श्रमिकों को आम तौर पर नए कौशल सीखने, नए उत्पादों का उपयोग करने के लिए अनुकूल होने, उद्योगों को बदलने या शारीरिक रूप से नए स्थानों पर जाने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता होती है। चक्रीय बेरोजगारी के विपरीत, जिसे बाजार चक्रों के माध्यम से हल किया जाता है या मौसमी बेरोजगारी जो समय के साथ बदलती है, संरचनात्मक बेरोजगारी को दूर करने के लिए जानबूझकर कार्रवाई की आवश्यकता होती है।

चक्रीय बेरोजगारी समग्र बेरोजगारी का एक घटक है जिसका सामना अर्थव्यवस्था में तेजी और मंदी के आर्थिक चक्रों के कारण होता है। आमतौर पर, मंदी या मंदी के दौरान बेरोजगारी बढ़ जाती है और तेजी या उछाल के दौरान घट जाती है। चक्रीय बेरोजगारी कई कारकों में से एक है जो कुल बेरोजगारी में योगदान देता है, जिसमें मौसमी, संरचनात्मक, घर्षण और संस्थागत कारक शामिल हैं।

आर्थिक मंदी के दौरान, वस्तुओं की मांग कम हो जाती है, जिससे श्रम की मांग कम हो जाती है। उदाहरण के लिए, 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान, आवास बुलबुले

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

मंदी की शुरुआत हुई और बड़े पैमाने पर आर्थिक मंदी शुरू हो गई। जैसे-जैसे ज़्यादा से ज़्यादा उधारकर्ता अपने घरों से जुड़े ऋण दायित्वों को पूरा करने में विफल होते गए और नए ऋणों के लिए योग्यताएँ और भी सख्त होती गईं, नए निर्माण की मांग में गिरावट आई।

बेरोजगारों की कुल संख्या में वृद्धि और अधिक उधारकर्ताओं द्वारा अपने घरों का भुगतान न कर पाने के कारण, अतिरिक्त संपत्तियों पर कब्ज़ा कर लिया गया, जिससे निर्माण की मांग और भी कम हो गई। परिणामस्वरूप, निर्माण क्षेत्र में अमेरिका में लगभग 1.5 मिलियन श्रमिक बेरोजगार हो गए। बेरोजगारी में यह वृद्धि चक्रीय बेरोजगारी थी।

अगले कुछ सालों में जब अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ, तो वित्तीय क्षेत्र में लाभ की स्थिति लौट आई और उसने ज़्यादा ऋण देना शुरू कर दिया। लोगों ने फिर से घर खरीदना शुरू कर दिया या मौजूदा घरों को फिर से बनाना शुरू कर दिया, जिससे रियल एस्टेट की कीमतें एक बार फिर बढ़ गईं।
आवास क्षेत्र में इस नई मांग को पूरा करने के लिए निर्माण कार्य पुनः शुरू हो गए तथा चक्रीय बेरोजगारी में कमी आई।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

1 राष्ट्रपति को चिंता है कि हाल ही में वित्तीय संकट के कारण बेरोजगारी की प्राकृतिक दर में वृद्धि होगी। नकारात्मक आर्थिक वृद्धि की तीन पूरी तिमाहियों के बाद बेरोजगारी दर अब 10% पर है, और उन्हें डर है कि यह अनिश्चित काल तक इसी स्तर पर बनी रहेगी। राष्ट्रपति के आर्थिक सलाहकार के रूप में, राष्ट्रपति की चिंताओं का कौन सा संभावित उत्तर प्राकृतिक बेरोजगारी दर सिद्धांत से सबसे अधिक सहमत है? (ए) बाकी सब समान होने पर, मंदी के कारण होने वाली चक्रीय बेरोजगारी प्राकृतिक बेरोजगारी दर को प्रभावित नहीं करेगी।

(ख) प्राकृतिक बेरोजगारी दर की गणना चक्रीय या संरचनात्मक बेरोजगारी दर से स्वतंत्र रूप से की जाती है।

2.4 मजदूरी निर्धारण और मूल्य के निहितार्थ संबंध स्थापित करना

बेरोजगारी की प्राकृतिक दर के संबंध में एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि यह है कि (प्राकृतिक) बेरोजगारी दर और, परिणामस्वरूप, मध्यम और दीर्घावधि में श्रमिकों और देशों के विभिन्न समूहों में अर्जित मजदूरी के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।
उदाहरण के लिए, दो देश बेरोजगारी के कारण समान समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जैसे

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

वैश्वीकरण और नई तकनीक के कारण, बहुत अलग (संरचनात्मक) बेरोजगारी दर हो सकती है। इन सवालों के जवाब देने के लिए, वेतन-निर्धारण और मूल्य-निर्धारण (WS/PS) मॉडल का उपयोग किया जाता है।

मजदूरी-निर्धारण संबंध श्रम बाजार में संतुलन को दर्शाता है, जहां फर्मों और कर्मचारियों के बीच बातचीत संतुलन मजदूरी निर्धारित करती है। मूल्य-निर्धारण संबंध उत्पाद बाजार में फर्मों के संतुलन को दर्शाता है, जहां अपूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धी बाजार फर्मों द्वारा निर्धारित कीमतें कर्मचारियों द्वारा अर्जित वास्तविक मजदूरी निर्धारित करती हैं। वह बिंदु जहां दो वक्र प्रतिच्छेद करते हैं, यह दर्शाता है कि बेरोजगारी का स्तर और वास्तविक मजदूरी दोनों बाजारों में लिए गए निर्णयों के अनुरूप हैं।

मजदूरी-निर्धारण संबंध एक ओर नाममात्र मजदूरी और दूसरी ओर अपेक्षित कीमतों और बेरोजगारी दर के बीच संबंध दर्शाता है। अपेक्षित मूल्य स्तर और मजदूरी के बीच एक सकारात्मक संबंध है और बेरोजगारी दर और मजदूरी के बीच एक व्युत्क्रम संबंध है।

वेतन-निर्धारण वक्र अकेले ही किसी अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी के स्तर को तय नहीं करता है; अर्थव्यवस्था वास्तविक मजदूरी और बेरोजगारी दर के किसी भी संयोजन पर हो सकती है। अर्थव्यवस्था जिस सटीक बिंदु पर काम करती है, उसे निर्धारित करने के लिए, उत्पाद बाजार लाया जाता है। यहाँ, फर्मों द्वारा निर्धारित कीमतें उनके उत्पादन की लागत (श्रम इनपुट या मजदूरी की लागत के रूप में ली गई) और उत्पादन की इन लागतों पर मार्कअप का एक कार्य हैं। मूल्य-निर्धारण संबंध, वास्तविक मजदूरी का मूल्य देता है, जो फर्म द्वारा अपने लाभ को अधिकतम करने पर मार्कअप के अनुरूप होता है। श्रमिक उत्पादकता में वृद्धि (नाममात्र मजदूरी में वृद्धि करके) या अर्थव्यवस्था में अधिक प्रतिस्पर्धा मूल्य-निर्धारण वक्र को ऊपर की ओर ले जाती है।

जब अर्थव्यवस्था मजदूरी और मूल्य निर्धारण वक्र के चौराहे पर होती है, तो कर्मचारी पर्याप्त प्रयास करते हैं, और कंपनियां उतनी संख्या में श्रमिकों को रोजगार देने के लिए तैयार होती हैं, क्योंकि उनके उत्पादन और लागतों के लिए उन्हें जो मांग का सामना करना पड़ता है, उसे देखते हुए कंपनियां अपने लाभ को अधिकतम करने वाली कीमतें निर्धारित कर रही होती हैं।

इसे संरचनात्मक बेरोजगारी कहा जाता है (और यह अनैच्छिक बेरोजगारी का एक रूप है), क्योंकि यह बेरोजगारी का संतुलन स्तर है जो अर्थव्यवस्था की संरचना का प्रतिनिधित्व करने वाले दो वक्रों द्वारा निर्धारित होता है: उत्पाद बाजारों में फर्मों द्वारा लाभ-अधिकतम मूल्य-निर्धारण और श्रम बाजारों में फर्मों द्वारा लाभ-अधिकतम मजदूरी-निर्धारण। संरचनात्मक बेरोजगारी मजदूरी और मूल्य-निर्धारण में बदलाव से प्रभावित होती है

वक्र.

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

2. फर्मों द्वारा सामना की जाने वाली प्रतिस्पर्धा की डिग्री में कमी पर विचार करें। प्रतिस्पर्धा में कमी के प्रभावों के बारे में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?

(a) मूल्य-निर्धारण वक्र ऊपर की ओर खिसक जाता है। (b) मजदूरी-
निर्धारण वक्र नीचे की ओर खिसक जाता है। (c) संतुलन वास्तविक मजदूरी
गिर जाती है। (d) बेरोजगारी का स्तर गिर जाता है।

3. मान लीजिए वास्तविक मजदूरी बढ़ जाती है। निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
किसी श्रमिक की श्रम आपूर्ति के संबंध में निम्नलिखित में से
कौन सा कथन सही है? (a) आय प्रभाव का अर्थ है कि श्रमिक अपनी श्रम आपूर्ति बढ़ाएगा। (b) प्रतिस्थापन प्रभाव का
अर्थ है कि श्रमिक अपनी खपत बढ़ाएगा।
अवकाश का.

(c) आय और प्रतिस्थापन प्रभाव हमेशा एक दूसरे को बढ़ाते हैं, जिससे श्रम आपूर्ति में वृद्धि होती है। (d) उच्च मजदूरी पर,
आय प्रभाव प्रतिस्थापन प्रभाव
पर हावी हो जाता है, जिससे
श्रम आपूर्ति को कम करना।

2.5 बेरोजगारी की प्राकृतिक दर और संभावित आउटपुट

संभावित उत्पादन अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को मापता है जब बेरोजगारी अपनी प्राकृतिक दर पर होती है। चूँकि लोग एक नियमित घटना के रूप में नौकरी से नौकरी पर जाते हैं (घर्षण बेरोजगारी का कारण बनते हैं), इसलिए बेरोजगारी की प्राकृतिक दर को आम तौर पर शून्य से अधिक माना जाता है। अर्थव्यवस्था में लगभग हमेशा कुछ बेरोजगारी होगी। इस प्रकार, संभावित उत्पादन वह अधिकतम नहीं है जो एक अर्थव्यवस्था सैद्धांतिक रूप से उत्पादित कर सकती है, बल्कि एक कम, टिकाऊ संख्या है।

आईएस-एलएम विश्लेषण की एक महत्वपूर्ण धारणा एक निश्चित मूल्य स्तर की है। आईएस-एलएम विश्लेषण मुद्रा आपूर्ति, सरकारी खर्च और करों में परिवर्तन और संतुलन आय और उत्पादन पर इन चरों के प्रभाव को देखता है, यह मानते हुए कि वस्तुओं की परिणामी मांग मौजूदा या वर्तमान कीमतों पर आपूर्ति की जाती है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

हालांकि, किसी भी देश के नागरिकों से संबंधित प्रमुख मुद्दों में से एक मुद्रास्फीति है, यानी मूल्य स्तर में परिवर्तन की दर। कुल मांग और कुल आपूर्ति मॉडल संतुलन उत्पादन और मूल्य स्तर निर्धारित करते हैं। यह IS-LM विश्लेषण का एक विस्तार है, जिसके तहत कुल मांग IS-LM मॉडल से प्राप्त की जाती है।

2.6 समग्र मांग वक्र

मूल्य स्तर और उत्पादन का वह संयोजन जिस पर वस्तु और परिसंपत्ति बाज़ार एक साथ संतुलन में होते हैं, उसे समग्र मांग वक्र कहा जाता है। वस्तु और परिसंपत्ति बाज़ार में दिए गए संतुलन से, मूल्य स्तर में कोई भी परिवर्तन वास्तविक शेष राशि (यानी, मूल्य स्तर से विभाजित मुद्रा का नाममात्र स्टॉक) की मात्रा को बदल देता है।

इसलिए, असल में, कीमत में गिरावट से वास्तविक शेष राशि बढ़ेगी, ब्याज दर कम होगी और निवेश की मांग बढ़ेगी। इससे संतुलन उत्पादन में वृद्धि होती है।
इस प्रकार, कीमतों में गिरावट से उत्पादन में वृद्धि होती है, जिससे कीमतों और उत्पादन के बीच विपरीत संबंध बनता है। यह संबंध चित्र 2.2 में दर्शाया गया है।

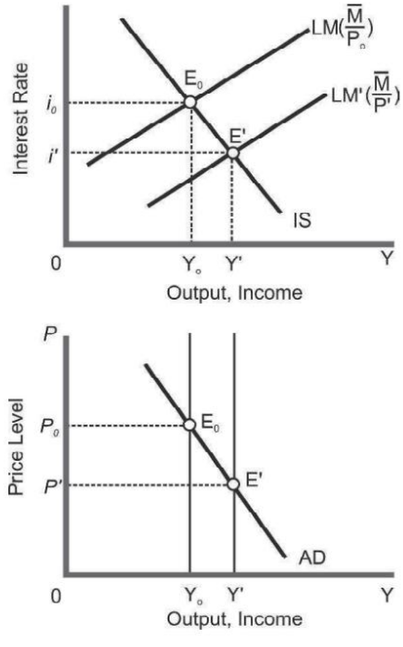

चित्र 2.2

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

चित्र 2.2 दर्शाता है कि P0 से P1 तक कीमतों में गिरावट से मुद्रा आपूर्ति M/P0 से M/P1 तक बढ़ जाती है । इससे वास्तविक मुद्रा आपूर्ति (या वास्तविक शेष) में वृद्धि होती है। इस प्रकार, LM वक्र LM से LM' की ओर शिफ्ट होता है , जिससे संतुलन उत्पादन Y0 से Y' तक बढ़ जाता है (पैनल 1)। इस प्रकार, पैनल 2 में, P0 से P1 तक कीमतों में गिरावट के लिए , उत्पादन Y0 से Y' तक फैलता है । ऊपरी पैनल से प्राप्त ऐसे सभी बिंदुओं को जोड़ने पर, हमें नीचे की ओर झुका हुआ कुल मांग वक्र, AD मिलता है।

2.7 विज्ञापन वक्र में बदलाव

मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों में किसी भी परिवर्तन के कारण समग्र मांग वक्र।

राजकोषीय विस्तार: सरकारी व्यय में कोई भी वृद्धि IS वक्र में दाईं ओर बदलाव की ओर ले जाती है, जो किसी भी दिए गए संतुलन, E (चित्र 2.3) से शुरू होती है। IS वक्र में यह दाईं ओर बदलाव दिए गए मूल्य P0 (पैनल B, चित्र 2.3) पर संतुलन उत्पादन (पैनल A, चित्र 2.3) को बढ़ाता है। इस प्रकार, चित्र 3 से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सरकारी व्यय में कोई भी विस्तार AD वक्र में दाईं ओर बदलाव की ओर ले जाता है जो किसी दिए गए मूल्य स्तर पर उत्पादन में वृद्धि दर्शाता है।

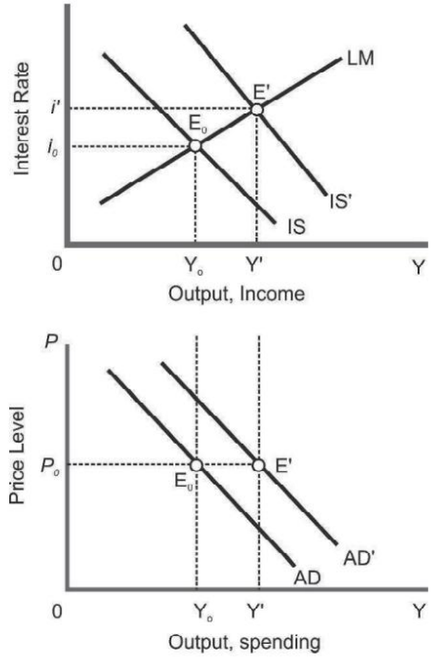

चित्र 2.3.

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

मौद्रिक नीति: इसी तरह, एक विस्तारवादी मौद्रिक नीति जो दी गई कीमतों पर नाममात्र मुद्रा स्टॉक में वृद्धि की ओर ले जाती है, कुल मांग वक्र को दाईं ओर स्थानांतरित करती है। यह चित्र 2.4 में दिखाया गया है। चित्र दिखाता है कि जब नाममात्र मुद्रा स्टॉक बढ़ता है, तो पैनल ए में एलएम वक्र एलएम' में स्थानांतरित हो जाता है, जिससे संतुलन उत्पादन में Y0 से Y' (प्रारंभिक मूल्य स्तर, P0 पर) की वृद्धि होती है। यह पैनल बी में AD वक्र के दाईं ओर AD' में स्थानांतरित होने के रूप में परिलक्षित होता है।

AD वक्र में बदलाव मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि के समानुपातिक है।
इस प्रकार, AD' वक्र पर बिंदु K पर (और LM वक्र पर दर्शाए गए वास्तविक शेष से पैनल A में संतुलन E के अनुरूप), P0 से P1 तक मूल्य वृद्धि नाममात्र मुद्रा स्टॉक में वृद्धि के समान अनुपात में होती है, जिससे स्थिर वास्तविक शेष राशि प्राप्त होती है। इस प्रकार, AD' वक्र पर बिंदु K पर वास्तविक शेष राशि वक्र AD पर संतुलन E पर समान होती है।

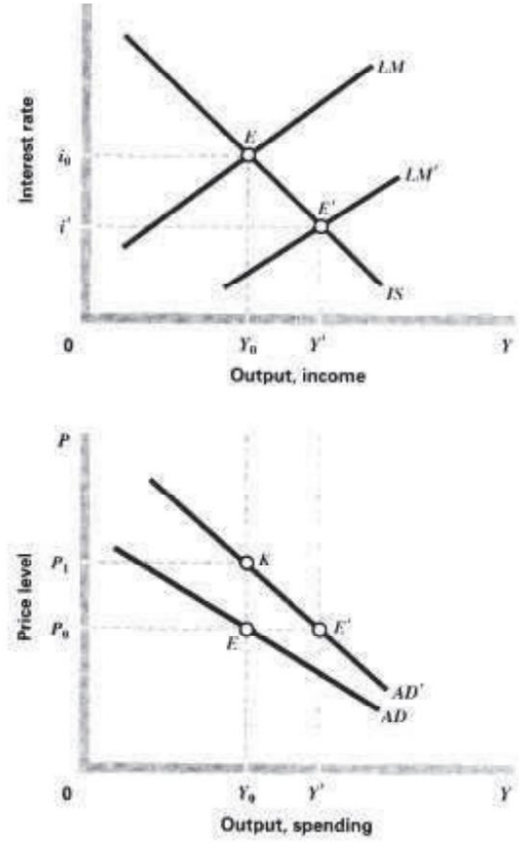

चित्र 2.4.

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

4. अर्थशास्त्रियों ने गणना की है कि इलीरिया के छोटे साम्राज्य के लिए बेरोजगारी की प्राकृतिक दर 4% है। अभूतपूर्व आर्थिक उछाल के दौरान बेरोजगारी की वास्तविक दर घटकर मात्र 3% रह गई है। यह मानते हुए कि अर्थशास्त्रियों की गणना सही है, इलीरिया की अर्थव्यवस्था के लिए निम्नलिखित में से कौन सा संभावित परिणाम है?

जवाब

(क) बेरोजगारी की संरचनात्मक दर तब तक गिरती रहेगी जब तक कि बेरोजगारी की प्राकृतिक दर वर्तमान बेरोजगारी दर 3 प्रतिशत के बराबर न हो जाए।

(ख) अर्थशास्त्रियों की गणना संभवतः सटीक नहीं हो सकती क्योंकि वास्तविक बेरोजगारी दर परिभाषा के अनुसार प्राकृतिक बेरोजगारी दर से नीचे नहीं गिर सकती।

(ग) भविष्य की तिमाहियों में आर्थिक वृद्धि धीमी हो जाएगी जब तक कि वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद संभावित वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद के बराबर नहीं हो जाता और बेरोजगारी दर 4 प्रतिशत के बराबर नहीं हो जाती।

5. समग्र मांग आपूर्ति मॉडल को निम्नलिखित के लिए पेश किया गया है:

(क) मुद्रास्फीति की दर निर्धारित करना। (ख)

उत्पादन का संतुलन स्तर निर्धारित करना। (ग) कीमतों का संतुलन

स्तर निर्धारित करना। (घ) उत्पादन और कीमतों दोनों का संतुलन

स्तर निर्धारित करना। (घ)

6. AD अनुसूची निम्नलिखित से प्राप्त होती है:

(क) आईएस-एलएम

मॉडल। (ख) मांग अनुसूची। (ग)

आपूर्ति अनुसूची। (घ) उपरोक्त सभी।

7. AD वक्र पर नीचे की ओर बढ़ना:

(a) मुद्रा स्टॉक में वृद्धि होती है। (b) मुद्रा

स्टॉक में कमी होती है। (c) संतुलन ब्याज

दरों में वृद्धि होती है। (d) निवेश मांग में कमी होती है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

8. AD अनुसूची निम्नलिखित कारणों से बाहर और दाईं ओर खिसकती है: (a)
विस्तारवादी मौद्रिक और राजकोषीय नीति। (b) विस्तारवादी मौद्रिक
और संकुचनकारी राजकोषीय नीति। (c) संकुचनकारी मौद्रिक नीति और विस्तारवादी राजकोषीय
नीति। (d) संकुचनकारी मौद्रिक और राजकोषीय नीति।

2.8 समग्र आपूर्ति वक्र

कुल आपूर्ति अनुसूची, AS, उत्पादन की वह मात्रा दर्शाती है जिसे फर्म कीमत के प्रत्येक स्तर पर आपूर्ति करने के लिए तैयार हैं। अल्पावधि कुल आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर झुका हुआ है, जिसका अर्थ है कि कुल मांग वक्र में परिवर्तन से उत्पादन और कीमतों के स्तर में परिवर्तन होता है, जिससे व्यापार चक्र में तेजी और मंदी आती है।

अल्पावधि समग्र आपूर्ति वक्र (एएस) का समीकरण निम्नलिखित है:

वाईवाईपी*ईपी , 0 (1)

Y आउटपुट है, Y* आउटपुट का प्राकृतिक स्तर है, P कीमत स्तर है, और EP अपेक्षित कीमत स्तर है। समीकरण बताता है कि जब कीमत स्तर अपेक्षित कीमत स्तर से विचलित होता है तो आउटपुट और आउटपुट का प्राकृतिक स्तर विचलित हो जाता है। पैरामीटर मूल्य स्तर में अप्रत्याशित परिवर्तनों के लिए आउटपुट की प्रतिक्रियाशीलता को दर्शाता है, और 1/ कुल आपूर्ति वक्र का ढलान है। कुल आपूर्ति का यह मॉडल दर्शाता है कि मूल्य स्तर में परिवर्तन से कुल उत्पादन में परिवर्तन होता है।

2.9 समग्र आपूर्ति वक्र की व्युत्पत्ति

अल्पावधि कुल आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर झुका हुआ होता है। यह दो मॉडलों से प्राप्त होता है: अपूर्ण सूचना मॉडल और स्थिर मूल्य मॉडल।

स्थिर मूल्य मॉडल: यह मॉडल स्थिर कीमतों के संदर्भ में ऊपर की ओर बढ़ते समग्र आपूर्ति वक्र की व्याख्या करता है, अर्थात, कीमतें जो मांग बढ़ने पर तुरंत नहीं बदलती हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

परिवर्तन। इसके कई कारण हो सकते हैं: कीमतें दीर्घकालिक आधार पर निर्धारित की जाती हैं
फर्म और उसके ग्राहक के बीच अनुबंध, या ग्राहकों को परेशान करने के डर से
लगातार मूल्य परिवर्तन। कभी-कभी वस्तुओं के लिए चिपचिपी कीमतें चिपचिपी का परिणाम होती हैं
मजदूरी, जो उत्पादन की लागत का एक महत्वपूर्ण घटक है। मजदूरी स्थिर है
चिपचिपी कीमतों के समान कारणों से: फर्मों और उनके बीच दीर्घकालिक अनुबंध
कर्मचारी, सामाजिक मानदंड और संस्कृतियाँ, आदि।

एक फर्म अपनी कीमतें इस प्रकार निर्धारित करती है:

पी पी एक वर्ष * (2)

उपरोक्त समीकरण बताता है कि वांछित मूल्य स्तर p समग्र पर निर्भर करता है
कीमतों का स्तर, P. उच्च P का अर्थ है फर्म के लिए उत्पादन की उच्च लागत, जिसके परिणामस्वरूप
फर्म द्वारा लगाया गया उच्च P. फर्म की कीमतें भी स्तर से सकारात्मक रूप से संबंधित हैं
प्राकृतिक स्तर (YY*) के सापेक्ष कुल उत्पादन का। पैरामीटर a मापता है
किसी फर्म की कीमतों की समग्र उत्पादन के प्रति अनुक्रियाशीलता।

मॉडल मानता है कि दो प्रकार की फर्में हैं: कुछ फर्मों में लचीली
कीमतें और, इसलिए, उपरोक्त समीकरण के अनुसार अपनी कीमतें निर्धारित करें। अन्य भी हैं
ऐसी फर्में जिनकी कीमतें स्थिर होती हैं, और इसलिए उनकी कीमतें अपेक्षित कीमतों का एक कार्य होती हैं
(ईपी) और अपेक्षित उत्पादन के सापेक्ष अपेक्षित प्राकृतिक उत्पादन स्तर (ईवाई और
ईवाई*, क्रमशः)। इसलिए, स्थिर कीमतों वाली फर्मों का समीकरण निम्नलिखित है:

पी ईपी ए ई वाई ई * (3)

प्राकृतिक स्तर पर उत्पादन को मानने से स्थिर कीमतों के लिए निम्नलिखित समीकरण प्राप्त होता है:

पी = ईपी (4)

समग्र आपूर्ति समीकरण दो कंपनियों के मूल्य निर्धारण निर्णयों से प्राप्त होता है
फर्मों के दो सेटों की कीमतों का भारित औसत लेकर फर्मों के दो सेटों की कीमतों का अनुमान लगाना।

पी एसईपी १ [स्पा YY * (5)

जहाँ s स्थिर कीमतों वाली फर्मों का अनुपात है और 1-s का अनुपात है
लचीली कीमतों वाली फर्में। समीकरण के दोनों ओर से (1-s)P घटाकर विभाजित करें
s द्वारा समग्र मूल्य स्तर निम्नानुसार दिया गया है:

पी ईपी $\frac{1 \text{ सेकंड}}{\text{जैसा}}$ Y Y * (6)

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

उपरोक्त समीकरण को निम्न प्रकार से पुनः व्यवस्थित किया जा सकता है:

$$\text{वाईवाईपी}^{*}\ \text{ईपी} \quad \text{, कहाँ} \quad \frac{\text{एस}}{1 \quad \text{एसए}}. \qquad (7)$$

इसलिए, स्थिर मूल्य मॉडल का मुख्य निहितार्थ यह है कि प्राकृतिक दर से उत्पादन का विचलन, अपेक्षित मूल्य स्तर से मूल्य स्तर के विचलन से सकारात्मक रूप से संबंधित है।

अपूर्ण जानकारी: यह माना जाता है कि सभी मजदूरी और कीमतें लचीली हैं, लेकिन अगर मूल्य स्तर के बारे में गलत धारणाएं हैं तो उत्पादन अभी भी प्राकृतिक दर से विचलित होता है। जब अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं और कारकों की कीमतें बढ़ रही होती हैं, तो उत्पादक इसे अपने द्वारा उत्पादित वस्तु की सापेक्ष कीमत में वृद्धि के साथ भ्रमित करते हैं।

इसलिए, अगर उत्पादक गलती से यह अनुमान लगा लेता है कि वस्तु की सापेक्ष कीमत बढ़ गई है, तो उत्पादक अधिक उत्पादन करेगा। हालाँकि, अगर उत्पादक को सही से पता चल जाए कि सापेक्ष कीमत में कोई बदलाव नहीं हुआ है, तो वह उत्पादन नहीं बढ़ाएगा।

संक्षेप में, अपूर्ण सूचना मॉडल कहता है कि जब वास्तविक कीमतें अपेक्षित कीमतों से अधिक होती हैं, तो उत्पादन बढ़ता है, जैसा कि समग्र आपूर्ति वक्र समीकरण (7) से प्राप्त होता है।

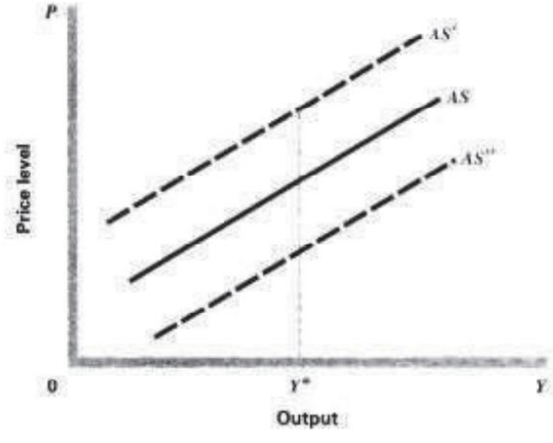

चित्र 2.5

ऊपर दिया गया चित्र 2.5 ऊपर की ओर झुका हुआ कुल आपूर्ति वक्र दर्शाता है। अपेक्षित मूल्य स्तर में कोई भी परिवर्तन कुल आपूर्ति वक्र को स्थानांतरित कर देता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

9. निम्नलिखित में से क्या एक सकारात्मक ढलान वाले अल्पावधि समग्र आपूर्ति वक्र से निहित है: (a) श्रम बाजार समग्र मांग में बदलाव के लिए जल्दी से समायोजित नहीं होता है।

(क) माल बाजार में अपूर्ण जानकारी। (ख) मूल्य परिवर्तन की उच्च लागत।

(ग) दीर्घकालिक मूल्य और मजदूरी अनुबंध। (घ)

उपरोक्त सभी।

10. समग्र आपूर्ति वक्र अंतर्निहित मान्यताओं से प्राप्त होता है कि ————————और ————————————को लगातार समायोजित नहीं किया जाता है।

2.10 समग्र मांग की अंत:क्रिया और समग्र आपूर्ति

चित्र 2.6 दर्शाता है कि बिंदु E पर AD और AS अनुसूचियों का प्रतिच्छेदन उत्पादन के संतुलन स्तर, Y0 को निर्धारित करता है । AD में कोई भी बदलाव (मौद्रिक नीति में परिवर्तन के कारण) मूल्य स्तर और उत्पादन को Y' में बदल देता है (चित्र 2.7)।

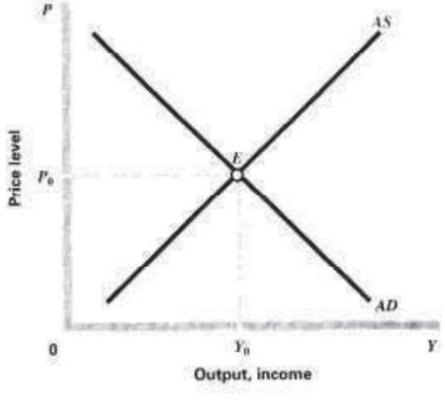

चित्र 2.6

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

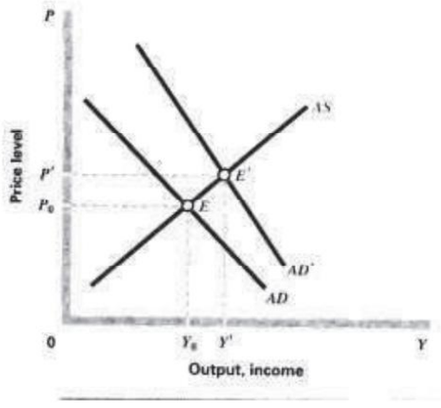

चित्र 2.7

कुल आपूर्ति वक्र के दो विशेष मामले हैं: शास्त्रीय और कीनेसियन, और दोनों मामलों में कुल मांग नीतियों का उत्पादन पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। कीनेसियन कुल आपूर्ति वक्र क्षैतिज है, जिसका अर्थ है कि फर्म मौजूदा कीमतों पर जितनी भी वस्तुओं की मांग होगी, उसकी आपूर्ति करेंगी। फर्म महत्वपूर्ण बेरोजगारी के कारण मौजूदा मजदूरी दर पर जितना चाहें उतना श्रम प्राप्त कर सकती हैं। उत्पादन के स्तर में परिवर्तन होने पर फर्मों के उत्पादन की औसत लागत में बदलाव नहीं होता है (चित्र 2.8, पैनल ए)। दूसरा चरम मामला एक ऊर्ध्वाधर कुल आपूर्ति वक्र, या शास्त्रीय आपूर्ति वक्र है। ऊर्ध्वाधर आपूर्ति वक्र मानता है कि श्रम बाजार पूर्ण रोजगार में है, और इसलिए, कीमतों में वृद्धि होने पर भी उत्पादन को वर्तमान स्तर से ऊपर नहीं बढ़ाया जा सकता है। अतिरिक्त उत्पादन का उत्पादन करने के लिए कोई श्रम उपलब्ध नहीं है।

इसलिए, कुल आपूर्ति वक्र उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर पर लंबवत है (चित्र 2.8, पैनल बी)।

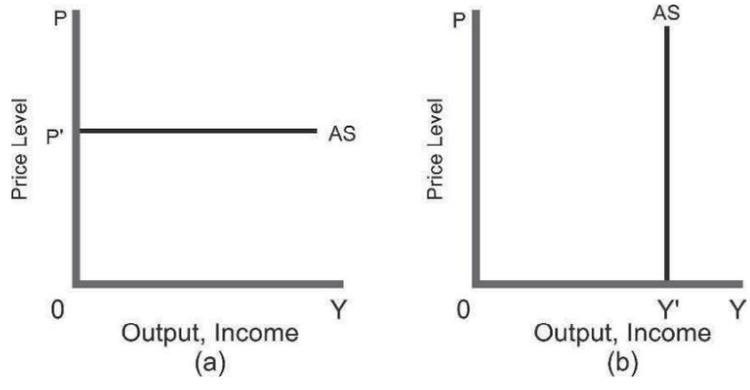

चित्र 2.8

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

चित्र 2.9 में कुल मांग अनुसूची को कीनेसियन कुल आपूर्ति अनुसूची के साथ संयोजित करके संतुलन उत्पादन और कीमतों को दर्शाया गया है। AS और AD का प्रतिच्छेदन बिंदु E पर प्रारंभिक संतुलन देता है। राजकोषीय या मौद्रिक विस्तार AD अनुसूची को दाईं ओर स्थानांतरित करता है, और E' पर एक नया संतुलन प्राप्त होता है, जहाँ उत्पादन में विस्तार होता है और कीमतों में कोई बदलाव नहीं होता है। यह पूरी तरह से लोचदार AS वक्र से प्राप्त होता है, जहाँ फर्म अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी के कारण मौजूदा कीमतों पर किसी भी मात्रा में उत्पादन की आपूर्ति करने के लिए तैयार हैं।

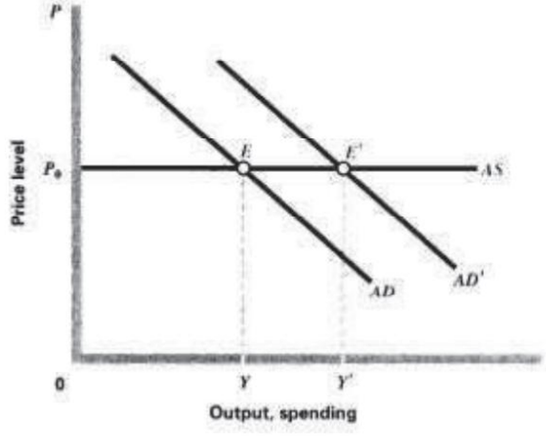

चित्र 2.9

शास्त्रीय AS वक्र के साथ राजकोषीय विस्तार एक और परिणाम देता है। यहाँ AS वक्र उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर, Y' (चित्र 2.10) पर लंबवत है। AS और AD वक्रों का प्रतिच्छेदन E पर प्रारंभिक संतुलन देता है, जहाँ पूर्ण रोजगार होता है। राजकोषीय विस्तार AD अनुसूची को AD से AD' में स्थानांतरित करता है और एक नया संतुलन, E' बनाता है। P0 मूल्य पर , वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है, लेकिन चूँकि फर्म उच्च स्तर के उत्पादन के लिए श्रम इनपुट प्राप्त नहीं कर सकती हैं, इसलिए उत्पादन में वृद्धि नहीं होती है। हालाँकि फर्म मज़दूरी बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाने का प्रयास करती हैं, लेकिन इससे केवल उत्पादन की लागत बढ़ती है, और इसलिए कीमतें P' तक बढ़ जाती हैं, लेकिन उत्पादन में कोई वृद्धि नहीं होती है। उच्च कीमतें वास्तविक शेष राशि को कम करती हैं, ब्याज दर बढ़ाती हैं और निवेश मांग में गिरावट का कारण बनती हैं। यह अर्थव्यवस्था को AD' वक्र (संतुलन E'') की ओर ले जाता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

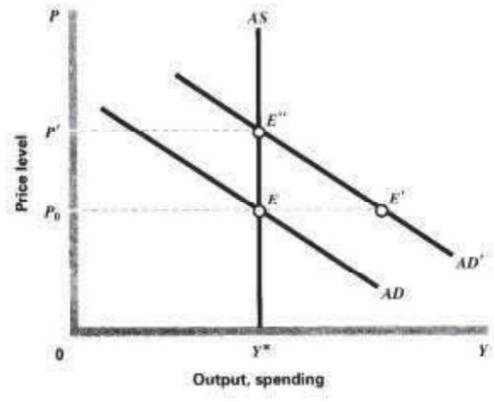

चित्र 2.10

हालांकि, शास्त्रीय कुल आपूर्ति वक्र के साथ एक मौद्रिक विस्तार केवल वास्तविक शेष राशि या ब्याज दर में कोई बदलाव किए बिना उत्पादन की कीमतों को बढ़ाता है। मूल्य वृद्धि नाममात्र मुद्रा स्टॉक (मौद्रिक विस्तार के कारण) में वृद्धि के समानुपाती है। यह चित्र 2.11 में देखा जा सकता है, जहां, E पर पूर्ण रोजगार संतुलन से शुरू होकर, नाममात्र मुद्रा स्टॉक में वृद्धि AD अनुसूची को AD' में स्थानांतरित कर देती है। P0 कीमतों पर अतिरिक्त मांग से वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं। इससे कीमतें बढ़ जाती हैं, E'' संतुलन तक, वास्तविक शेष राशि को प्रारंभिक स्तर तक कम कर देता है।

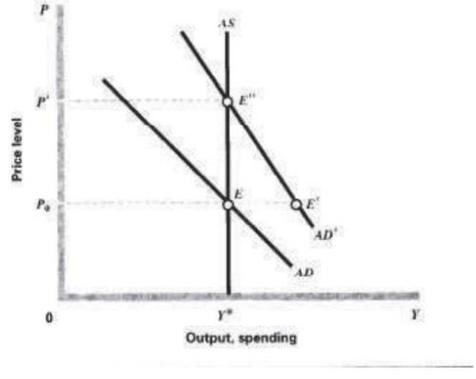

चित्र 2.11

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

11. ——————————आपूर्ति अनुसूची क्षैतिज है, जिसका अर्थ है कि फर्म मौजूदा मूल्य स्तर पर ——————————— (जितने अधिक/अधिक/कम) वस्तुओं की आपूर्ति करती हैं।

12. शास्त्रीय आपूर्ति अनुसूची ——————— है, जिसका तात्पर्य पूर्ण मूल्य और मजदूरी ——————— (लचीलापन / कठोरता / चिपचिपाहट) है।

13. निम्नलिखित में से कौन कीन्सियन आपूर्ति शर्तों पर लागू होता है:

(क) मौद्रिक और राजकोषीय विस्तार दोनों संतुलन उत्पादन को बढ़ाते हैं। (ख) मौद्रिक विस्तार संतुलन उत्पादन को कम करता है जबकि राजकोषीय विस्तार संतुलन उत्पादन को बढ़ाता है।

(c) मौद्रिक विस्तार ब्याज दर को कम करता है और राजकोषीय विस्तार उन्हें बढ़ाता है। (d) विकल्प (a) और (c)

(e) विकल्प (b) और (c)

14. निम्नलिखित में से कौन सा शास्त्रीय आपूर्ति स्थिति संतुलन पर लागू होता है:

(क) राजकोषीय विस्तार का उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। (ख) राजकोषीय विस्तार से संतुलन ब्याज दरें बढ़ती हैं। (ग) मौद्रिक विस्तार से कीमतें बढ़ती हैं, लेकिन उत्पादन और मुद्रास्फीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ब्याज दर।

(घ) उपर्युक्त सभी।

2.11 सारांश

प्राकृतिक बेरोजगारी से तात्पर्य है कि कामगार एक नौकरी से दूसरी नौकरी में जा रहे हैं, प्रौद्योगिकी द्वारा प्रतिस्थापित बेरोजगारों की संख्या, या रोजगार पाने के लिए कौशल की कमी वाले लोग। यह वास्तविक या स्वैच्छिक आर्थिक शक्तियों के परिणामस्वरूप होने वाली न्यूनतम बेरोजगारी दर है।

श्रम बाजार में प्राकृतिक बेरोजगारी आम बात है क्योंकि कर्मचारी नौकरियों या कंपनियों में आते-जाते रहते हैं। अगर बेरोजगारी चक्रीय, संस्थागत या नीति-आधारित है तो उसे प्राकृतिक नहीं माना जाता। प्राकृतिक बेरोजगारी के कारण, किसी अर्थव्यवस्था में 100% पूर्ण रोजगार प्राप्त करना असंभव है।

अर्थशास्त्रियों का आम तौर पर मानना था कि यदि बेरोजगारी मौजूद है, तो यह श्रम या श्रमिकों की मांग की कमी के कारण है, और अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होगी

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

राजकोषीय या मौद्रिक उपायों के माध्यम से। हालाँकि, इतिहास से पता चलता है कि मज़बूत आर्थिक अवधियों के दौरान भी, कंपनियों में कर्मचारियों का आना-जाना स्वाभाविक रहा है।

प्राकृतिक बेरोजगारी की इस परिभाषा के अंतर्गत, न्यूनतम मजदूरी या उच्च स्तर के संघीकरण जैसे संस्थागत कारकों के कारण दीर्घकाल में प्राकृतिक दर में वृद्धि संभव है।

एएस वक्र आपूर्ति किए गए उत्पादन और अर्थव्यवस्था में मूल्य स्तर के बीच संबंध को दर्शाता है। अल्पावधि में, मजदूरी-मूल्य कठोरता के कारण, एएस वक्र क्षैतिज होता है।
उत्पादन मांग से निर्धारित होता है (कीनेसियन मामला)। लंबे समय में, मजदूरी-कीमत लचीलेपन के कारण, एएस वक्र लंबवत होता है। मूल्य स्तर मांग से निर्धारित होता है (क्लासिकल मामला)।
मध्यम अवधि में, मजदूरी और कीमतों में धीमे समायोजन के कारण, एएस वक्र ऊपर की ओर झुका हुआ है।

2.12 शब्दावली

बेरोज़गारी दर: श्रम शक्ति के प्रति बेरोज़गारों का अनुपात।

श्रम बल भागीदारी दर: कुल वयस्क जनसंख्या में श्रम बल का अनुपात।

घर्षणात्मक बेरोजगारी: अर्थव्यवस्था में क्षेत्रीय परिवर्तन के कारण उत्पन्न बेरोजगारी।

संरचनात्मक बेरोज़गारी: अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण उत्पन्न बेरोज़गारी।

चक्रीय बेरोजगारी: वह बेरोजगारी जो मंदी या मंदी के दौरान बढ़ जाती है और तेजी या तेजी के दौरान घट जाती है।

बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर: संरचनात्मक और घर्षण बेरोज़गारी का योग एक अर्थव्यवस्था में संतुलन बेरोज़गारी के बराबर होता है जिसे बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर भी कहा जाता है। एक अर्थव्यवस्था जो अपने सभी संसाधनों का पूरी तरह से उपयोग करती है, उसमें अभी भी कुछ सकारात्मक बेरोज़गारी दर होगी, जिसे बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर कहा जाता है।

संभावित उत्पादन: अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता जब बेरोजगारी अपनी स्वाभाविक दर पर होती है। यह वह अधिकतम नहीं है जो कोई अर्थव्यवस्था सैद्धांतिक रूप से उत्पादन कर सकती है, बल्कि एक कम, टिकाऊ संख्या है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

समग्र मांग: मूल्य स्तर और उत्पादन का वह संयोजन जिस पर वस्तु और परिसंपत्ति बाजार एक साथ संतुलन में होते हैं।

समग्र आपूर्ति: उत्पादन की वह मात्रा जिसे फर्में मूल्य के प्रत्येक स्तर पर आपूर्ति करने को तैयार हैं।

स्थिर मूल्य मॉडल: वह मॉडल जो स्थिर कीमतों के संदर्भ में ऊपर की ओर बढ़ते समग्र आपूर्ति वक्र की व्याख्या करता है, अर्थात वे कीमतें जो मांग में परिवर्तन होने पर तत्काल नहीं बदलती हैं।

अपूर्ण सूचना मॉडल: वह मॉडल जो अपूर्ण सूचना के कारण ऊपर की ओर बढ़ते कुल आपूर्ति वक्र की व्याख्या करता है। जब वास्तविक कीमतें अपेक्षित कीमतों से अधिक होती हैं तो उत्पादन बढ़ता है क्योंकि फर्मों के पास पर्याप्त जानकारी नहीं होती है कि अन्य वस्तुओं की कीमतें भी बढ़ी हैं।

2.13 पाठ्य-अध्याय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. (बी), प्राकृतिक बेरोजगारी दर की गणना चक्रीय या संरचनात्मक बेरोजगारी दरों से स्वतंत्र रूप से की जाती है। 2. (सी), संतुलन वास्तविक मजदूरी गिरती है।

3. (घ), उच्च मजदूरी पर, आय प्रभाव प्रतिस्थापन प्रभाव पर हावी हो जाता है, जिससे श्रम आपूर्ति कम हो जाती है। 4. (ग), बेरोजगारी के प्राकृतिक स्तर

से नीचे की बेरोजगारी दर का अर्थ है वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद जो संभावित वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद से अधिक है, जो लंबे समय तक टिकाऊ नहीं है।

5. (घ) उत्पादन और कीमतों दोनों के संतुलन स्तर का निर्धारण करना।
6. (क) आईएस-एलएम मॉडल।
7. (क) मुद्रा स्टॉक में वृद्धि करता है।
8. (क) विस्तारवादी मौद्रिक और राजकोषीय नीति।
9. (ई) उपरोक्त सभी।
10. मजदूरी और कीमतें
11. कीनेसियन, जितने भी

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

12. ऊर्ध्वाधर, लचीलापन 13.

(ए) मौद्रिक और राजकोषीय विस्तार दोनों संतुलन उत्पादन बढ़ाते हैं और (सी) मौद्रिक विस्तार ब्याज दर को कम करता है और राजकोषीय विस्तार उन्हें बढ़ाता है। 14. (डी) उपरोक्त सभी। राजकोषीय विस्तार का उत्पादन पर

कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, राजकोषीय विस्तार संतुलन ब्याज दरों को बढ़ाता है और मौद्रिक विस्तार कीमतों को बढ़ाता है लेकिन उत्पादन और ब्याज दर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

2.14 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

प्रश्न 1. बेरोजगारी की प्राकृतिक दर क्या है? स्वस्थ अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी का कुछ सकारात्मक स्तर अपरिहार्य क्यों है?

प्रश्न 2. संरचनात्मक बेरोजगारी क्या है? यह घर्षण बेरोजगारी से किस प्रकार भिन्न है? संरचनात्मक बेरोजगारी की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा करें।

प्रश्न 3 चक्रीय बेरोजगारी क्या है? क्या चक्रीय बेरोजगारी प्राकृतिक बेरोजगारी को बढ़ा सकती है? बेरोजगारी की दर क्या है? उदाहरण देकर चर्चा करें।

2.15 संदर्भ

डोर्नबुश, आर., फिशर, एस. (1994). मैक्रोइकॉनॉमिक्स, 6वां संस्करण. मैकग्रॉ-हिल.

केस, के.ई., फेयर, आर.सी., और ओस्टर, एस.एम. (2012). अर्थशास्त्र के सिद्धांत. पियर्सन कॉलेज डिवीजन.

लिप्सी, आर.जी., और क्रिस्टल, के.ए. (2015)। अर्थशास्त्र। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, यू.एस.ए.

मैनकीव, एनजी (2016)। मैक्रोइकॉनॉमिक्स के सिद्धांत। सेन्गेज लर्निंग।

वेबसाइटें:

https://www.investopedia.com/

https://www.core-econ.org/espp/book/text/08.htm

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

इकाई II: फिलिप्स वक्र और सिद्धांत अपेक्षाएं

पाठ 3 फिलिप्स वक्र और सिद्धांत अपेक्षाएं

पाठ 4 मुद्रास्फीति और फिलिप्स वक्र

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

अध्याय 3

फिलिप्स वक्र और अपेक्षाओं का सिद्धांत

डॉ. राजेश कुमार सहायक
प्रोफेसर, सरला बिरला
विश्वविद्यालय, रांची

संरचना

3.1 सीखने के उद्देश्य 3.2 परिचय

3.3 बेरोजगारी के प्रकार 3.4 फिलिप्स वक्र
3.5 बेरोजगारी की प्राकृतिक
दर 3.6 अर्थशास्त्र में अपेक्षाएँ

3.6.1 अनुकूली अपेक्षाएँ 3.6.2 तर्कसंगत
अपेक्षाएँ 3.7 अपेक्षा-संवर्धित फिलिप्स वक्र 3.8
अनुकूली अपेक्षाओं के अंतर्गत फिलिप्स वक्र 3.9 तर्कसंगत अपेक्षाओं के
अंतर्गत फिलिप्स वक्र 3.10 अपेक्षा नीति अप्रभावीता बहस 3.11 सारांश 3.12
शब्दावली 3.13 पाठ में प्रश्नों के उत्तर 3.14 आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 3.15 संदर्भ

3.16 सुझाए गए पठन

3.1 सीखने के उद्देश्य

बेरोजगारी की विभिन्न श्रेणियों का आकलन करना

बेरोजगारी की प्राकृतिक दर की धारणा की परिभाषा का मूल्यांकन करना

मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच संबंध प्रदर्शित करना

स्व निर्देशात्मक
सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

तर्कसंगत और अनुकूली अपेक्षाओं के विचारों को स्पष्ट करना

अल्पावधि फिलिप्स वक्र में बदलाव का वर्णन करने के लिए

फिलिप्स वक्र के विपरीत अल्पकालिक और दीर्घकालिक आकृतियों को समेटने के लिए

3.2 परिचय

वस्तुओं और सेवाओं की लागत में सामान्य और निरंतर वृद्धि को मुद्रास्फीति कहा जाता है। मुद्रास्फीति के साथ, पैसे का मूल्य घटता है, इस प्रक्रिया में घरेलू क्रय शक्ति कम होती है। मुद्रास्फीति में वृद्धि से विनिमय दर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आपूर्ति और मांग से संबंधित कई तत्व मुद्रास्फीति में योगदान करते हैं। तदनुसार, मुद्रास्फीति के दो प्रकार हैं: लागत धक्का (उत्पादन लागत में वृद्धि से प्रेरित) और मांग खींच (मांग में वृद्धि से प्रेरित)। मुद्रास्फीति के अलावा, बेरोजगारी एक महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक समस्या है।

एक स्वस्थ व्यक्ति जो काम करने को तैयार है लेकिन मौजूदा दर पर रोजगार पाने में असमर्थ है, उसे बेरोजगार कहा जाता है। इससे न केवल परिवार की आय कम होती है, बल्कि व्यक्ति का मनोबल भी गिरता है। समग्र स्तर पर, इससे मूल्यवान मानव संसाधनों का नुकसान होता है क्योंकि बेरोजगार लोगों की सेवाओं का उपयोग वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जा सकता था। वास्तव में, कई लोग बेरोजगारी और मुद्रास्फीति को प्रमुख सामाजिक बुराइयों के रूप में देखते हैं। बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के सामाजिक प्रभाव कहीं अधिक गंभीर हैं।

ये मुद्दे देश में सामाजिक तनाव और राजनीतिक अशांति का कारण बन सकते हैं।

मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच संबंध ने अर्थशास्त्रियों को लंबे समय से आकर्षित किया है। याद रखें कि पारंपरिक अर्थशास्त्र ने वास्तविक और मौद्रिक क्षेत्रों के पृथक्करण का समर्थन किया था। जबकि बेरोजगारी एक वास्तविक कारक है, मुद्रास्फीति वित्तीय दुनिया से संबंधित है। इस वजह से, पारंपरिक अर्थशास्त्री यह देखने में असमर्थ थे कि बेरोजगारी और मुद्रास्फीति कैसे संबंधित हो सकती है। धन के परिमाण सिद्धांत में कहा गया है कि धन की आपूर्ति में वृद्धि से उत्पादन के स्तर को अपरिवर्तित बनाए रखते हुए मूल्य स्तर में वृद्धि होगी। मजदूरी दर लचीलेपन के आधार पर किसी के बेरोजगार होने की संभावना को खारिज कर दिया गया था। इसलिए, पारंपरिक अर्थशास्त्रियों ने बेरोजगारी को कभी समस्या नहीं माना; उन्होंने इसे एक अल्पकालिक समस्या के रूप में देखा।

दूसरी ओर, कीन्स ने तर्क दिया कि मौद्रिक चरों के व्यावहारिक परिणाम होते हैं।
उनका प्रस्तावित संचरण तंत्र इस प्रकार है: धन की आपूर्ति बढ़ती है जबकि

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

ब्याज दर कम हो जाती है। ब्याज दरों में गिरावट आने पर निवेश बढ़ता है।
निवेश में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादन और रोजगार में वृद्धि होती है।

इस इकाई में हम बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच संबंध के फिलिप्स वक्र की भविष्यवाणी की जांच करेंगे। हम यह भी जांच करेंगे कि फिलिप्स वक्र अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिदृश्यों में कैसे भिन्न होता है।

3.3 बेरोजगारी के प्रकार

"श्रम बल" शब्द से तात्पर्य उन सभी लोगों से है जो काम करने के इच्छुक हैं और जिनकी आयु 16 से 64 वर्ष के बीच है। इसलिए, इसमें नियोजित और बेरोजगार दोनों लोग शामिल हैं।
जो लोग सेवानिवृत्त हो चुके हैं, बीमारी के कारण काम करने में असमर्थ हैं, घर की देखभाल कर रहे हैं, या काम की तलाश नहीं कर रहे हैं, उन्हें श्रम बल से बाहर रखा गया है।

"कार्यबल" शब्द थोड़ा अधिक प्रतिबंधित है क्योंकि यह केवल उन लोगों को संदर्भित करता है जो कार्यरत हैं। इस प्रकार बेरोजगार लोगों की संख्या श्रम बल और कार्य बल के बीच के अंतर से निर्धारित होती है।

"रोजगार प्राप्त व्यक्ति" का अर्थ है कोई भी व्यक्ति जो किसी भी क्षमता में पैसे के लिए काम करता है (गृहिणी इसमें शामिल नहीं हैं)। दूसरी ओर, जो लोग रोजगार में नहीं हैं, लेकिन सक्रिय रूप से रोजगार की तलाश कर रहे हैं, उन्हें बेरोजगारों के समूह में शामिल किया जाता है। जो लोग कार्यबल में नहीं हैं, उन्हें बेरोजगारी की गणना के लिए ध्यान में नहीं रखा जाता है।

बेरोज़गार लोगों की संख्या को संपूर्ण श्रम शक्ति से विभाजित करने पर हम बेरोज़गारी दर को परिभाषित करते हैं। "बेरोज़गारी" शब्द से "अनैच्छिक बेरोज़गारी" का तात्पर्य है, इसलिए इसे ध्यान में रखें। इस विचार का तात्पर्य है कि कोई व्यक्ति मौजूदा वेतन दर पर काम करने को तैयार है, लेकिन उसे रोज़गार नहीं मिल पा रहा है।

बेरोजगारी तीन प्रकार की होती है, यथा घर्षणात्मक, संरचनात्मक, और चक्रीय।
हमने नीचे इन पर चर्चा की है:

1. घर्षण बेरोजगारी: लोग अक्सर नौकरी बदलते रहते हैं, जिसके कारण ऐसा होता है। जब किसी कर्मचारी का रोजगार अनुबंध समाप्त हो जाता है, तो वे तब तक बेरोजगार रह सकते हैं जब तक उन्हें कोई दूसरा रोजगार नहीं मिल जाता। अन्य उदाहरणों में, कर्मचारी बेहतर रोजगार के अवसरों की तलाश में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चले जाते हैं या अस्थायी बेरोजगारी लाभ लेने का फैसला करते हैं। क्योंकि बाजार में घर्षण होता है और अर्थव्यवस्था में नौकरी की खोज और मिलान सहज नहीं होता है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

अपूर्ण जानकारी के साथ, घर्षणात्मक बेरोजगारी उत्पन्न होती है।

2. संरचनात्मक बेरोजगारी: यह कुछ नौकरियों की आपूर्ति और मांग के बीच असंतुलन के कारण होती है। उदाहरण के लिए, भारत में वर्तमान में रोजगार चाहने वाले इंजीनियरों और प्रबंधन विशेषज्ञों की संख्या उपलब्ध पदों की तुलना में बहुत अधिक है। इसके परिणामस्वरूप तकनीकी योग्यता वाले कई लोगों ने कम कौशल वाले व्यवसायों को चुना है। अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप संरचनात्मक बेरोजगारी होती है, जिसके लिए प्रतिक्रिया करने में समय लगता है।

3. चक्रीय बेरोजगारी: यह समग्र मांग में परिवर्तन के परिणामस्वरूप विकसित होती है, जो व्यापार चक्रों का एक घटक है। जब कुल मांग में गिरावट आती है, तो उसी समय श्रम की मांग भी कम हो जाती है, जिससे बेरोजगारी में वृद्धि होती है। दूसरी ओर, जब अर्थव्यवस्था आम तौर पर अच्छा प्रदर्शन कर रही होती है, तो श्रमिकों की मांग अधिक होती है और बेरोजगारी कम होती है। इसलिए, चक्रीय बेरोजगारी की प्रकृति चक्रीय होती है।

3.4 फिलिप्स वक्र

फिलिप्स वक्र, जिस पर ए.डब्लू. फिलिप्स का नाम है, बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच संबंध का वर्णन करता है। वर्ष 1861-1957 के लिए यूनाइटेड किंगडम के लिए बेरोजगारी की दर और नाममात्र मजदूरी दरों में वृद्धि की दर पर समय श्रृंखला डेटा का उपयोग करते हुए, फिलिप्स, जो उस समय लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में प्रोफेसर थे, ने 1958 में एक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने इस प्रकार के एक सीधे रैखिक समीकरण का उपयोग किया:

वा बू

जहां मजदूरी वृद्धि की दर है, a और b स्थिरांक हैं और u बेरोजगारी की दर है। फिलिप्स के अनुसार, w और u के बीच एक स्थिर और व्युत्क्रम संबंध है, जिसका अर्थ है कि कम बेरोजगारी दर मजदूरी वृद्धि की उच्च दर से जुड़ी है।

अनेक अर्थशास्त्रियों ने इसका अनुसरण किया और अन्य देशों के लिए भी इसी प्रकार के कार्य करने का प्रयास किया फिलिप्स के निष्कर्ष प्रकाशित होने के बाद। बाद में यह साबित हुआ कि बढ़ती कीमतों और बढ़ती मजदूरी दरों के बीच संबंध स्थिर है। इसने कुछ अर्थशास्त्रियों को प्रेरित किया

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

वेतन वृद्धि के लिए मुद्रास्फीति (कीमतों में वृद्धि की दर) को प्रतिस्थापित करके फिलिप्स के सीधे समीकरण को बेहतर बनाएं। कई उदाहरणों में, चर प्लॉट का बिखराव मूल की ओर एक उत्तल वक्र की तरह दिखता था। फिलिप्स वक्र नीति अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में जल्दी से उभरा क्योंकि अनुभवजन्य जांच ने मुद्रास्फीति की दर और बेरोजगारी की दर के बीच व्युत्क्रम संबंध की पुष्टि की।

इस तरह की खोज से नीतिगत परिणाम आश्चर्यजनक होते हैं क्योंकि अर्थव्यवस्था में एक ही समय में कम मुद्रास्फीति और कम बेरोजगारी दोनों नहीं हो सकती। बेरोजगारी को नियंत्रण में रखने के लिए अर्थव्यवस्था को वेतन वृद्धि की उच्च दर को झेलने में सक्षम होना चाहिए, और इसके विपरीत। नतीजतन, फिलिप्स वक्र सरकार की वैकल्पिक स्थिरीकरण नीति का समर्थन करता है।

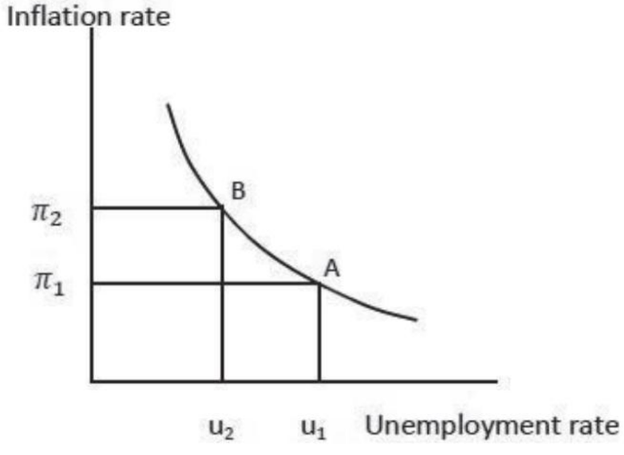

चित्र 3.1

चित्र 3.1 एक विशिष्ट फिलिप्स वक्र दिखाता है। मान लीजिए कि बिंदु A पर, बेरोजगारी दर u1 है और मुद्रास्फीति दर है। अर्थव्यवस्था को मुद्रास्फीति की उच्च दर का सामना करने में सक्षम होना चाहिए

२ , अगर सरकार बेरोजगारी को कम करना चाहती है 2 ·

1960 और 1970 के दशक की शुरुआत में नीति विश्लेषण के लिए फिलिप्स वक्र को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा गया था। उपाय सीधा और समझने में आसान था: उच्च बेरोजगारी के समय में, सरकार को एक विस्तारवादी मौद्रिक नीति अपनानी चाहिए, जो आम जनता के हाथों में अधिक पैसा डालती है। इसी तरह की कार्रवाई से बेरोजगारी कम करते हुए मुद्रास्फीति बढ़ सकती है। इसके विपरीत, सरकार मुद्रास्फीति दर को कम करने के लिए उच्च मुद्रास्फीति के समय में संकुचनकारी आर्थिक रणनीति अपना सकती है; हालाँकि, ऐसी रणनीति का परिणाम अपेक्षित था

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

बेरोज़गारी दर अधिक होना। परिणामस्वरूप, अर्थशास्त्रियों ने सोचा कि बेरोज़गारी और मुद्रास्फीति के बीच एक समझौता था। फिलिप्स वक्र के ढलान और स्थान के आधार पर, सरकार बेरोज़गारी दर के लिए मुद्रास्फीति दर का कोई भी अनुपात चुन सकती है।

समीकरण 1 में दिए गए आधुनिक रूप में फिलिप्स वक्र बताता है कि मुद्रास्फीति की दर तीन बलों पर निर्भर करती है:

(i) अपेक्षित मुद्रास्फीति,

(ii) चक्रीय बेरोजगारी (iii) आपूर्ति

झटके।

नोट: प्राकृतिक दर से बेरोजगारी का विचलन, चक्रीय बेरोजगारी कहलाता है

$$\pi = E\pi - \beta(u - u^n) + v$$

$$\text{Inflation} = \text{Expected Inflation} - (\beta \times \text{Cyclical Unemployment}) + \text{Supply Shock},$$

समीकरण 1

जहाँ, चक्रीय बेरोजगारी के प्रति मुद्रास्फीति की प्रतिक्रिया को मापने वाला एक पैरामीटर है।

दूसरे शब्दों में, ज़्यादा बेरोज़गारी का मतलब कम मुद्रास्फीति है। यही कारण है कि "चक्रीय बेरोज़गारी" शब्द के पहले नकारात्मक चिह्न लगाया जाता है।

फिलिप्स कर्व समीकरण कहाँ से आया? हम इसे कुल आपूर्ति के लिए अपने समीकरण से निकाल सकते हैं, भले ही यह परिचित न लगे। कुल आपूर्ति के लिए समीकरण इस प्रकार लिखें कि यह कैसे होता है:

$$\text{पी} = \text{ईपी} + (1/) (\text{वाई} - \overline{\text{वाई}})$$

हम इस समीकरण को मुद्रास्फीति और के बीच फिलिप्स वक्र लिंक में बदल सकते हैं
केवल एक जोड़, एक घटाव, और एक प्रतिस्थापन के साथ बेरोजगारी।

तीन चरण इस प्रकार हैं: बहिर्जात घटनाओं (जैसे वैश्विक तेल की कीमतों में परिवर्तन) का वर्णन करने के लिए, जो मूल्य स्तरों को बदलते हैं और अल्पावधि समग्र आपूर्ति वक्र को स्थानांतरित करते हैं, पहले समीकरण के दाईं ओर आपूर्ति झटका v जोड़ें:

$$\text{पी} = \text{ईपी} + (1/) (\text{वाई} - \overline{\text{वाई}}) + \text{वी}$$

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

इसके बाद, मूल्य स्तर से मुद्रास्फीति दर तक जाने के लिए, पिछले वर्ष के मूल्य स्तर को घटाएँ समीकरण के दोनों पक्षों से P–1 प्राप्त करने के लिए:

$$(P - P–1) = (EP - P–1) + (1/) (Y ––Y) + v \text{ बायीं ओर का}$$

पद, P – P–1, वर्तमान मूल्य स्तर और पिछले वर्ष के मूल्य स्तर के बीच का अंतर है, जो मुद्रास्फीति है। दायीं ओर का पद, EP – P–1, अपेक्षित मूल्य स्तर और पिछले वर्ष के मूल्य स्तर के बीच का अंतर है, जो अपेक्षित मुद्रास्फीति Ep है। इसलिए, हम P – P–1 को p से और EP – P–1 को Ep से बदल सकते हैं।

तीसरा, ध्यान रखें कि ओकुन का नियम उत्पादन से बेरोजगारी की ओर बढ़ने के लिए इन दो चरों के बीच एक कड़ी प्रदान करता है। ओकुन के नियम की एक व्याख्या के अनुसार, उत्पादन और उसके प्राकृतिक स्तर के बीच का अंतर और बेरोजगारी और उसकी प्राकृतिक दर के बीच का अंतर विपरीत रूप से संबंधित है; यानी, जब उत्पादन अपने प्राकृतिक स्तर से अधिक होता है, तो बेरोजगारी अपनी प्राकृतिक दर से कम होती है। इसे इस प्रकार लिखा जा सकता है

जैसा:

$$(1/) (Y- Y) = - (\mu - \mu n)$$

इस ओकुन के नियम संबंध का उपयोग करके, हम (1/) (Y––) के लिए -(μ - μn) को प्रतिस्थापित कर सकते हैं

Y) को पिछले समीकरण में रखने पर प्राप्त होगा:

$$= ई – (\mu - \mu n) + वी$$

परिणामस्वरूप, हम फिलिप्स वक्र समीकरण प्राप्त करने के लिए समग्र आपूर्ति समीकरण का उपयोग कर सकते हैं।

यह सारा गणित एक बात को प्रदर्शित करने के लिए है: अल्पावधि कुल आपूर्ति समीकरण और फिलिप्स वक्र समीकरण प्रभावी रूप से समान समष्टि आर्थिक अवधारणाओं को व्यक्त करते हैं। विशेष रूप से, ये समीकरण वास्तविक और नाममात्र चर के बीच एक संबंध प्रदर्शित करते हैं, जो निकट भविष्य में, शास्त्रीय द्विभाजन (वास्तविक और नाममात्र चर का सैद्धांतिक विभाजन) को कमजोर करता है। अल्पावधि कुल आपूर्ति समीकरण बताता है कि उत्पादन मूल्य स्तरों में अचानक परिवर्तन से प्रभावित होता है। फिलिप्स वक्र समीकरण बताता है कि मुद्रास्फीति दर में अचानक परिवर्तन बेरोजगारी से संबंधित हैं। आउटपुट और मूल्य स्तर की जांच करते समय, कुल आपूर्ति वक्र अधिक व्यावहारिक होता है, लेकिन बेरोजगारी और मुद्रास्फीति की जांच करते समय, फिलिप्स वक्र अधिक व्यावहारिक होता है। हालांकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कुल आपूर्ति वक्र और फिलिप्स वक्र एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ्य-अंतर्गत प्रश्न-I

1. निम्नलिखित में से कौन सा संरचनात्मक बेरोजगारी का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(क) वस्तुओं और सेवाओं की मांग में कमी के कारण बेरोजगारी

(ख) श्रमिकों और उनके कौशल के बीच बेमेल के कारण बेरोजगारी उपलब्ध नौकरियाँ

(ग) अस्थायी आर्थिक मंदी के कारण बेरोजगारी

(घ) किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में उपलब्ध नौकरियों की कमी के कारण उत्पन्न बेरोजगारी क्षेत्र

2. निम्नलिखित में से कौन घर्षणात्मक बेरोजगारी का उदाहरण है?

(क) एक फैक्ट्री बंद हो जाना और श्रमिकों की छंटनी हो जाना

(ख) कोई व्यक्ति स्वेच्छा से अपनी नौकरी छोड़कर बेहतर नौकरी की तलाश करता है

(ग) किसी निश्चित वस्तु की मांग में अचानक कमी के कारण बेरोजगारी उत्पाद

(घ) समग्र अर्थव्यवस्था में मंदी के कारण उत्पन्न बेरोजगारी

3. निम्नलिखित में से कौन चक्रीय बेरोजगारी की विशेषता है?

(a) यह श्रमिकों के कौशल और उपलब्ध नौकरियों के बीच बेमेल के कारण होता है

(बी) यह तकनीकी प्रगति और उपभोक्ता जीवन में बदलाव के कारण होता है पसंद

(c) यह अस्थायी आर्थिक मंदी के कारण होता है

(d) यह वस्तुओं और सेवाओं की मांग में कमी के कारण होता है

4. फिलिप्स वक्र के अनुसार, बेरोजगारी और बेरोजगारी के बीच क्या संबंध है? और मुद्रास्फीति?

(क) बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच कोई संबंध नहीं है (ख) बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच नकारात्मक संबंध है

(ग) बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच सकारात्मक संबंध है

(घ) फिलिप्स वक्र केवल कुछ प्रकार की बेरोजगारी पर लागू होता है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

5. निम्नलिखित में से कौन सा फिलिप्स वक्र को दाईं ओर स्थानांतरित करेगा?

(क) बेरोजगारी की प्राकृतिक दर में वृद्धि

(बी) बेरोजगारी की प्राकृतिक दर में कमी

(ग) मुद्रास्फीति दर में कमी

(घ) मुद्रास्फीति दर में वृद्धि

3.5 बेरोजगारी की प्राकृतिक दर

'पूर्ण रोजगार' शब्द, जिसका अर्थ है कि अर्थव्यवस्था में प्रत्येक कर्मचारी को रोजगार प्राप्त है, आपके मुंह से निकला होगा। क्या आपने कभी इस तरह के परिदृश्य पर विचार किया है?

क्या कोई इसे हासिल कर सकता है? पूर्ण रोजगार का मतलब यह नहीं है कि जब हम दावा करते हैं कि अर्थव्यवस्था उस स्तर पर चल रही है तो कोई बेरोजगारी नहीं है। बाजार की खामियों, मजदूरी और कीमतों की कठोरता और विभिन्न आर्थिक घर्षणों के कारण शून्य बेरोजगारी हासिल नहीं की जा सकती।

उदाहरण के लिए, कुछ कर्मचारी किसी भी समय एक नौकरी से दूसरी नौकरी में जाने के कारण घर्षणात्मक रूप से बेरोजगार रहते हैं। इसी तरह, कुछ कर्मचारी अपने कौशल और उपलब्ध नौकरियों के बीच बेमेल के कारण संरचनात्मक बेरोजगारी का अनुभव करते हैं।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए, मिल्टन फ्रीडमैन और एडमंड फेल्प्स ने 1960 के दशक में स्वतंत्र रूप से "बेरोजगारी की प्राकृतिक दर" शब्द विकसित किया। 'बेरोजगारी की प्राकृतिक दर' की अवधारणा मानती है कि किसी भी समय श्रम शक्ति का एक निश्चित प्रतिशत बेरोजगार होना अर्थव्यवस्था के घर्षण और दोषों का एक स्वाभाविक परिणाम है। हम ध्यान दें कि कोई भी बेरोजगारी जो प्राकृतिक घटना नहीं है, वह व्यापार चक्र या संबंधित नीतिगत मुद्दे के कारण हो सकती है।

इसके बाद के वर्षों में, बेरोजगारी की प्राकृतिक दर के विचार से समष्टि आर्थिक विश्लेषण बदल गया। फिलिप्स वक्र का आकार और स्थान भविष्य के आर्थिक वातावरण के बारे में आर्थिक एजेंटों (जैसे उपभोक्ता, निगम और सरकार) की अपेक्षाओं से काफी प्रभावित होता है, जैसा कि हम इस इकाई में बाद में देखेंगे।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

3.6 अर्थशास्त्र में अपेक्षाएँ

निर्णय लेने में महत्वपूर्ण तरीके से अपेक्षाएँ शामिल होती हैं। जब आप बरसात के मौसम में बाहर निकलते हैं, तो आप आसमान को देखते हैं या मौसम की रिपोर्ट पर ध्यान देते हैं। अगर आपको लगता है कि दिन में बाद में बारिश हो सकती है, तो आप छाता लेकर जाते हैं। इसके अलावा, अगर आपको लगता है कि आपको रुकना पड़ेगा, तो आप आवश्यक तैयारी करते हैं। आर्थिक एजेंट आर्थिक चर (कीमतों, मांग, सरकारी नीति आदि सहित) के बारे में निर्णय लेते हैं और अपेक्षाएँ उत्पन्न करते हैं। अगर कोई उत्पादक यह अनुमान लगाता है कि आने वाले वर्षों में उसके माल की मांग बढ़ेगी, तो वह अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने की तैयारी कर सकता है। वह कई चरों को ध्यान में रख सकता है, जिनमें शामिल हैं i) उत्पादन तकनीक में संभावित उन्नति जो वर्तमान में उपयोग में आने वाली मशीनरी को अप्रचलित बना सकती है; ii) नए विकल्पों का उद्भव जो उत्पादन की मांग को प्रभावित कर सकता है; iii) सरकार की औद्योगिक, श्रम, व्यापार और कर नीतियों में परिवर्तन जो राजस्व और लागत को प्रभावित कर सकते हैं; और iv) युद्ध, व्यापार प्रतिबंध और बदलते अंतर्राष्ट्रीय संबंध जो उत्पादन और बिक्री की संभावनाओं को प्रभावित कर सकते हैं।

यदि कोई कर्मचारी यह अनुमान लगाता है कि आने वाले महीनों में श्रम की मांग थोड़ी अधिक होगी, तो वह वेतन में वृद्धि का अनुरोध कर सकता है। दूसरी ओर, यदि श्रम की आवश्यकता कम हो रही है, तो वह वेतन वृद्धि की मांग नहीं कर सकता क्योंकि वह अपनी नौकरी बनाए रखना चाहता है। इसके अतिरिक्त, यदि कोई कर्मचारी यह अनुमान लगाता है कि वस्तुओं और सेवाओं की लागत अधिक तेज़ी से बढ़ेगी (यानी, मुद्रास्फीति अधिक होगी), तो वह अपनी वास्तविक मजदूरी दर को बनाए रखने के लिए उच्च मजदूरी दर की मांग करेगा।

जब मुद्रास्फीति का सही अनुमान लगाया जाता है, तो लोग मुद्रास्फीति की दर को ध्यान में रखते हुए अपने भविष्य के भुगतान और प्राप्तियों को संशोधित करते हैं। दूसरी ओर, अप्रत्याशित मुद्रास्फीति के कारण आय को आय समूहों के बीच पुनर्वितरित किया जाता है। वेतन कमाने वाले समूह जिनके पास एक निश्चित नाममात्र वेतन होता है, वे आम तौर पर हार जाते हैं, क्योंकि कीमतों में वृद्धि के कारण वास्तविक मजदूरी कम हो जाती है।

बहुत लंबे समय से अर्थशास्त्री यह समझते आए हैं कि अपेक्षाएँ आर्थिक व्यवहार को कैसे प्रभावित करती हैं। हालाँकि कीन्स ने व्यक्तियों की अपेक्षाओं का उल्लेख किया है, लेकिन उन्होंने अपने विश्लेषण में उन्हें ध्यान में नहीं रखा। हालाँकि, आर्थिक सिद्धांत में अपेक्षाओं का औपचारिककरण 1950 के दशक तक नहीं हुआ था। अपेक्षाओं को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: (i) अनुकूली अपेक्षाएँ और (ii) तर्कसंगत अपेक्षाएँ। हम इन दो सिद्धांतों की संक्षिप्त व्याख्या देते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

3.6.1 अनुकूली अपेक्षाएँ

अनुकूली अपेक्षाएँ किसी चर की पिछली क्रियाओं पर विचार करती हैं। मान लें कि समय अवधि (t) के लिए मूल्य स्तर Pt है और हमने अपेक्षित मूल्य स्तर को दर्शाने के लिए सुपरस्क्रिप्ट "e" जोड़ा है। इस प्रकार, Pe अवधि (t) के लिए प्रत्याशित मूल्य स्तर है। अनुकूली अपेक्षाएँ सुझाव देती हैं

पालतू = पालतू-1 + (पीटी - पालतू -1)

जहाँ Pt–1 पिछली समयावधि में मूल्य स्तर है, और एक पैरामीटर है
ताकि यह 0 और 1 के बीच मान ले।

अनुकूली अपेक्षा परिकल्पना को लागू करना आसान है। यह एक महत्वपूर्ण विचार, यानी अपेक्षाओं को शामिल करके मैक्रोइकॉनॉमिक्स को और अधिक व्यावहारिक बनाता है।
हालाँकि, अनुकूली अपेक्षाओं की अवधारणा में दो महत्वपूर्ण कमियाँ हैं।
सबसे पहले, मॉडल यह मानता है कि लोग अपनी पिछली गलतियों से नहीं सीखते हैं; इसके बजाय, वे पूर्वानुमान त्रुटि के एक कारक द्वारा चालू वर्ष के लिए अपनी अपेक्षाओं को संशोधित करते हैं। यदि वास्तविक मुद्रास्फीति दर अनुमानित मुद्रास्फीति दर से अधिक है, तो वे लगातार इसे कम आंकते हैं। इसी तरह, यदि वास्तविक मुद्रास्फीति दर अनुमानित मुद्रास्फीति दर से कम है, तो वे लगातार मुद्रास्फीति की दर को अधिक आंकते हैं। दूसरा, मॉडल यह मानता है कि लोग अपनी अपेक्षाओं को केवल पूर्व ज्ञान पर आधारित करते हैं।

यह वर्तमान या आगामी घटनाओं पर विचार नहीं करता है। उदाहरण के लिए, अनुकूली अपेक्षाओं के तहत, उपभोक्ता यह अनुमान नहीं लगाते हैं कि जब सरकार विस्तारवादी मौद्रिक नीति अपनाएगी तो मुद्रास्फीति दर बढ़ेगी। इसी तरह, उपभोक्ता यह अनुमान नहीं लगाते हैं कि सूखे जैसी प्राकृतिक आपदा के परिणामस्वरूप समग्र आपूर्ति में कमी आएगी और मूल्य निर्धारण में वृद्धि होगी।

3.6.2 तर्कसंगत अपेक्षाएँ

तर्कसंगत अपेक्षाओं की परिकल्पना यह धारणा बनाती है कि व्यवसाय और परिवार अपने लिए सबसे अच्छी जानकारी के आधार पर निर्णय लेते हैं जो उनके लिए आसानी से उपलब्ध है। इस प्रकार, वे पिछले रुझानों के अलावा वर्तमान घटनाओं और प्रत्याशित भविष्य की घटनाओं दोनों को ध्यान में रखते हैं। समझदार अपेक्षा यह है कि लोग अपनी पिछली गलतियों से सीखें। लोग कभी-कभी अपनी भविष्यवाणियाँ गलत कर सकते हैं, लेकिन आम तौर पर, वे सही होते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

सरल शब्दों में कहें तो, अवधि t के लिए अनुमानित मुद्रास्फीति दर इस प्रकार दी गई है

$$= \quad + \text{सेंट}$$

उपरोक्त समीकरण में St एक स्टोकेस्टिक गलती है, तथा इसका अनुमानित मान शून्य है।
जबकि कुछ पूर्वानुमानकर्ता सकारात्मक त्रुटियाँ कर सकते हैं, अन्य नकारात्मक त्रुटियाँ कर सकते हैं।
ऐसी त्रुटियाँ एक साथ जोड़ने पर रद्द हो जाती हैं, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक त्रुटियों का योग एक दूसरे के बराबर होता है। दूसरा, त्रुटियों का कोई पैटर्न नहीं है; वे पूरी तरह से यादृच्छिक हैं। याद रखें कि व्यवस्थित त्रुटियाँ अनुकूली अपेक्षाओं के तहत हुईं।

उचित अपेक्षा परिकल्पना दो प्रकार की होती है: कमजोर और मजबूत।
कमज़ोर संस्करण यह धारणा बनाता है कि लोगों के पास सीमित मात्रा में ही ज्ञान की पहुँच है, लेकिन वे इसका सबसे अच्छा उपयोग करते हैं। इसे एक ठोस उदाहरण के रूप में लें।

हर हफ़्ते, आप घरेलू इस्तेमाल के लिए गेहूं का आटा खरीदते हैं। आप बाज़ार में मौजूद सभी अलग-अलग ब्रांड के गेहूं के आटे की सापेक्षिक लागत और पोषक तत्वों से अनजान हैं। हालाँकि, आपके पास उपलब्ध जानकारी की कमी के कारण, आप अक्सर उसी ब्रांड (और संभवतः उसी स्टोर से, भले ही आपको पता न हो कि अन्य स्टोर कम कीमत पर आटा खरीद रहे हैं!) को खरीदते रहते हैं।

तर्कसंगत अपेक्षाओं की परिकल्पना का मजबूत संस्करण यह धारणा बनाता है कि सभी के पास सभी उपलब्ध जानकारी तक पहुँच है। सभी उपलब्ध जानकारी का उपयोग निर्णय लेने के लिए किया जाता है। परिणामस्वरूप, उनकी अपेक्षाएँ और वास्तविक मूल्य बराबर हैं। कोई भी पूर्वानुमानित गलती अप्रत्याशित घटनाओं का परिणाम है।

3.7 अपेक्षा-संवर्धित फिलिप्स वक्र

पहले से वर्णित फिलिप्स वक्र किसी अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीतिजनित मंदी की व्याख्या करने में असमर्थ था।
स्टैगफ्लेशन को समझाने के लिए हमें अपने विश्लेषण में अपेक्षाओं को शामिल करना होगा। वास्तव में, यदि लोगों की अपेक्षाएँ स्थिर रहती हैं तो चित्र 3.1 में दिखाया गया फिलिप्स वक्र सटीक है।
अगर लोगों को लगता है कि उम्मीदें बदल गई हैं तो फिलिप्स वक्र बदल जाएगा। फिलिप्स वक्र के लिए, तर्कसंगत और अनुकूली दोनों उम्मीदों के महत्वपूर्ण परिणाम हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

3.8 अनुकूली अपेक्षाओं के अंतर्गत फिलिप्स वक्र

सूक्ष्मअर्थशास्त्र ने आपको सिखाया है कि वास्तविक वेतन - नाममात्र वेतन नहीं - वह आधार है जिसके आधार पर कर्मचारी और कंपनियाँ यह तय करती हैं कि किसी को काम पर रखना है या नहीं। फ्राइडमैन और फेल्प्स का दावा है कि अपेक्षाएँ महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, संतुलन उत्पादन और मजदूरी दर की गणना करते समय, "अपेक्षित वास्तविक वेतन" की अवधारणा पर विचार किया जाना चाहिए।

किसी निश्चित अवधि के लिए अपने वेतन के संबंध में, कर्मचारी आमतौर पर अपने नियोक्ताओं के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर करते हैं। अनुबंध के प्रभावी होने के दौरान वेतन को समायोजित नहीं किया जा सकता है; अनुबंध समाप्त होने के बाद ही इसमें बदलाव किया जा सकता है। कर्मचारी अनुबंध में प्रत्याशित मुद्रास्फीति को शामिल करते हैं क्योंकि वे इन परिस्थितियों से अवगत होते हैं।
उदाहरण के लिए, यदि श्रमिकों को यह अनुमान है कि आगामी वर्ष में मुद्रास्फीति 3% रहेगी, तो वे मजदूरी दर पर इस तरह से बातचीत करेंगे कि बढ़ती कीमतों के परिणामस्वरूप वास्तविक मजदूरी दर में गिरावट न आए।

मान लें कि फिलिप्स वक्र SRPC1 द्वारा 1% की अनुमानित मुद्रास्फीति दर के लिए प्रदान किया गया है (चित्र 3.2 देखें)। मान लें कि बिंदु A वह स्थान है जहाँ अर्थव्यवस्था है। इस समय अनुमानित मुद्रास्फीति दर 1 (लगभग 3%) है, और बेरोज़गारी दर u* (लगभग 6%) है।
बिंदु A पर काम करने वाले कर्मचारी और व्यवसाय 3% मुद्रास्फीति दर का अनुमान लगाते हैं और उसका अनुभव करते हैं। नतीजतन, अर्थव्यवस्था किसी भी दबाव में नहीं है।

SRPC1 वक्र के साथ, मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी के बीच एक व्यापार-बंद हो सकता है। मुद्रास्फीति बढ़ने पर वास्तविक मज़दूरी कम हो जाएगी क्योंकि मौजूदा अनुबंध नाममात्र मज़दूरी में वृद्धि को रोकते हैं। नतीजतन, व्यवसाय अधिक श्रमिकों को काम पर रखेंगे, जिससे बेरोज़गारी दर कम होगी।

मान लीजिए कि सरकार विस्तारवादी राजकोषीय रणनीति अपनाती है, सरकारी खर्च बढ़ाती है या कर की दरें कम करती है, जिससे समग्र मांग में वृद्धि होगी।
परिणामस्वरूप कीमतें बढ़ रही हैं, जो अधिक मुद्रास्फीति दर को इंगित करता है। यही परिणाम विस्तारवादी मौद्रिक नीति द्वारा प्राप्त किया जाएगा, जैसे कि धन आपूर्ति में वृद्धि या ब्याज दर में गिरावट। इसके परिणामस्वरूप अधिक निवेश होगा, जो बदले में, कुछ हद तक श्रमिकों की आवश्यकता को बढ़ाएगा। किसी भी परिदृश्य में, मुद्रास्फीति दर (लगभग 6%) तक बढ़ जाती है। बेरोजगारी दर घटकर u2 हो जाती है , जो प्राकृतिक दर से कम है। हमने इस स्थिति को चित्र 3.2 में बिंदु B के रूप में दर्शाया है।

2

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

हालांकि, B पर संतुलन केवल क्षणिक है। श्रमिकों को अप्रत्याशित मुद्रास्फीति दर वृद्धि के बारे में जल्दी ही पता चल गया। मूल्य वृद्धि की भरपाई के लिए श्रमिक उच्च मजदूरी दर की मांग करेंगे। यह फिलिप्स वक्र को SRPC1 से SRPC2 में बदलने का कारण बनेगा । चित्र 3.2 में बिंदु C दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था कहाँ संतुलन में होगी। परिणामस्वरूप, बेरोजगारी अपनी प्राकृतिक दर पर होगी, और मुद्रास्फीति होगी

3.

प्राकृतिक दर, अर्थात, u*.

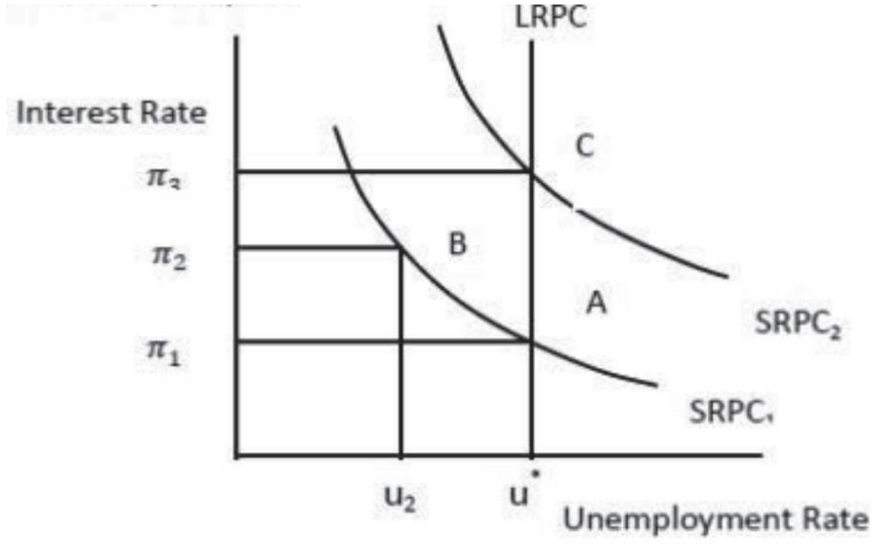

चित्र 3.2

ध्यान दें कि अर्थव्यवस्था की बेरोज़गारी दर * के अपने प्राकृतिक स्तर पर वापस आ गई है। हालाँकि, मुद्रास्फीति की दर काफी अधिक है (3)। इसलिए, बेरोज़गारी दर को मुद्रास्फीति की प्राकृतिक दर से कम करने के सरकार के प्रयासों से मुद्रास्फीति बढ़ रही है। "बेरोज़गारी की गैर-त्वरित मुद्रास्फीति दर" (NAIRU) एक सामान्य शब्द है जिसका उपयोग इस संदर्भ में मुद्रास्फीति की प्राकृतिक दर का वर्णन करने के लिए किया जाता है। जब बेरोज़गारी प्राकृतिक दर या NAIRU पर होगी, तो मुद्रास्फीति की दर स्थिर रहेगी।

जब बेरोजगारी अपनी प्राकृतिक दर से विचलित होती है तो मुद्रास्फीति की दर बढ़ती या घटती है। इसलिए, यदि वास्तविक बेरोजगारी u* से कम है, तो अगले कुछ वर्षों में मुद्रास्फीति बढ़ती रहेगी। NAIRU का विचार और निर्माण

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

उम्मीदों का यह चक्र कई देशों द्वारा अनुभव की गई अति मुद्रास्फीति के लिए एक व्याख्या प्रदान करता है। यदि बेरोजगारी अपनी सामान्य दर तक कम नहीं होती है, तो मुद्रास्फीति का चक्र बढ़ता रहेगा।

उपरोक्त अध्ययन के परिणामस्वरूप हम एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। निकट अवधि में, अनुकूली अपेक्षाओं के तहत फिलिप्स वक्र नीचे की ओर झुकता है। हालाँकि, दीर्घ अवधि में, यह लंबवत होता है। दीर्घ अवधि के फिलिप्स वक्र को ऊर्ध्वाधर रेखा LRPC द्वारा चित्र 3.2 में दिखाया गया है। इसलिए, बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच कोई दीर्घकालिक व्यापार-बंद नहीं है।

3.9 तर्कसंगत उम्मीदों के तहत फिलिप्स वक्र

तर्कसंगत अपेक्षाओं वाले आर्थिक एजेंट, जैसे व्यवसाय और घर, भावी होते हैं। वे पिछले प्रदर्शन के साथ-साथ वर्तमान और आगामी आर्थिक घटनाओं सहित सभी प्रासंगिक डेटा पर विचार करते हैं। तर्कसंगत अपेक्षाओं के तहत, पूर्ण दूरदर्शिता असंभव है, लेकिन कुल मिलाकर गलतियाँ संतुलित हो जाती हैं।

इसका मतलब यह है कि वास्तविक मुद्रास्फीति दर अनुमानित मुद्रास्फीति दर के समान ही है। नतीजतन, न तो कंपनी और न ही कर्मचारी मुआवज़े की दर पर बातचीत करते समय कोई गलती करते हैं। इसलिए, तर्कसंगत अपेक्षाओं को देखते हुए, मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी के बीच कोई समझौता नहीं है। अर्थव्यवस्था की बेरोज़गारी दर एक प्राकृतिक स्तर पर है।

मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी की प्राकृतिक दर मौजूद है। कर्मचारी और व्यवसाय मुद्रास्फीति के ई की दर से चलने की उम्मीद करते हैं। मान लीजिए कि सरकार विस्तारवादी रुख अपनाती है, जिससे कुल मांग में वृद्धि होती है। नतीजतन, मुद्रास्फीति तेज़ दर से बढ़ रही है। अगर आर्थिक एजेंटों ने इस नीति का अनुमान लगाया होता तो वे अपने निर्णय लेने में मुद्रास्फीति दर में वृद्धि को ध्यान में रखते।

अगर नीति अप्रत्याशित होती तो लक्षित परिणाम, बेरोजगारी में कमी, घटित होती। यह हमें एक महत्वपूर्ण बिंदु पर ले आता है: तर्कसंगत अपेक्षाओं की धारणा पर, सरकारी नीति कितनी प्रभावी है? अगर अपेक्षित है, तो सरकारी नीति का कोई प्रभाव नहीं होगा।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ्य-अंतर्गत प्रश्न-II

1. बेरोजगारी की प्राकृतिक दर क्या है?

क) आर्थिक उछाल के दौरान होने वाली बेरोजगारी की दर

ख) बेरोजगारी की वह दर जो तब होती है जब उपलब्ध संसाधनों की कमी होती है कर्मी

ग) बेरोजगारी की वह दर जो तब होती है जब अर्थव्यवस्था गति से चल रही होती है इसके उत्पादन का संभावित स्तर

d) बेरोजगारी की वह दर जो तब होती है जब सरकार हस्तक्षेप करती है श्रम बाज़ार

2. निम्नलिखित में से कौन बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर का निर्धारक है?

क) मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तन

ख) तकनीकी प्रगति ग) श्रम बाजार

का सरकारी विनियमन

घ) समग्र मांग में उतार-चढ़ाव

3. अर्थशास्त्र में अपेक्षाएं क्या हैं?

क) भविष्य की आर्थिक घटनाओं के बारे में व्यक्तियों की मान्यताएँ

ख) वह धनराशि जो व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च करने को तैयार है सेवा

ग) अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप का स्तर

d) निवेश की वह राशि जो व्यवसाय करने को तैयार हैं

4. अनुकूली अपेक्षाएं क्या हैं?

क) यह विश्वास कि भविष्य अतीत के समान होगा

b) यह विश्वास कि आर्थिक एजेंटों के पास भविष्य के बारे में पूरी जानकारी होती है c) यह विश्वास कि आर्थिक एजेंट तर्कहीन होते हैं

d) यह विश्वास कि अर्थव्यवस्था सदैव संतुलन में रहती है

5. तर्कसंगत अपेक्षाएँ क्या हैं? क) यह विश्वास कि भविष्य अतीत के समान होगा

ख) यह विश्वास कि आर्थिक एजेंटों के पास भविष्य के बारे में पूरी जानकारी होती है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

c) यह विश्वास कि आर्थिक एजेंट तर्कहीन होते हैं d) यह विश्वास कि अर्थव्यवस्था हमेशा संतुलन में रहती है

6. अपेक्षा-संवर्धित फिलिप्स वक्र क्या है?

क) बेरोजगारी और के बीच संबंध का एक चित्रमय प्रतिनिधित्व
मुद्रा स्फ़ीति

ख) एक मॉडल जो बेरोजगारी की प्राकृतिक दर निर्धारित करने में अपेक्षाओं की भूमिका को समझाता है

ग) एक मॉडल जो दिखाता है कि मुद्रास्फीति के बारे में अपेक्षाएँ फिलिप्स को कैसे प्रभावित करती हैं
वक्र

d) एक मॉडल जो सरकारी नीतियों में परिवर्तन के प्रभाव को समझाता है
अर्थव्यवस्था

7. अनुकूली अपेक्षाओं के अंतर्गत फिलिप्स वक्र के अनुसार क्या होता है जब वास्तविक मुद्रास्फीति अपेक्षित मुद्रास्फीति से अधिक हो?

क) बेरोजगारी दर कम हो जाती है

ख) बेरोजगारी दर बढ़ जाती है

ग) बेरोजगारी दर वही रहती है

d) मुद्रास्फीति और बेरोजगारी दर के बीच कोई संबंध नहीं है 8. तर्कसंगत अपेक्षाओं के तहत फिलिप्स वक्र के अनुसार, क्या होता है जब सरकार बेरोजगारी को कम करने के लिए समग्र मांग में वृद्धि करती है?

a) मुद्रास्फीति की दर बढ़ जाती है और बेरोजगारी की दर घट जाती है
अल्पावधि

ख) मुद्रास्फीति की दर बढ़ जाती है और बेरोजगारी दर बढ़ जाती है
अल्पावधि

ग) मुद्रास्फीति की दर वही रहती है और बेरोजगारी दर घट जाती है
लघु अवधि

d) मुद्रास्फीति की दर वही रहती है और बेरोजगारी दर बढ़ जाती है
लघु अवधि

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

3.10 अपेक्षा नीति

अप्रभावीता बहस

फिलिप्स वक्र मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच विपरीत संबंध को दर्शाता है।
यह सुझाव देता है कि जैसे-जैसे बेरोजगारी घटेगी, मुद्रास्फीति बढ़ेगी और जैसे-जैसे बेरोजगारी बढ़ेगी, मुद्रास्फीति घटेगी। हालांकि, यह संबंध पिछले कुछ वर्षों में काफी बहस और जांच का विषय रहा है, खासकर अपेक्षाओं की भूमिका के संबंध में।

अपेक्षा नीति अप्रभावीता बहस से पता चलता है कि अगर मुद्रास्फीति की अपेक्षाओं को ध्यान में नहीं रखा जाता है तो विस्तारवादी मौद्रिक या राजकोषीय नीति के माध्यम से बेरोजगारी को कम करने के प्रयास अप्रभावी हो सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर व्यक्ति और व्यवसाय इन नीतियों के परिणामस्वरूप उच्च मुद्रास्फीति की आशंका करते हैं, तो वे ऐसे कदम उठा सकते हैं जो इच्छित प्रभावों को संतुलित करते हैं, जैसे कि मजदूरी और कीमतों में वृद्धि, जो बदले में बेरोजगारी में कमी के बिना मुद्रास्फीति में वृद्धि का कारण बन सकती है।

यह बहस 1970 के दशक में शुरू हुई थी जब मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच संबंध टूटता हुआ दिखाई दिया, जिससे स्टैगफ्लेशन का दौर शुरू हो गया - उच्च मुद्रास्फीति के साथ उच्च बेरोजगारी। इसका मुख्य कारण नीति निर्माताओं द्वारा अर्थव्यवस्था में अपेक्षाओं की भूमिका को ध्यान में न रखना था।

अपेक्षा नीति अप्रभावशीलता वाद-विवाद से पता चलता है कि नीति निर्माता बेरोजगारी और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए केवल विस्तारवादी या संकुचनकारी नीति का उपयोग नहीं कर सकते, क्योंकि भविष्य की मुद्रास्फीति के बारे में लोगों की अपेक्षाएं वर्तमान मुद्रास्फीति को प्रभावित करेंगी।
इसके बजाय, उन्हें उन संरचनात्मक कारकों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो बेरोजगारी की प्राकृतिक दर निर्धारित करते हैं।

अपेक्षाओं के दो मुख्य सिद्धांत हैं: अनुकूली अपेक्षाएँ और तर्कसंगत अपेक्षाएँ। अनुकूली अपेक्षाओं के तहत, व्यक्ति मुद्रास्फीति की अपनी अपेक्षाओं को पिछले अनुभवों पर आधारित करते हैं, जबकि तर्कसंगत अपेक्षाओं के तहत, व्यक्ति अपनी अपेक्षाओं को बनाने के लिए सभी उपलब्ध सूचनाओं का उपयोग करते हैं, जिसमें सरकारी नीतियों और आर्थिक स्थितियों के बारे में जानकारी शामिल है।

फिलिप्स वक्र के आलोचकों का तर्क है कि यह अनुकूली अपेक्षाओं की धारणा पर आधारित है और इसलिए अर्थव्यवस्था पर अपेक्षाओं में परिवर्तन के प्रभाव को ध्यान में नहीं रखता है। उनका तर्क है कि वक्र केवल अल्पावधि में ही लागू होता है और विस्तारवादी नीति के माध्यम से बेरोजगारी को कम करने के प्रयासों से मुद्रास्फीति में वृद्धि हो सकती है यदि अपेक्षाओं को ध्यान में नहीं रखा जाता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

फिलिप्स वक्र के समर्थकों का तर्क है कि तर्कसंगत अपेक्षाओं के तहत यह अभी भी लंबे समय तक कायम है। उनका सुझाव है कि नीति निर्माता अभी भी बेरोजगारी को कम करने के लिए विस्तारवादी नीति का उपयोग कर सकते हैं, जब तक कि वे अपने इरादों को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से संप्रेषित करते हैं और मुद्रास्फीति की अपेक्षाओं को प्रबंधित करने के लिए कदम उठाते हैं।

निष्कर्ष में, अपेक्षा नीति अप्रभावीता बहस आर्थिक नीति तैयार करने और उसे लागू करते समय अर्थव्यवस्था में अपेक्षाओं की भूमिका को ध्यान में रखने के महत्व पर प्रकाश डालती है। यह सुझाव देता है कि अगर मुद्रास्फीति की अपेक्षाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित नहीं किया जाता है, तो विस्तारवादी नीति के माध्यम से बेरोजगारी को कम करने के प्रयास अप्रभावी हो सकते हैं। अपेक्षाओं के विभिन्न सिद्धांतों, साथ ही फिलिप्स वक्र की सीमाओं को समझना नीति निर्माताओं के लिए यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि उनकी नीतियाँ उनके इच्छित लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रभावी हों।

3.11 सारांश

व्यक्तिगत स्तर पर आय का नुकसान और साथ ही वृहद स्तर पर संभावित उत्पादन दोनों ही बेरोज़गारी के परिणाम हैं। जब बेरोज़गारी पूरी अर्थव्यवस्था में व्याप्त हो जाती है, तो यह अक्सर संकट की स्थिति पैदा कर देती है। बेरोज़गारी से जुड़े सामाजिक कलंक और मनोवैज्ञानिक पीड़ा के कारण नीति निर्माताओं को अक्सर बेरोज़गारी की दर कम करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों का मानना था कि वास्तविक वेतन और मूल्य लचीलापन हमेशा अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की गारंटी देगा। हालांकि, कीनेसियन अर्थशास्त्री इस धारणा का खंडन करते हैं और मूल्य और वेतन कठोरता पर चर्चा करते हैं। कीनेसियन मॉडल के अनुसार, स्थिर मूल्य निर्धारण की स्थिति में बेरोजगारी की संभावना है।

फिलिप्स वक्र यह दर्शाता है कि बेरोजगारी और मुद्रास्फीति किस तरह विपरीत रूप से सहसंबद्ध हैं। यह बढ़ती मुद्रास्फीति की कीमत पर बेरोजगारी को कम करने की संभावना को दर्शाता है।

दुनिया भर की अधिकांश अर्थव्यवस्थाएं 1970 के दशक से मुद्रास्फीति का अनुभव कर रही हैं। यह स्थापित हो चुका है कि मुद्रास्फीति और मुद्रास्फीति के बीच कोई समझौता नहीं है।

बेरोज़गारी। ऐसी परिस्थिति का वर्णन करने के लिए हमने अपने अध्ययन में अपेक्षाएँ शामिल की हैं।
अपेक्षाओं के अनुकूली और तर्कसंगत दोनों मॉडल मान्य हैं।

अनुकूली अपेक्षाओं के अनुसार, फिलिप्स वक्र समय के साथ उतार-चढ़ाव करता रहता है, लेकिन निकट भविष्य में स्थिर रहता है। दीर्घ अवधि में फिलिप्स वक्र लंबवत होता है। इसलिए,

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच अल्पकालिक व्यापार-बंद हो सकता है, लेकिन कोई दीर्घकालिक व्यापार-बंद नहीं है। हमने उस तंत्र का वर्णन किया है जो फिलिप्स वक्र को बदलने का कारण बनता है। तर्कसंगत उम्मीदें मानती हैं कि बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच कोई व्यापार-बंद नहीं है। चूंकि लोग अपेक्षित परिवर्तनों की सटीक भविष्यवाणी कर सकते हैं, इसलिए बेरोजगारी को कम करने की कोई भी सरकारी रणनीति अप्रभावी हो जाती है।

3.12 शब्दावली

घर्षणात्मक बेरोजगारी: वह बेरोजगारी जो तब होती है जब लोग नौकरी के बीच में होते हैं या नई नौकरी की तलाश में होते हैं।

संरचनात्मक बेरोजगारी: वह बेरोजगारी जो तब उत्पन्न होती है जब श्रमिकों के कौशल और योग्यता तथा उपलब्ध रोजगार के अवसरों के बीच बेमेल होता है।

चक्रीय बेरोजगारी: वह बेरोजगारी जो अर्थव्यवस्था में मंदी या मंदी के कारण उत्पन्न होती है।

मौसमी बेरोज़गारी: वह बेरोज़गारी जो विभिन्न मौसमों के दौरान श्रम की मांग में परिवर्तन के कारण उत्पन्न होती है।

फिलिप्स वक्र: मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी के बीच व्युत्क्रम संबंध का एक ग्राफ़िकल प्रतिनिधित्व। जैसे-जैसे बेरोज़गारी घटती है, मुद्रास्फीति बढ़ती है, और इसके विपरीत।

बेरोजगारी की प्राकृतिक दर: बेरोजगारी की वह दर जो तब विद्यमान होती है जब अर्थव्यवस्था पूरी क्षमता पर संचालित हो रही हो तथा कोई चक्रीय बेरोजगारी न हो।
यह घर्षणात्मक और संरचनात्मक बेरोजगारी का योग है।

अर्थशास्त्र में अपेक्षाएँ: वे धारणाएँ जो व्यक्ति भविष्य की आर्थिक स्थितियों के बारे में बनाते हैं, जो उनके वर्तमान व्यवहार और निर्णय लेने को प्रभावित करती हैं।

अनुकूली अपेक्षाएँ: अर्थशास्त्र में अपेक्षाओं का एक सिद्धांत जो मानता है कि व्यक्ति अपनी अपेक्षाएँ पिछले अनुभवों पर आधारित करते हैं और समय के साथ उन्हें समायोजित करते हैं।

अनुकूली अपेक्षाओं के अंतर्गत फिलिप्स वक्र: फिलिप्स वक्र का एक संस्करण जो मानता है कि व्यक्ति अपनी अपेक्षाएँ पिछली मुद्रास्फीति दरों के आधार पर बनाते हैं। यह सुझाव देता है कि मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी के बीच व्यापार-बंद केवल अस्थायी है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

तर्कसंगत अपेक्षाओं के अंतर्गत फिलिप्स वक्र: फिलिप्स वक्र का एक संस्करण जो मानता है कि व्यक्तियों की भविष्य की मुद्रास्फीति दरों के बारे में तर्कसंगत अपेक्षाएं हैं।
यह सुझाव देता है कि फिलिप्स वक्र दीर्घकाल में ऊर्ध्वाधर है तथा मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच कोई दीर्घकाल में कोई समझौता नहीं है।

3.13 पाठ्य-अध्याय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

पाठ्य-अंतर्गत प्रश्न-I

1. (बी) श्रमिकों के कौशल और उपलब्ध नौकरियों के बीच बेमेल के कारण बेरोजगारी

2. (बी) एक व्यक्ति बेहतर नौकरी की तलाश में स्वेच्छा से अपनी नौकरी छोड़ देता है 3. (सी)

यह अस्थायी आर्थिक मंदी के कारण होता है

4. (बी) बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच नकारात्मक संबंध है

5. (क) बेरोजगारी की प्राकृतिक दर में वृद्धि

पाठ्य-अंतर्गत प्रश्न-II

1. ग) बेरोजगारी की वह दर जो तब होती है जब अर्थव्यवस्था अपनी अधिकतम गति से चल रही होती है।
उत्पादन का संभावित स्तर 2.

बी) तकनीकी प्रगति

3. क) भविष्य की आर्थिक घटनाओं के बारे में व्यक्तियों की मान्यताएँ

4. क) यह विश्वास कि भविष्य अतीत के समान होगा 5. ख) यह विश्वास कि

आर्थिक एजेंटों के पास भविष्य के बारे में पूर्ण जानकारी होती है

6. c) एक मॉडल जो दिखाता है कि मुद्रास्फीति के बारे में अपेक्षाएँ फिलिप्स वक्र को कैसे प्रभावित करती हैं

7. b) बेरोजगारी दर बढ़ जाती है 8. a) मुद्रास्फीति की

दर बढ़ जाती है और अल्पावधि में बेरोजगारी दर घट जाती है

दौड़ना

3.14 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. संरचनात्मक बेरोजगारी घर्षण बेरोजगारी से किस प्रकार भिन्न है?
2. ऐसी कौन सी नीतियाँ हैं जो चक्रीय बेरोजगारी को कम कर सकती हैं?

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

3. फिलिप्स वक्र नीति निर्माताओं को मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच संबंध को समझने में कैसे मदद करता है?

4. तर्कसंगत अपेक्षाओं के अंतर्गत फिलिप्स वक्र क्या है, और यह पारंपरिक फिलिप्स वक्र से किस प्रकार भिन्न है?

5. तर्कसंगत अपेक्षाएँ फर्मों और श्रमिकों के व्यवहार को कैसे प्रभावित करती हैं?

6. तर्कसंगत अपेक्षाओं के तहत फिलिप्स वक्र का उपयोग समष्टि आर्थिक नीति को निर्देशित करने के लिए कैसे किया जा सकता है?

7. अपने निबंध में बेरोजगारी के विभिन्न रूपों का संक्षेप में वर्णन करें।

8. बताएं कि फिलिप्स वक्र सरकार को किस प्रकार नीतिगत सुझाव प्रदान कर सकता है?
विकल्प.

3.15 संदर्भ

स्टार्क, टी. (2018). फिलिप्स कर्व: ए प्राइमर. पैल्ग्रेव मैकमिलन.

डोर्न, जे.ए. (एड.) (2005). फिलिप्स कर्व और श्रम बाजार. हूवर इंस्टीट्यूशन प्रेस.

बैरो, आर. (1997). मुद्रास्फीति के सिद्धांत. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस.

मैनकीव, एनजी (2016)। मैक्रोइकॉनॉमिक्स। वर्थ पब्लिशर्स

3.16 सुझाए गए पठन सामग्री

हेइज्ड्रा, बी.जे., और वैन डेर प्लोग, एफ. (2016)। आधुनिक मैक्रोइकॉनॉमिक्स की नींव। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

गॉर्डन, आर.जे. (2013). मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और मौद्रिक नीति। राष्ट्रीय आर्थिक अनुसंधान ब्यूरो।

ऑर्फ़ैनाइड्स, ए., और विलियम्स, जे.सी. (2018)। डायनेमिक फिलिप्स कर्व: अनुभवजन्य अनुसंधान से सबक। एम.आई.टी. प्रेस।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ 4

मुद्रास्फीति और फिलिप्स वक्र

डॉ. राजेश कुमार सहायक प्रोफेसर,
सरला बिरला विश्वविद्यालय, रांची

संरचना

4.1 सीखने के उद्देश्य 4.2 परिचय

4.3 मुद्रास्फीति का अर्थ 4.4 मुद्रास्फीति के
प्रकार 4.5 फिलिप्स वक्र 4.6 फिलिप्स
वक्र की समीक्षा 4.7
मुद्रास्फीतिजनित मंदी 4.8 मुद्रास्फीतिजनित मंदी के लिए
'शॉक' थेरेपी की
आवश्यकता 4.9 सारांश 4.10 शब्दावली 4.11 पाठ में प्रश्नों के उत्तर 4.12
आत्म-मूल्यांकन प्रश्न
4.13 संदर्भ 4.14 सुझाए
गए पठन

4.1 सीखने के उद्देश्य

मुद्रास्फीति का अर्थ समझना और मुद्रास्फीति के प्रकार जानना

मुद्रास्फीति को फिलिप्स वक्र से जोड़ना,

मुद्रास्फीतिजनित मंदी की परिघटना को समझना।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

4.2 परिचय

कीमतों में लगातार वृद्धि या पैसे की क्रय शक्ति में लगातार गिरावट दोनों को मुद्रास्फीति के संकेत माना जाता है। अत्यधिक समग्र मांग, क्षेत्रीय मांग और आपूर्ति असंतुलन, बढ़ती आयात लागत जैसे लागत चर, और मुद्रा विस्तार की दर सभी मुद्रास्फीति में योगदान करते हैं। हम मुद्रास्फीति के प्रकार को निर्धारित करने के लिए मूल्य निर्धारण पैटर्न, मुद्रा आपूर्ति वृद्धि की दर और मांग में वृद्धि की गति की जांच करते हैं।

जीडीपी डिफ्लेटर, थोक मूल्य सूचकांक और उपभोक्ता मूल्य सूचकांक जैसे संकेतकों का उपयोग अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति के स्तर की गणना करने के लिए किया जाता है। वस्तुओं की एक विशिष्ट टोकरी की लागत थोक मूल्य सूचकांक द्वारा मापी जाती है। कच्चे माल और अर्ध-तैयार उत्पाद दोनों शामिल हैं। वस्तुओं और सेवाओं की एक निर्धारित टोकरी खरीदने की लागत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक द्वारा मापी जाती है। किसी विशेष वर्ष के नाममात्र जीडीपी से वास्तविक जीडीपी अनुपात को जीडीपी डिफ्लेटर के रूप में जाना जाता है।

मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तन, मुद्रा आपूर्ति के लिए सरकारी वित्तपोषण, तथा मुद्रा वेतन का प्रभाव, सभी का मुद्रास्फीति के उपायों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। ब्याज दरों, ऋण मांग, तथा बचत के वैश्वीकरण पर इसके प्रभावों के माध्यम से, मुद्रास्फीति का निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है। आप इस इकाई में मुद्रास्फीति के मूल सिद्धांतों तथा इसके सिद्धांतों के बारे में जानेंगे।

4.3 मुद्रास्फीति का अर्थ

अधिकांश लोग मुद्रास्फीति को कीमतों के स्तर में एक महत्वपूर्ण, त्वरित और व्यापक वृद्धि और उसके बाद पैसे के मूल्य का दीर्घकालिक अवमूल्यन के रूप में परिभाषित करते हैं। उदाहरण के लिए, हैरी जॉनसन मुद्रास्फीति को "कीमत में निरंतर वृद्धि" के रूप में वर्णित करते हैं। क्राउथर की तरह, जो मुद्रास्फीति को "ऐसी स्थिति के रूप में वर्णित करते हैं जिसमें पैसे की क्रय शक्ति कम हो रही है, यानी कीमतें बढ़ रही हैं," मूल्य वृद्धि मुद्रास्फीति का एक सामान्य पहलू है, और मूल्य सूचकांकों का उपयोग उनकी गंभीरता को मापने के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार, एडवर्ड शापिरो के अनुसार, "हम मुद्रास्फीति को केवल कीमतों के सामान्य स्तर में एक निरंतर और सराहनीय वृद्धि के रूप में परिभाषित करेंगे" क्योंकि वह अपनी शब्दावली में अस्पष्टताओं से अवगत हैं।

परिणामस्वरूप, मुद्रास्फीति की सांख्यिकीय परिभाषा एक समयावधि, आमतौर पर एक वर्ष या एक माह, में मूल्य सूचकांक में प्रतिशत वृद्धि की दर है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

जबकि मुद्रास्फीति का मतलब कीमतों के समग्र स्तर में वृद्धि से है, मुद्रास्फीति दर का मतलब है कि समग्र मूल्य स्तर कितनी तेज़ी से बदल रहा है। इसकी गणना करने के लिए निम्नलिखित मूल सूत्र का उपयोग किया जाता है:

$$\text{मुद्रास्फीति की दर} \quad \frac{\text{पी}_{\text{ह}} - \text{पी}_{\text{ह}-1}}{\text{पी}_{\text{ह}-1}} \quad 100$$

1991 के मध्य से, जब सरकार ने व्यापक आर्थिक स्थिरीकरण नीतियों का एक सेट लागू किया, भारत ने मुद्रास्फीति की कुछ अवधि का अनुभव किया है। उस समय, मुद्रास्फीति की उच्च दर, जो दोहरे अंकों के स्तर पर पहुंच गई थी और लगभग 17 प्रतिशत थी, घटकर लगभग 7 प्रतिशत हो गई थी।

4.4 मुद्रास्फीति के प्रकार

खुली मुद्रास्फीति: मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में, आपूर्ति-मांग असंतुलन के परिणामस्वरूप कीमतें अनियंत्रित रूप से बढ़ती हैं।

दबा हुआ मुद्रास्फीति: एक प्रबंधित अर्थव्यवस्था में, उद्धृत या प्रबंधित कीमतों को कीमतों पर ऊपर की ओर दबाव से प्रभावित होने की अनुमति नहीं होती है। हालाँकि, मुद्रास्फीति भी अलग-अलग तरीकों से प्रकट होती है।

उदाहरण: सरकार द्वारा वस्तुओं का राशनिंग करने से राशन की दुकानों के बाहर लंबी लाइनें लग सकती हैं। ऐसी वस्तुओं को सूचीबद्ध कीमतों से कहीं अधिक कीमत पर काला बाजार में बेचे जाने की संभावना है। भारत में दबी हुई मुद्रास्फीति पीडीएस के माध्यम से बेची जाने वाली आवश्यक वस्तुओं की कीमत में दिखाई देती है। मुक्त बाजार की कीमतें राशन की कीमतों से अधिक हैं, जिन्हें जानबूझकर एक विशिष्ट स्तर पर रखा जाता है।

धीरे-धीरे बढ़ती मुद्रास्फीति, तेजी से बढ़ती मुद्रास्फीति और अत्यधिक मुद्रास्फीति

मुद्रास्फीति की गंभीरता के आधार पर, जो कीमतों में वृद्धि की दर से निर्धारित होती है, मुद्रास्फीति की इन तीन श्रेणियों को मान्यता दी जाती है।

कीमतें धीरे-धीरे बढ़ती हैं, सालाना 2% से 3% तक। इसे रेंगती हुई मुद्रास्फीति के रूप में जाना जाता है।
इसे आम तौर पर एक विस्तारित अर्थव्यवस्था के लिए फायदेमंद माना जाता है। कीमतों में मामूली वृद्धि व्यवसायों को अधिक सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करती है क्योंकि इससे उनके लाभ मार्जिन में वृद्धि होती है। इससे उत्पादन में तेजी से विस्तार होता है। सापेक्ष मूल्य निर्धारण और मूल्य अपेक्षाएँ दोनों ही रेंगती हुई मुद्रास्फीति से बहुत अधिक विकृत नहीं होती हैं। एकल-अंकीय मुद्रास्फीति को भी हल्की मुद्रास्फीति माना जाता है, जिसे अधिकांश देशों ने सहन करना सीख लिया है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

अवधि के दौरान कीमतें सालाना दो या तीन अंकों की दर से बढ़ती हैं (20-100%)
मुद्रास्फीति की बढ़ती दर। यह अक्सर क्रय शक्ति के वितरण में अस्थिर बदलाव की ओर ले जाता है
आय अर्जित करने वाले विभिन्न समूहों के बीच शक्ति का हनन होता है तथा सापेक्षिक कीमतों में असंतुलन पैदा होता है।
लोगों में अपने निवेश के पैसे विदेश भेजने की प्रवृत्ति और विदेशी मुद्रा विनिमय की घटती मांग के कारण
घरेलू निवेश में कमी के कारण, देश से अक्सर पूंजी पलायन होता है।

एक चरम प्रकार की मुद्रास्फीति जिसे हाइपरइन्फ्लेशन या बेलगाम मुद्रास्फीति के रूप में जाना जाता है, घटित होती है
जब कीमतें सालाना एक हजार, दस लाख या एक अरब प्रतिशत तक बढ़ जाती हैं।
अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुंचाता है। मुद्रा आपूर्ति और कीमतें दोनों तेजी से बढ़ रही हैं।

1920 और 1923 के बीच जर्मनी में अत्यधिक मुद्रास्फीति देखी गई।
किसी युद्ध, राजनीतिक विद्रोह या अन्य भयानक आपदा के बाद।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

बहु विकल्पीय प्रश्न:

1. मुद्रास्फीति को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है ..... कीमतों में.

(क) निरंतर गिरावट (बी) तीव्र गिरावट

(ग) निरंतर वृद्धि (घ) अस्थिर वृद्धि

2. वह स्थिति जिसमें मुद्रास्फीति की दर में गिरावट होती है, कहलाती है _____

(क) बढ़ती मुद्रास्फीति (बी) तेजी से बढ़ती मुद्रास्फीति

(ग) कोई मुद्रास्फीति नहीं (घ) अवमुद्रास्फीति

3. ..... मुद्रास्फीति तब होती है, जब आपूर्ति के कारण कीमतें स्वतंत्र रूप से बढ़ती हैं-
मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में मांग असंतुलन।

(क) खुला (ग) (बी) दबा हुआ

रेंगता हुआ (घ) सरपट दौड़ना

4. ..... को आमतौर पर बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा माना जाता है।

(क) खुला (ग) (बी) रेंगना

सरपट दौड़ना (घ) हाइपर

5. जिम्बाब्वे में मुद्रास्फीति की स्थिति .....

(क) डिस्इन्फ्लेशन (ग) (बी) रेंगना

गैलोपिंग (घ) हाइपरइन्फ्लेशन

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

4.5 फिलिप्स वक्र

मूल्य संरचना के मुख्य तत्वों में से एक वेतन है। वेतन वृद्धि की दर (मुद्रास्फीति की दर) और अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी की दर के बीच संबंध हाल ही में अर्थशास्त्रियों की जांच के दायरे में आया है जो मुद्रास्फीति को समझने की कोशिश कर रहे हैं। "फिलिप्स वक्र" - जिसका नाम ब्रिटिश अर्थशास्त्री एडब्ल्यू फिलिप्स के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने मुद्रास्फीति को अनुभवजन्य रूप से समझाने का प्रयास किया था - इस शोध का आधार है।

इंग्लैंड में, 1862 और 1957 के बीच, फिलिप्स ने मजदूरी वृद्धि की दर और बेरोजगारी की दर के बीच विपरीत संबंध की खोज की।

नीचे दिया गया चित्र 4.1 फिलिप्स वक्र (पीसी) प्रदर्शित करता है, जो वेतन में प्रतिशत परिवर्तन और बेरोजगारी में प्रतिशत परिवर्तन के बीच संबंध को दर्शाता है।
यह वक्र ब्रिटिश अर्थव्यवस्था में आय में परिवर्तन की दर और बेरोजगारी की दर के आंकड़ों से प्राप्त किया गया है।

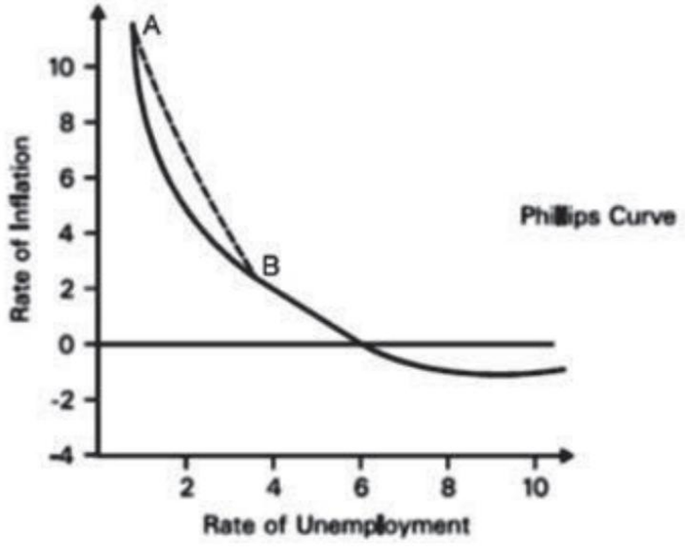

चित्र 4.1

बेरोजगारी और मुद्रास्फीति की दरों के बीच विपरीत संबंध पीसी के नकारात्मक ढलान द्वारा दर्शाया गया है। वक्र यह भी सुझाव देता है कि गैर-मुद्रास्फीति मूल्य स्थिरता को बनाए रखने के लिए, जनसंख्या का अपेक्षाकृत उच्च प्रतिशत होना चाहिए

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

बेरोज़गार। इसलिए, बेरोज़गारी दर और मुद्रास्फीति दर के बीच एक समझौता है। पीसी का नीतिगत निहितार्थ यह है कि अगर समुदाय उच्च बेरोज़गारी दर को झेलने के लिए तैयार है, तो वेतन वृद्धि मुद्रास्फीति को रोका जा सकता है, या इसके विपरीत।

उदाहरण: बिंदु A में दर्शाई गई कम बेरोज़गारी दर समाज को अत्यधिक मुद्रास्फीति के रूप में नुकसान पहुँचाती है। बिंदु B में जो दर्शाया गया है, उसके विपरीत, मुद्रास्फीति की कम दर के लिए बेरोज़गारी की उच्च दर की आवश्यकता होती है।

यह स्पष्ट है कि कम बेरोज़गारी दरों पर पीसी में तेज़ी आती है। इस तथ्य के कारण कि वेतन वस्तुओं और सेवाओं की लागत का एक बड़ा हिस्सा होता है, मजबूत वेतन वृद्धि अक्सर उच्च मुद्रास्फीति दरों के साथ मेल खाती है। नतीजतन, पीसी को आम तौर पर मूल्य मुद्रास्फीति को बेरोज़गारी से जोड़ने वाला माना जाता है।

सावधानी: उत्पत्ति के दृष्टिकोण से, पीसी के उत्तल आकार का एक दिलचस्प महत्व है।
तथ्य यह है कि यह उच्च बेरोजगारी दरों पर स्थिर है और निम्न दरों पर तीव्र है, यह दर्शाता है कि बेरोजगारी को 10% से घटाकर 9% करने से मजदूरी में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं होगी, जबकि बेरोजगारी को 2% से घटाकर 1% करने से वेतन में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

1960 के दशक से ही मैक्रोइकॉनोमिक नीति आकलन ने पीसी द्वारा उजागर की गई मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच व्यापार-बंद पर बहुत ध्यान दिया है। यह 1930-1950 के दशक के कीनेसियन मुद्रास्फीति अंतर विश्लेषण के अनुरूप प्रतीत होता है। आय और बेरोजगारी के बीच विपरीत संबंध के दो कारण हैं।

सबसे पहले, बेरोज़गारी दरों और समग्र आर्थिक गतिविधि में परिवर्तन का प्रबंधन और यूनियनों की सापेक्ष बातचीत करने की शक्ति पर प्रभाव पड़ने की संभावना है। ट्रेड यूनियन आम तौर पर मज़दूरों की कमी और कम बेरोज़गारी दरों के समय मज़दूरी में उल्लेखनीय वृद्धि के लिए दबाव डालते हैं। दूसरी ओर, महत्वपूर्ण बेरोज़गारी के समय मज़दूरी के दावों को आम तौर पर प्रबंधन पर शायद ही कभी दबाया जाता है।

श्रम की सामान्यीकृत अतिरिक्त मांग मौद्रिक वेतन दर और बेरोजगारी दर के बीच व्युत्क्रम संबंध को स्पष्ट करने वाला दूसरा कारण है। संगठित संघ गतिविधि के परिणामस्वरूप वेतन वृद्धि होना आवश्यक नहीं है। इस तथ्य के बावजूद कि औद्योगिक देशों में भी श्रम शक्ति का केवल एक छोटा हिस्सा संघीकृत है, श्रम बाजार के संघीकृत और गैर-संघीकृत दोनों हिस्सों में वेतन बढ़ सकता है, जो कि ज्यादातर श्रम की अधिक आपूर्ति के कारण होता है। विशिष्ट श्रम बाजारों में अधिक आपूर्ति के कारण, मौद्रिक मजदूरी दरों और बेरोजगारी दरों के बीच फिलिप्स-प्रकार का संबंध भी हो सकता है। यदि श्रम की भौगोलिक और व्यावसायिक गतिशीलता में बाधाएँ हैं,

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

विशिष्ट उद्योगों में कार्यबल की कमी से बेरोजगारी के दौर में भी मजदूरी दरें बढ़ सकती हैं।

4.6 फिलिप्स वक्र की समीक्षा

पीसी को काफी आलोचना मिली है। हाल ही में अनुभवजन्य निष्कर्षों के साथ-साथ फिलिप्स के डेटा पर उल्लेखनीय परिणामों से नकारात्मक मजदूरी दर-बेरोजगारी दर संबंध की वैधता पर सवाल उठाया गया है।

लिप्सी, जिन्होंने 1862-1957 के लिए फिलिप के आंकड़ों पर पुनः काम किया था, के अनुसार, मौद्रिक वेतन में उतार-चढ़ाव का 4/5 से अधिक हिस्सा बेरोजगारी दर के कारण था।
हालांकि, उन्होंने इस तथ्य पर भी ध्यान दिया कि 1913 के बाद, वेतन दरों और बेरोजगारी दरों के बीच काफी कमजोर संबंध था। लिप्सी ने पाया कि युद्ध के बीच और युद्ध के बाद के दशकों के दौरान, वेतन में उतार-चढ़ाव और जीवन यापन सूचकांक की लागत में बदलाव के बीच एक मजबूत संबंध था।

कुछ औद्योगिक पूंजीवादी देशों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में मुद्रास्फीति की उच्च दर के साथ-साथ बेरोजगारी की उच्च दर भी मौजूद है।

उदाहरण: जब 1960 के दशक में अमेरिकी अर्थव्यवस्था मुद्रास्फीति की बहुत उच्च दर पर पहुंच गई और निक्सन प्रशासन ने इसे रोकने के प्रयास में कठोर मौद्रिक और राजकोषीय विनियमन कड़े कर दिए, तो बेरोजगारी में तेजी से वृद्धि हुई लेकिन मुद्रास्फीति में कोई कमी नहीं आई। स्टैगफ्लेशन के रूप में जानी जाने वाली घटना, जिसमें अनियंत्रित मुद्रास्फीति आर्थिक गतिविधि में मंदी या ठहराव के साथ-साथ मौजूद रहती है, पीसी के लिए एक चुनौती पेश करती है।

मिल्टन फ्रीडमैन, जेम्स टोबिन, रॉबर्ट सोलो, पॉल सैमुएलसन और जेम्स टोबिन जैसे कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार, बेरोज़गारी की एक प्राकृतिक दर होती है। संक्षेप में, यह उत्पादन स्तर के अनुरूप बेरोज़गारी की दर है जिस पर कुल आपूर्ति ऊर्ध्वाधर हो जाती है, या पूर्ण रोजगार के अनुरूप उत्पादन का स्तर। जब बेरोज़गारी इतनी अधिक होती है, तो दीर्घकालिक पीसी एक ऊर्ध्वाधर रेखा जैसा दिखता है। सरकार मुद्रास्फीति चक्र शुरू किए बिना इस प्राकृतिक दर से नीचे बेरोज़गारी को कम करने में असमर्थ है। नीचे चित्र 4.2 में बेरोज़गारी दर OA बेरोज़गारी की दीर्घकालिक प्राकृतिक दर को दर्शाती है। दीर्घकालिक पीसी-एलपीसी के रूप के अनुसार, मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी के बीच कोई दीर्घकालिक व्यापार-बंद नहीं है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

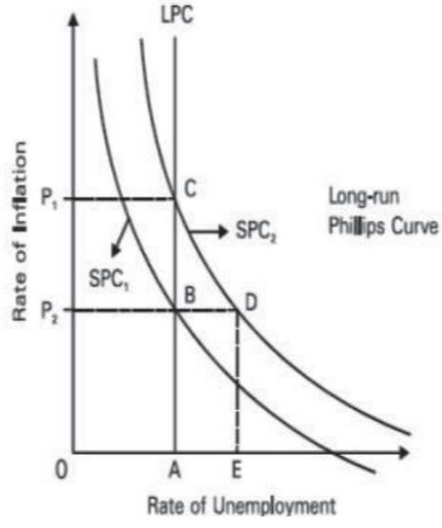

चित्र 4.2

इसलिए, कई अर्थशास्त्रियों के अनुसार, मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच नकारात्मक संबंध केवल अल्पावधि में ही सही है। 1960 और 1970 के दशक के अमेरिकी अर्थव्यवस्था के आंकड़ों से यह भी पता चला है कि, यदि उपयुक्त हो, तो पीसी समय के साथ दाईं ओर बढ़ने की प्रवृत्ति रखता है। नीति निर्माताओं को उतार-चढ़ाव वाले पीसी से बाधा होती है क्योंकि वे बेरोजगारी के एक निश्चित स्तर को बनाए रखने के लिए आवश्यक मुद्रास्फीति दर के बारे में आश्वस्त नहीं हो सकते हैं। एसपीसी1 और एसपीसी2 अल्पावधि पीसी हैं, और एलपीसी उपरोक्त आंकड़े में दीर्घावधि वक्र है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यदि अल्पावधि वक्र एसपीसी1 से एसपीसी 2 में बदल जाता है, तो मुद्रास्फीति दर बेरोजगारी, या ओए के समान दर से पी1 से पी2 तक बढ़ जाएगी, या यदि पी1 दर मुद्रास्फीति बनाए रखी जाती है, तो डीई दर ओए की आवश्यकता होगी।

श्रम शक्ति का बदलता स्वरूप पीसी में बदलाव के कारणों में से एक है। हाल के दशकों में श्रम शक्ति में बदलाव आया है और इसमें युवा और महिलाएं अधिक शामिल हो गई हैं। अधिकांश आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में युवा और महिला कर्मचारियों की बेरोजगारी दर अक्सर समग्र श्रम शक्ति की तुलना में बहुत अधिक होती है।

कुल मांग का स्तर जो पहले 4% मुद्रास्फीति और 10% बेरोजगारी पैदा करता था, अब 4% मुद्रास्फीति और 12% बेरोजगारी पैदा कर सकता है क्योंकि ये उच्च बेरोजगारी समूह श्रम बल में तेजी से प्रचलित हो रहे हैं। मुद्रास्फीति संबंधी अपेक्षाओं में समायोजन के परिणामस्वरूप पीसी दाईं ओर भी जा सकता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

यदि दोनों पक्षों को भविष्य में कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि की आशंका है, तो श्रमिकों की वेतन मांग और प्रबंधन की मूल्य नीतियाँ इन अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करेंगी। उस स्थिति में, पीसी कम पसंदीदा स्थिति में जा सकता है।

पीसी का परीक्षण करने का प्रयास करने वाले सबसे वर्तमान शोध का प्राथमिक निष्कर्ष यह है कि मुद्रास्फीति-बेरोज़गारी संबंध को मूल पीसी की तरह अच्छी तरह से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। वर्तमान आर्थिक प्रणाली पहले की तुलना में अधिक जटिल और प्रशासन करने में कठिन है, यही कारण है कि यह मामला है। पीसी का आसान और सीधा सूत्र अब सटीक नहीं है। हालाँकि, पीसी उस पहेली की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो नीति निर्माताओं के सामने मुद्रास्फीति विरोधी रणनीति का अनुसरण करते समय होती है जो उत्पादन और रोजगार में गिरावट का कारण भी बन सकती है। वास्तविक आय स्तरों पर पूर्ण रोजगार केवल लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति के दौरान बढ़ते मूल्य स्तरों पर ही बनाए रखा जा सकता है। इसलिए, मूल्य स्थिरता को बनाए रखना अक्सर वास्तविक उत्पादन की कीमत पर आता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था कॉशन पीसी के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक नहीं है। यहाँ, तीव्र जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख परिणाम दीर्घकालिक बेरोजगारी है। दूसरी पंचवर्षीय योजना अवधि के बाद से मुद्रास्फीति की मध्यम से उच्च दरों के बावजूद, बेरोजगारी के स्तर को कम करने में बहुत कम प्रगति हुई है। परिणामस्वरूप, मुद्रास्फीति की दर और बेरोजगारी की दर दोनों उच्च हैं।

इसलिए लंबी अवधि का फिलिप्स वक्र प्राकृतिक बेरोजगारी दर पर लंबवत है। मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच एक अल्पकालिक व्यापार-बंद है क्योंकि मुद्रास्फीति की उम्मीदें वास्तविक मुद्रास्फीति से पीछे हैं। हालाँकि, व्यापार-बंद एक मृगतृष्णा है, और जैसे ही उम्मीदें वास्तविक मुद्रास्फीति के बराबर हो जाती हैं, अर्थव्यवस्था बेरोजगारी की सामान्य दर पर वापस आ जाएगी (चित्र 4.3)।

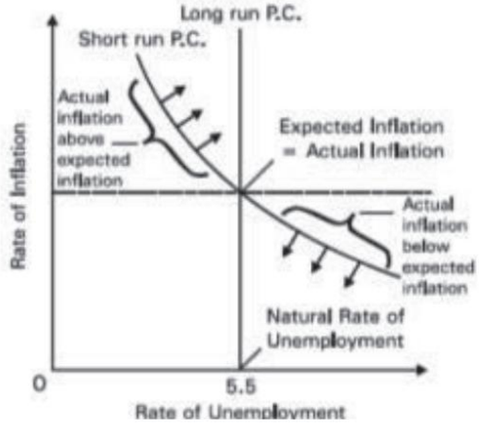

चित्र 4.3

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

4.7 मुद्रास्फीतिजनित मंदी

मुद्रास्फीति की दर उच्च और त्वरित मुद्रास्फीति तथा उच्च रोजगार का मिश्रण है। जब सरकार बेरोजगारी को प्राकृतिक दर से नीचे लाने के लिए विस्तारवादी मौद्रिक या राजकोषीय नीति का उपयोग करती है, तो मुद्रास्फीति की अपेक्षाएं वास्तविक मुद्रास्फीति से अधिक होती हैं, और परिणामस्वरूप अल्पकालिक फिलिप्स वक्र ऊपर की ओर झुक जाता है। उस बिंदु तक जहां सरकार असंभव को करने की कोशिश करना छोड़ देती है, मुद्रास्फीति बढ़ती रहती है।

चित्र 4.3 दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था 5.5% बेरोजगारी के साथ संतुलन पर शुरू होती है, जो कि, मान लें, बेरोजगारी की प्राकृतिक दर है, और शून्य वास्तविक मुद्रास्फीति, शून्य अपेक्षित मुद्रास्फीति और अन्य चर हैं। अब सरकार कदम उठाती है और अल्पकालिक वक्र पर बिंदु A पर विस्तारवादी मौद्रिक या राजकोषीय नीति के साथ अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है, जिससे बेरोजगारी 4% तक बढ़ जाती है और मुद्रास्फीति 3% तक पहुँच जाती है। मुद्रास्फीति की उम्मीदें बढ़ गईं क्योंकि 3% की वास्तविक मुद्रास्फीति दर 0% की अनुमानित दर से अधिक हो गई। उम्मीदों में इस वृद्धि के परिणामस्वरूप अल्पकालिक वक्र में PC1 से PC2 तक परिवर्तन होता है ।

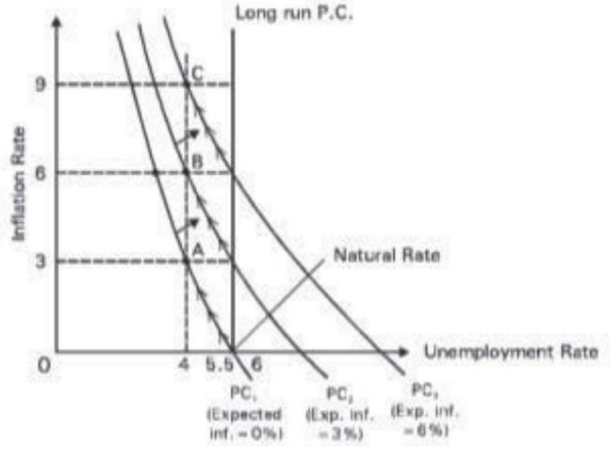

चित्र 4.4

मुद्रास्फीति की उम्मीदें पूरी तरह से बढ़ने के बाद बी पर 4% बेरोजगारी हासिल करने में सक्षम होने के बजाय, मान लें कि सरकार 6% मुद्रास्फीति को स्वीकार करने के लिए तैयार है और 4% बेरोजगारी को बनाए रखने की कोशिश करने के लिए विस्तारवादी मौद्रिक या राजकोषीय नीति का उपयोग करती है, जो प्राकृतिक दर से 1.5% कम है। शॉर्ट रन कर्व पीसी3 तक जाएगा और

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

मुद्रास्फीति की उम्मीदें 6% तक बढ़ जाएंगी। प्रशासन ने पाया है कि 4% बेरोजगारी के साथ अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए और भी अधिक विस्तारवादी दृष्टिकोण और 9% मुद्रास्फीति दर (सी) की आवश्यकता होगी। अल्पावधि वक्र ऊपर की ओर बढ़ेगा, मुद्रास्फीति में तेजी आएगी, और यहां तक कि 9% मुद्रास्फीति दर भी केवल एक क्षणिक घटना है जब तक कि बेरोजगारी दर प्राकृतिक दर से कम है।

4.8 स्टैगफ्लेशन के लिए 'शॉक' थेरेपी की आवश्यकता होती है

इन दिनों, इस बात की लगातार चिंता बनी हुई है कि भारत में मुद्रास्फीति की दर में गिरावट आ सकती है, यह एक आर्थिक बीमारी है जिसकी पहचान सबसे पहले 1970 के दशक में पश्चिमी देशों में हुई थी। मुद्रास्फीति की दर की उत्पत्ति और विशेषताओं पर अभी भी बहस चल रही है। मुद्रास्फीति की प्रकृति को समझने का सबसे अच्छा तरीका आपूर्ति-मांग संतुलन का उपयोग करना है जिसे अक्सर दर्शाया जाता है, जैसा कि चित्र 4.5 में देखा जा सकता है।

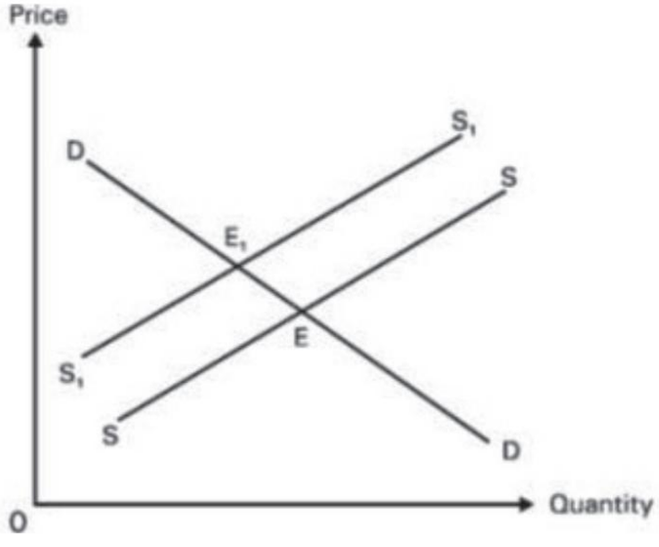

चित्र 4.5

संतुलन बिंदु, या बिंदु E, वह बिंदु है जिस पर उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किये गए उत्पादों की मात्रा और उपभोक्ताओं द्वारा मांगी गई वस्तुओं की मात्रा एक दूसरे के बिल्कुल बराबर होती है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

मान लीजिए कि किसी भी कारण से बाजार को ऐसा झटका लगता है जिससे उत्पादन की लागत में तेजी से वृद्धि होती है। (उचित अपेक्षा सिद्धांत कहता है कि केवल एक झटका - जितना अप्रत्याशित, उतना बेहतर - स्थायी परिवर्तन ला सकता है।)

उत्पादन लागत में वृद्धि के साथ आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर S1 की ओर स्थानांतरित हो जाएगा , और परिणामस्वरूप, संतुलन बिंदु E से E1 तक चला जाएगा ।

इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप, कीमतें बढ़ जाती हैं जबकि क्रय-विक्रय की मात्रा घट जाती है।

मूल्य वृद्धि मुद्रास्फीति को दर्शाती है, जबकि मात्रा में गिरावट मंदी को दर्शाती है। परिणामस्वरूप, हम एक साथ मुद्रास्फीति और मंदी दोनों का अनुभव करते हैं। स्टैगफ्लेशन बिल्कुल वैसा ही है जैसा कि यह सुनने में लगता है।

दूसरे शब्दों में, जब भी कोई अप्रत्याशित झटका आपूर्ति पक्ष की कीमतों को बढ़ाता है, तो मुद्रास्फीति की दर में वृद्धि होती है। ओपेक द्वारा लगाए गए तेल की कीमतों में अचानक वृद्धि 1970 के दशक की मुद्रास्फीति में मुख्य योगदानकर्ता थी।

उदाहरण: भारत में एक नहीं, बल्कि तीन झटके एक साथ आए हैं: पहला सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि, दूसरा पोखरण परीक्षण के खिलाफ़ विरोध और तीसरा पूर्वी एशियाई वित्तीय संकट। इसलिए, मुद्रास्फीति का खतरा मौजूद है। हम उस संक्रमण को रोकने के लिए क्या कर सकते हैं?

कीनेसियनवाद एक उपाय है। दुर्भाग्य से, उनका दृष्टिकोण केवल तभी काम करता है जब बजट की कमी पूरी तरह से आर्थिक निवेश की ओर निर्देशित होती है। भारत में, राजनेता और नौकरशाह तुरंत ही कोई भी पैसा खर्च कर देते हैं - चाहे वह कितना भी निर्मित क्यों न हो - अनावश्यक खरीद पर।

हमने पिछले कई वर्षों में काफी मुद्रास्फीति का अनुभव किया है, लेकिन विकास बहुत कम हुआ है।

उदाहरण: नियोजन शुरू होने के बाद से वर्ग-डी कर्मचारियों का वेतन 100 गुना बढ़ गया है, लेकिन उनकी वास्तविक आय में केवल आधी राशि ही बढ़ी है। इसका मतलब है कि बजट घाटे द्वारा वित्तपोषित सभी वेतन वृद्धि का 98% मुद्रास्फीति द्वारा खा लिया गया है, जिसमें से केवल 2% वास्तव में पर्याप्त लाभ प्रदान करता है। आइए इसका सामना करें: हमारी राजनीतिक प्रणाली बजट घाटे के प्रभावी और बुद्धिमान उपयोग को रोकती है। तो कीन्स हमारे लिए नहीं है!

आधुनिक रुझान निजीकरण को बढ़ावा देते हैं। सैद्धांतिक रूप से, यह समझ में आता है और आकर्षक भी है। हालाँकि, इसमें एक पेंच है। निजीकरण के साथ-साथ सरकारी रोज़गार में भी आनुपातिक कमी होनी चाहिए। दुर्भाग्य से, यह हमारे देश में संभव नहीं है।

स्व निर्देशात्मक
78 सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

उदारीकरण के परिणामस्वरूप डीजीटीडी और इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग द्वारा किए जाने वाले अधिकांश कार्य समाप्त कर दिए गए हैं। हालांकि, इसके परिणामस्वरूप रोजगार पाने वाले लोगों की संख्या में कोई कमी नहीं आई है। हकीकत में, चीजें पहले जैसी ही हैं।

ज़्यादा बुरा।

सरकार अधिशेष श्रमिकों की संख्या कम करने के बजाय बुनियादी ढांचे, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बैक-अप आवश्यकताओं के लिए व्यय पर आवश्यक बचत करती है। इससे हर जगह अड़चनें पैदा होती हैं।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

रिक्त स्थान भरें:

6. फिलिप्स वक्र का ऋणात्मक ढलान बताता है कि मुद्रास्फीति की दर और बेरोजगारी की दर ..... संबंधित हैं।

7. बेरोजगारी की कम दरों पर फिलिप्स वक्र ..... हो जाता है। ट्रेड यूनियन जब बेरोजगारी की दरें उच्च मौद्रिक वेतन की मांग ....., करने लगती हैं।

8. उच्च एवं त्वरित मुद्रास्फीति और उच्च रोजगार के संयोजन को ..... के रूप में जाना जाता है।

9. फिलिप्स वक्र को आमतौर पर मूल्य मुद्रास्फीति से संबंधित माना जाता है .....

10. फिलिप्स वक्र का ढलान ..... है।

4.9 सारांश

मुद्रास्फीति आम तौर पर ब्याज दरों, विकास दरों, निवेश और ऋण लेने जैसे व्यापक आर्थिक चरों पर अपना प्रभाव डालकर उद्योग को प्रभावित करती है, इसके अलावा, निश्चित रूप से, इनपुट की उपलब्धता और लागत पर इसका प्रभाव पड़ता है। इंग्लैंड में, 1862 और 1957 के बीच, फिलिप्स ने मजदूरी वृद्धि की दर और बेरोजगारी की दर के बीच एक व्युत्क्रम संबंध की खोज की। बेरोजगारी और मुद्रास्फीति की दरों के बीच व्युत्क्रम संबंध पीसी के नकारात्मक ढलान द्वारा दर्शाया गया है। वक्र

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

यह भी सुझाव दिया गया है कि गैर-मुद्रास्फीतिकारी मूल्य स्थिरता को बनाए रखने के लिए, जनसंख्या का अपेक्षाकृत उच्च प्रतिशत बेरोजगार होना चाहिए।

मुद्रास्फीतिजनित मंदी उच्च एवं तीव्र गति से बढ़ती मुद्रास्फीति और बेरोजगारी का मिश्रण है।
जब सरकार बेरोजगारी को प्राकृतिक दर से नीचे लाने के लिए विस्तारवादी मौद्रिक या राजकोषीय नीति का उपयोग करती है, तो मुद्रास्फीति की अपेक्षाएँ वास्तविक मुद्रास्फीति से अधिक होती हैं, और परिणामस्वरूप अल्पावधि फिलिप्स वक्र ऊपर की ओर झुक जाता है। जब तक सरकार असंभव को करने की कोशिश करना बंद नहीं कर देती, तब तक मुद्रास्फीति बढ़ती रहती है।

4.10 शब्दावली

बाह्य वाणिज्यिक उधार: यह भारत में उपयोग किया जाने वाला एक उपकरण है, जिसका उपयोग भारतीय व्यवसायों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए विदेशी पूंजी प्राप्त करना आसान बनाने के लिए किया जाता है।

पूर्ण रोजगार: वह स्थिति जिसमें सभी श्रम संसाधनों का उपयोग सबसे अधिक लागत प्रभावी तरीके से किया जा रहा हो।

फिलिप्स वक्र: यह मजदूरी स्तर और बेरोजगारी दर (क्रमशः कम बेरोजगारी और अधिक मजदूरी वृद्धि दर) के बीच व्युत्क्रम संबंध का एक ग्राफिकल प्रतिनिधित्व है।

मुद्रास्फीतिजनित मंदी: यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें मुद्रास्फीति उच्च होती है तथा आर्थिक विकास धीमा होता है।

4.11 पाठ्य-अध्याय में प्रश्नों के उत्तर

1. (सी)	2. (घ)
3. (क)	4. (बी)
5. (घ)	6. उलटा
7. अधिक तीव्र	8. कम
9. मुद्रास्फीतिजनित मंदी	10. बेरोजगारी

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

4.12 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. मुद्रास्फीतिजनित मंदी को समझाइए तथा इसके लिए उचित उपचार सुझाइए।
2. मुद्रा भ्रम से आपका क्या अभिप्राय है? अल्पावधि फिलिप्स वक्र की व्युत्पत्ति के लिए मुद्रा भ्रम का अस्तित्व क्यों महत्वपूर्ण है?
3. फिलिप्स वक्र की अवधारणा के विरुद्ध तर्क दीजिए? क्या वे तर्क सही हैं? वैध?
4. किसी अर्थव्यवस्था पर मुद्रास्फीति के प्रभाव को रेखांकन द्वारा समझाइए।

4.13 संदर्भ

ब्लैंचर्ड, ओ., और जॉनसन, डीआर (2019)। मैक्रोइकॉनॉमिक्स (8वां संस्करण)। पियर्सन।

ब्रूनो, एम., और सैक्स, जे. (1985). मुद्रास्फीतिजनित मंदी: इसकी प्रकृति और संभावित कारणों का अध्ययन. विश्व बैंक.

रोमर, डी. (2018). एडवांस्ड मैक्रोइकॉनॉमिक्स (5वां संस्करण). मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन.

4.14 सुझाए गए पठन सामग्री

वुडफोर्ड, एम. (2003). ब्याज और मूल्य: मौद्रिक नीति के सिद्धांत की नींव. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

गैली, जे. (2015). मौद्रिक नीति, मुद्रास्फीति और व्यापार चक्र: नए कीनेसियन ढांचे और इसके अनुप्रयोगों का परिचय (दूसरा संस्करण)।
प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

मैनकीव, एनजी (2018)। अर्थशास्त्र के सिद्धांत (8वां संस्करण)। सेन्गेज लर्निंग।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

इकाई III: सूक्ष्म आर्थिक आधार

समष्टि आर्थिक व्यवहार

पाठ 5 उपभोग व्यय

पाठ 6 उपभोग के सिद्धांत

व्यय

पाठ 7 निवेश कार्य

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ 5

उपभोग व्यय

डॉ. स्वरूप संतरा सहायक
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

संरचना

5.0 सीखने के उद्देश्य 5.1 परिचय 5.2
कीनेसियन उपभोग फ़ंक्शन
5.3 दो-अवधि मॉडल: उपभोग को अनुकूलित करना 5.4 इरविंग
फिशर का इंटरटेम्पोरल ऑप्टिमाइज़ेशन मॉडल 5.5 सारांश 5.6 शब्दावली 5.7 आत्म-
मूल्यांकन प्रश्न 5.8 पाठ में प्रश्नों के उत्तर 5.9 संदर्भ 5.10 सुझाए गए पठन

5.0 सीखने के उद्देश्य

कीनेसियन उपभोग फलन को समझना

दो अवधियों में उपभोग को अनुकूलित करना

अंतर-कालिक उपभोग की अवधारणा को समझना

5.1 परिचय

किसी भी अर्थव्यवस्था में उपभोग व्यय समग्र मांग का एक प्रमुख घटक है।
उपभोग व्यय में कोई भी उतार-चढ़ाव समग्र मांग को काफी हद तक प्रभावित करता है।
व्यापार चक्र के दौरान उपभोग व्यय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

व्यापारिक मंदी से उबरने के लिए उपभोग व्यय भी महत्वपूर्ण है।
इसलिए, उपभोग व्यय का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।

पारंपरिक उपभोग कार्य,

सी=सी [वाई – टी (वाई)], 0 1 सी ..... (1)

जहाँ, C वास्तविक उपभोग है, Y वास्तविक आय है और t(Y) कर फलन है।

उपभोग फ़ंक्शन भविष्य में व्यापक आर्थिक विश्लेषण में एक महत्वपूर्ण संबंध प्रदान करता है: आय और उपभोक्ता व्यय के बीच संबंध। उपभोग व्यय अध्ययन का दूसरा पहलू यह है कि आय के लिए उपभोक्ता व्यय का अनुपात चक्रीय रूप से और परिवारों में आय के स्तर के साथ विपरीत रूप से भिन्न होता है।

कीन्स के उपभोग विश्लेषण के बाद, उपभोग व्यय का अध्ययन करने के लिए कई सिद्धांत सामने आए। इनमें इरविन फिशर का इंटरटेम्पोरल ऑप्टिमाइजेशन मॉडल, एंडो-मोडिग्लियानी की जीवन-चक्र परिकल्पना, फ्रीडमैन की स्थायी आय परिकल्पना और हॉल का तर्कसंगत अपेक्षा दृष्टिकोण सबसे महत्वपूर्ण हैं।

उपभोग मूलतः घरेलू स्तर पर किया जाता है। इसलिए, वृहद स्तर पर उपभोग व्यय का अध्ययन करने के लिए, सूक्ष्म स्तर पर उपभोक्ता के व्यय का अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण है।

5.2 कीनेसियन उपभोग फ़ंक्शन

1936 में, कीन्स ने राष्ट्रीय आय के निर्धारण के लिए आय-व्यय दृष्टिकोण में उपभोग कार्य को मूल तत्व बनाया। कीन्स के आय और रोजगार के सिद्धांत में उपभोग कार्य की अवधारणा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कीन्स ने कई व्यक्तिपरक और वस्तुनिष्ठ कारकों का उल्लेख किया है जो किसी अर्थव्यवस्था की खपत को निर्धारित करते हैं। हालांकि, कीन्स के अनुसार, सभी कारकों में से, यह आय का वर्तमान स्तर है जो किसी व्यक्ति और अर्थव्यवस्था की खपत को निर्धारित करता है। चूंकि कीन्स ने उपभोग के निर्धारक के रूप में आय के पूर्ण आकार पर जोर दिया, इसलिए उनके उपभोग के सिद्धांत को उपभोग का पूर्ण आय सिद्धांत भी कहा जाता है।

इसके अलावा, कीन्स ने उपभोग का एक मनोवैज्ञानिक नियम प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार, आय में वृद्धि के साथ-साथ आय में वृद्धि होती है, लेकिन आय में वृद्धि जितनी नहीं होती। दूसरे शब्दों में, उपभोग की सीमांत प्रवृत्ति (एमपीसी) एक से कम होती है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

$$0 \quad \frac{\Delta \text{सी}}{\Delta \text{य}} \quad 1$$

कीन्स ने उपभोग व्यवहार पर तीन बिंदु बनाए। सबसे पहले, उन्होंने सुझाव दिया कि उपभोग व्यय मुख्य रूप से वर्तमान अवधि की पूर्ण आय पर निर्भर करता है; यानी, उपभोग वर्तमान आय के पूर्ण स्तर का एक सकारात्मक कार्य है। किसी निश्चित अवधि में किसी की आय जितनी अधिक होगी, उस अवधि में उसका उपभोग व्यय उतना ही अधिक होने की संभावना है। दूसरे शब्दों में, किसी भी अवधि में, अमीर लोग गरीब लोगों की तुलना में अधिक उपभोग करते हैं।

दूसरे, कीन्स बताते हैं कि उपभोग व्यय का आय के साथ आनुपातिक संबंध नहीं होता है। उनके अनुसार, जैसे-जैसे आय बढ़ती है, आय का एक छोटा हिस्सा उपभोग किया जाता है। आय के लिए उपभोग के अनुपात को औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) कहा जाता है। इस प्रकार, कीन्स का तर्क है कि आय बढ़ने पर औसत उपभोग प्रवृत्ति गिरती है।

कीन्स के उपभोग फलन को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है;

सी एक बी.वाई.डी. .. 2

जहाँ, C उपभोग व्यय है और Y वास्तविक प्रयोज्य आय है, जो सकल राष्ट्रीय आय में से करों को घटाने के बराबर है। a और b स्थिरांक हैं, जहाँ a अवरोधन पद है, अर्थात आय के शून्य स्तर पर उपभोग व्यय की राशि।

इस प्रकार, इसे स्वायत्त उपभोग कहा जाता है।

यह पैरामीटर सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (एमपीसी) है, जो प्रति इकाई डिस्पोजेबल उत्पादन में वृद्धि के जवाब में उपभोग व्यय में वृद्धि को मापता है।

आय। इस प्रकार, एमपीसी $\frac{\Delta C.}{\text{चूँकि आय के बढ़ने पर औसत उपभोग प्रवृत्ति घटती है } \Delta Y}$

बढ़ जाती है, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (एमपीसी) औसत उपभोग प्रवृत्ति (एपीसी) से कम होती है।

उदाहरण:

यदि किसी अर्थव्यवस्था में स्वायत्त उपभोग 500 करोड़ रुपये है, प्रत्याशित निवेश 4,000 करोड़ रुपये है तथा अर्थव्यवस्था की आय का संतुलन स्तर 1,800 करोड़ रुपये है, तो सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (एमपीसी) के मूल्य की गणना करें।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

समाधान:

हम जानते हैं कि आय के संतुलन स्तर पर

बचत = निवेश

इसलिए, बचत = 4000;

अब, आय = बचत + उपभोग

आय और बचत के मान डालने के बाद, 18000 = 4000 + उपभोग

अतः उपभोग = 14000

अब, हम जानते हैं कि उपभोग फ़ंक्शन को CC bY द्वारा दर्शाया जाता है ,

जहाँ C= कुल उपभोग =14000; C = स्वायत्त उपभोग =500, तथा Y= आय =18000. तथा, b MPC है; हमें आय, कुल उपभोग तथा स्वायत्त उपभोग के मान को देखते हुए b का मान ज्ञात करना है।

उन मानों को उपभोग फ़ंक्शन में डालने के बाद, हम प्राप्त करते हैं;

14000=500+बी*18000

13500=बी*18000

13500/18000=बी

अतः, b = 0.75

इसलिए, एमपीसी खपत फ़ंक्शन 0.75 है। यह सिर्फ़ एक संख्या है, इकाई रहित। इसका मतलब है कि, अगर आय में एक रुपया बढ़ता है, तो खपत में सिर्फ़ 0.75 रुपये (यानी, 75 पैसे) की वृद्धि होगी।

कीन्स ने अल्पावधि उपभोग फलन प्रस्तुत किया, जैसा कि नीचे चित्र 5.1 में दिखाया गया है।

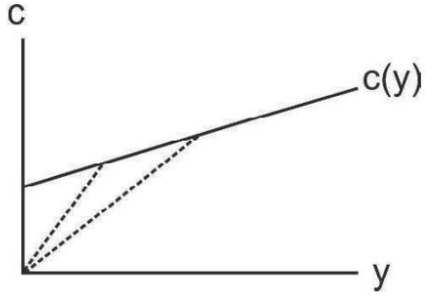

चित्र 5.1

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

यह अल्पकालिक उपभोग फ़ंक्शन दर्शाता है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है, लोग आय का घटता हुआ हिस्सा खर्च करने लगते हैं, या इसके विपरीत, आय का बढ़ता हुआ हिस्सा बचाने लगते हैं। मूल बिंदु से उपभोग फ़ंक्शन पर एक बिंदु तक रेखा का ढलान औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) या उस बिंदु पर c/y अनुपात देता है।

और उपभोग फलन का ढलान ही सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (एमपीसी) है।

उदाहरण

जब डेविड के पास कोई आय नहीं होती, तो वह $500 खर्च करता है। यदि उसकी आय $2000 हो जाती है, तो वह $1900 खर्च करता है। उसका उपभोग फलन क्या है?

समाधान:

उपभोग फलन पर इस प्रकार विचार करें: CC byY ¯ ·

अब, जब उसकी कोई आय नहीं है (Y = 0), तो C $500 है।

फिर, उपभोग फ़ंक्शन में मान डालने पर, हम प्राप्त करते हैं;

$500 = C + 0; अतः, C = $500. ¯ ¯

इसके बाद, जब उसका Y = $2000, तो उसका C = $1900. अब, मान डालने पर उपभोग फ़ंक्शन में, हम प्राप्त करते हैं;

$1900 = $500 + b $2000

या, $1400 = b $2000

या, b = $1400 / $2000 = 0.7

इसलिए, हमने C और b के मानों की गणना की है । इन मानों को उपभोग फ़ंक्शन ¯ में डालने के बाद, हमें प्राप्त होता है;

: सी $500 0.7 Y· यह आवश्यक उपभोग फलन है।

उपरोक्त ग्राफ से यह स्पष्ट है कि MPC, APC से कम है। आय बढ़ने पर अनुपात c/y घटता है। कीन्स ने व्यापार चक्र की अवधि में अल्पावधि में उपभोक्ता व्यय के व्यवहार का अवलोकन किया। उन्होंने देखा कि जैसे-जैसे आय घटती है, लोग आय में गिरावट के अनुपात में उपभोग में कटौती करके अपने उपभोग मानक को कम नहीं करते हैं। इसके विपरीत, जैसे-जैसे आय बढ़ती है, उपभोग आनुपातिक रूप से नहीं बढ़ेगा।

क्रॉस-सेक्शनल बजट अध्ययनों में, आय बढ़ने के साथ बचत का अनुपात बढ़ने की उम्मीद की जाती है। इसका मतलब है कि अमीर लोग आनुपातिक रूप से अधिक बचत करते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

उपभोग व्यवहार के इस अध्ययन से, कोई यह लिख सकता है कि MPC < APC, इसलिए जैसे-जैसे आय बढ़ती है, c/y गिरता है (APC गिरता है)। इसलिए, कीनेसियन प्रस्ताव थे:

क) क्रॉस-सेक्शनल बजट अध्ययनों में, एमपीसी < एपीसी, ख) जैसे-जैसे आय

बढ़ती है, एपीसी गिरती है।

साइमन कुजनेट का अध्ययन (1946): साइमन

कुजनेट ने 1946 में उपभोग फलन पर कीनेसियन प्रस्तावों को सत्यापित करने का बहुत प्रयास किया। उनके अध्ययन से उपभोग व्यवहार के संबंध में दो महत्वपूर्ण बातें सामने आईं।

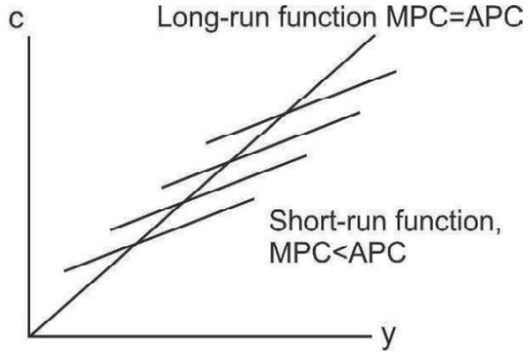

चित्र 5.2

a) सबसे पहले, औसतन लंबी अवधि में, आय के लिए उपभोग व्यय का अनुपात, c/y, या APC, में कोई गिरावट नहीं देखी गई। इसलिए, MPC = APC। इसका मतलब है कि उपभोग फ़ंक्शन c = f (y) मूल बिंदु से होकर गुजरने वाली एक सीधी रेखा है।

बी) दूसरे, कुजनेट के अध्ययन से पता चला कि तेजी के दौर में, अनुपात c/y दीर्घ-अवधि औसत से नीचे था। और मंदी के दौरान, अनुपात c/y दीर्घ-अवधि औसत से ऊपर था। इसका मतलब है कि चक्रीय उतार-चढ़ाव के दौरान c/y अनुपात आय के साथ विपरीत रूप से बदलता रहता है।

उपभोग के सिद्धांत ने तीन देखी गई घटनाओं को ध्यान में रखा था:

i) एक क्रॉस-सेक्शनल बजट अध्ययन में, y बढ़ने के साथ s/y बढ़ रहा है, जिससे आबादी के क्रॉस-सेक्शन में, एमपीसी < एपीसी।

ii) व्यापार चक्र या अल्पावधि डेटा से पता चलता है कि c/y अनुपात तेजी अवधि के दौरान औसत से छोटा होता है और मंदी के दौरान औसत से अधिक होता है, जिससे अल्पावधि में, आय में उतार-चढ़ाव के कारण, MPC < APC होता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

iii) दीर्घावधि प्रवृत्ति डेटा सी/वाई अनुपात में परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति नहीं दिखाता है
दीर्घकाल में, जैसे-जैसे आय प्रवृत्ति के साथ बढ़ती है, एमपीसी = एपीसी।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

1. अनुमानित उपभोग फलन है: C = 1213 + 0.96 Y. कितना है?
एमपीसी क्या है? समझाइए।

2. यदि अल्पकाल में MPC > APC हो, तो कौन सा सत्य है?

a) APC घटेगी,

ख) ए.पी.सी. में वृद्धि होगी,

ग) ए.पी.सी. अपरिवर्तित रहेगी।

3. दीर्घकाल में कौन सा कथन सही नहीं है?

a) APC स्थिर है,

बी) एपीसी = एमपीसी

ग) ए.पी.सी. < एम.पी.सी.

4. क्रॉस-सेक्शनल बजट अध्ययन में, जैसे-जैसे आय बढ़ती है, c/y ..... [भरें
काला]

5.3 दो-अवधि मॉडल: अनुकूलन उपभोग

हम उपभोग अनुकूलन मॉडल को दो-अवधि मॉडल से शुरू कर सकते हैं।
यह मान लिया गया है कि उपभोग का निर्णय एक अवधि का निर्णय नहीं है। जब कोई उपभोक्ता
जब कोई व्यक्ति उपभोग करने का निर्णय लेता है, तो उसके पास भविष्य में उपभोग के लिए योजना भी होती है। इसलिए,
उपभोग निर्णयों का एक अंतर-कालिक पहलू होता है। दो-अवधि मॉडल मदद करेगा
अंतर-कालिक विश्लेषण के लिए आधार प्रदान करें। फिर भी, यह एक सरल मॉडल बना हुआ है क्योंकि यह मानता है
केवल दो अवधियों.

एकल उपभोक्ता के साथ दो-अवधि मॉडल पर विचार करें।
उपभोक्ता जीवन भर अपने वास्तविक उपभोग पर निर्भर रहता है। उपयोगिता फ़ंक्शन
इस प्रकार लिखा जा सकता है:

उउ सी सीसी0, .., . ., टी . 3

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

यहाँ, U आजीवन उपयोगिता फ़ंक्शन है, जो उसके पूरे जीवन काल में कुल उपयोगिता को मापता है। शब्द c एक एकल अवधि के लिए खपत है। और T उपभोक्ता का अंतिम समय है। अवधि T के बाद, उपभोक्ता मर जाएगा। अब, इन मान्यताओं को देखते हुए, उपभोक्ता अपनी बाधाओं को देखते हुए, उपयोगिता के उच्चतम स्तर को प्राप्त करके अपनी उपयोगिता को अधिकतम करने का प्रयास करेगा।

बाधा यह है कि जीवन में उसके कुल उपभोग का वर्तमान मूल्य उसके जीवन में कुल आय के वर्तमान मूल्य से अधिक नहीं हो सकता। इसका मतलब है कि उपभोक्ता अपने पूरे जीवन में अपनी आय से कम या कम से कम उसके बराबर उपभोग कर सकता है। उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए, उपभोक्ता को उपभोग को भी अधिकतम करने की आवश्यकता होती है। और वास्तविक उपभोग का अधिकतम वर्तमान मूल्य वास्तविक आय के वर्तमान मूल्य के बराबर हो सकता है।

जीवन में उसके कुल उपभोग का वर्तमान मूल्य इस प्रकार लिखा जा सकता है: $\sum_{0}^{T} \frac{C_t}{(1+r)^t}$;

जहाँ, T व्यक्ति का अपेक्षित जीवनकाल है, r ब्याज की दर है। इसी तरह,

जीवन में उसकी कुल आय का वर्तमान मूल्य इस प्रकार लिखा जा सकता है: $\sum_{0}^{T} \frac{Y_t}{(1+r)^t}$। इसलिए

उपभोक्ता की बाधा को इस प्रकार लिखा जा सकता है;

$$\sum_{0}^{T} \frac{C_t}{(1+r)^t} \leq \sum_{0}^{T} \frac{Y_t}{(1+r)^t} \quad .. \ 4$$

यह बाधा कहती है कि उपभोक्ता उधार लेकर और उधार देकर अपनी आय धारा को उपभोग धारा में आवंटित कर सकता है, लेकिन उपभोग का वर्तमान मूल्य आय के वर्तमान मूल्य द्वारा सीमित है। इसका मतलब है कि अगर अब उपभोग बढ़ाया जाता है, तो व्यक्ति को अपनी भविष्य की खपत को कम करना होगा, आय के कुल वर्तमान मूल्य को देखते हुए।

इस प्रकार हमारे पास एक व्यक्ति है जिसकी जीवन भर की आय की एक अपेक्षित धारा है, जो उस आय को एक उपभोग पैटर्न पर इष्टतम तरीके से फैलाना चाहेगा। उसकी अपेक्षित आय धारा मध्यम आयु में वृद्धि के साथ कम से शुरू और समाप्त होती है। लेकिन वह इसे अधिक समान उपभोग धारा में बदलना चाहता है।

मॉडल की सरलता के लिए, केवल दो अवधियों पर विचार करें: अवधि 0 और अवधि t। अवधि 0 प्रारंभिक अवधि है, और अवधि t अंतिम अवधि है। अब, विचार करें

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

कि उसका उपभोग संयोजन है (सी0, सी1) जो उसकी आय संयोजन से आता है

(0 1 yy,) अपने जीवन की दो अवधियों से। व्यक्ति का उपयोगिता फलन लिखा जा सकता है

जैसा यू यूसी सी (0 , 1) व्यक्ति अपनी कुल उपयोगिता को अधिकतम करना चाहता है, बशर्ते कि

उधार लेने-उधार देने की बाधा। किसी व्यक्ति की उधार लेने-उधार देने की बाधा

दो अवधियों को इस प्रकार लिखा जा सकता है: $C_0 \frac{\text{सी}_1}{1_{\text{आर}}} \text{य}_0 \frac{\text{य}_१}{1_{\text{आर}}}$. इसलिए, उपयोगिता

व्यक्ति की अधिकतमीकरण समस्या को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

मैक्सयू यूसीसी (0. 1)

विषय के अधीन $C_0 \frac{\text{सी}_1}{1_{\text{आर}}} \text{य}_0 \frac{\text{य}_1}{\text{१}_{\text{आर}}}$ 5

आय धारा (0 1 yy,) नीचे चित्र 5.3 में बिंदु A का पता लगाती है। बिंदु कहता है

कि व्यक्ति की आय अवधि 0 में 0 y है, और अवधि t में आय 1 y है। हम

यह भी मान सकते हैं कि यदि वह अवधि 0 में अपनी आय से अधिक उपभोग करना चाहता है, तो वह उसे उधार लेना पड़ता है। दूसरी ओर, यदि किसी अवधि में उसकी खपत उसकी आय से कम है 0, वह अपनी बचाई हुई शेष धनराशि उधार दे सकता है।

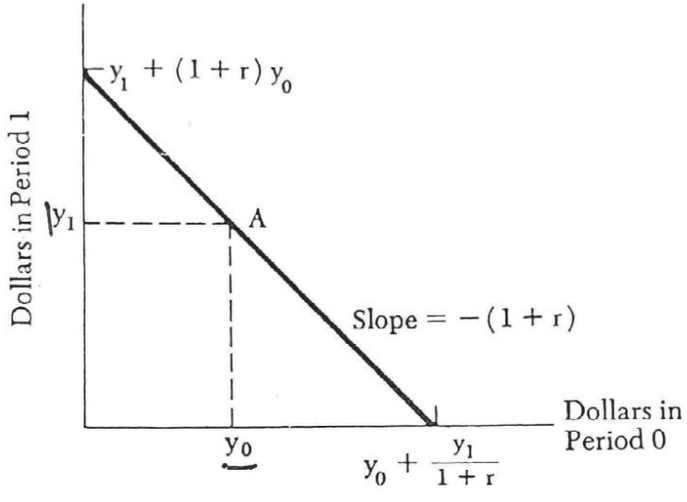

चित्र 5.3

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

हम यह भी मानते हैं कि r ब्याज दर है। यदि व्यक्ति किसी से उधार लेता है
दूसरों को, तो उसे अपनी भविष्य की आय पर ब्याज भी देना होगा, और यदि
यदि कोई व्यक्ति अपना पैसा उधार देता है, तो वह कुछ ब्याज कमा सकता है और अधिक पैसा खर्च कर सकता है।
भविष्य की खपत। यदि अवधि 0 में व्यक्ति की आय मूल्य से अधिक है
उस अवधि में व्यक्ति जिन वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करना चाहता है, तो वह
अपनी बची हुई आय को उधार देने में सक्षम। इसे बचत कहा जा सकता है। इसलिए, उसकी बचत
अवधि 0, होगी:

एस 0 00 वाईसी अवधि में उधार दिया गया पैसा 0

इस राशि को उधार देने पर, उसे अवधि 1 में एक राशि प्राप्त होगी, जो बराबर होगी

1 रुपये , ताकि अवधि 1 में उसका उपभोग उसकी आय से उस राशि से अधिक हो सके,

जो कि अवधि 1 में उसकी बचत है, यानी 1s। अवधि 1 में बचत को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

$$s_1 \quad 1 \quad \text{रुपये } 0_{11} \quad \text{वाईसी} \qquad .6$$

उपरोक्त समीकरण (6) में माइनस चिन्ह प्रवेश करता है क्योंकि अवधि में बचत कम होती है
1 अवधि 0 में बचत के विपरीत चिह्न का है, और अवधि 1 में उपभोग के विपरीत चिह्न का है
अवधि 1 में आय से अधिक है, अर्थात 1c 1 y. अब उपरोक्त व्यंजक को विभाजित करके
s के लिए वर्तमान और भविष्य की खपत के बीच व्यापार-बंद पैदा करता है, जैसे;

$$\frac{s_0}{s_1} \quad \frac{1 \quad \text{आरएस वाईसी } 1 \quad 1}{s_0 \; 00 \quad \text{वाईसी}} \qquad .7$$

समीकरण (7) के दाईं ओर से, ss को रद्द करके और गुणा करके 0
0 वर्ष से अधिक 0 , हम प्राप्त कर सकते हैं;

$$y_{11} \quad \text{सी} \quad \text{आर १} \quad (\text{वाईसी}) \qquad 8$$

इसका मतलब यह है कि खपत को syc से नीचे की मात्रा में कम करके 0 00
अवधि 0 में आय, उपभोक्ता राशि (cy, 1 1)
अवधि 1 में आय की अधिकता भी। उपभोग की यह अतिरिक्त मात्रा बराबर है
राशि 1 रुपये 0 · दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता (,) yy आय से व्यापार कर सकता है 0 1

स्व निर्देशात्मक सामग्री 94

संयोजन, आय बिंदु A से उपभोग संयोजन (,) cc, उपभोग 0 1

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

नीचे चित्र में बिंदु B. यह उपभोग बिंदु B, व्यक्ति के उपभोग बिंदु B के साथ भी है।

बजट बाधा जिसका ढलान 1 r है, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

इस बजट रेखा के निर्माण का दूसरा तरीका यह मान लेना है कि व्यक्ति चाहता है
अवधि 0 में अपनी आय धारा का 100 प्रतिशत उपभोग करने के लिए, अपने खिलाफ उधार लेकर
अवधि 1 से भविष्य की आय। अवधि 0 में वह अधिकतम राशि का उपभोग कर सकता है
तो हो:

$$\text{य}_0 \quad \frac{\text{य}_1}{\text{१} \quad \text{आर}}$$

जो कि अवधि 0 अक्ष पर बजट रेखा के अवरोधन के समान है (अर्थात,
x-अक्ष)। इसके विपरीत, यदि वह निर्णय लेता है कि वह अवधि 0 में कुछ भी उपभोग नहीं करेगा,
अवधि 1 तक सभी उपभोग बंद करने के बाद, अवधि 1 में वह अधिकतम उपभोग कर सकेगा:

$$\text{य1} \quad 1 \text{ रे} \quad 0$$

जो कि अवधि 1 अक्ष (यानी y-अक्ष) पर बजट रेखा का अवरोधन है।
इस प्रकार, बजट रेखा व्यक्ति के लिए खुली उपभोग संभावनाओं को सीमित करती है
एक आय धारा (,) yy ब्याज दर r का सामना कर रही है। और उसका उपभोग बिंदु (,) cc 0 1
बजट रेखा से ऊपर नहीं हो सकता।

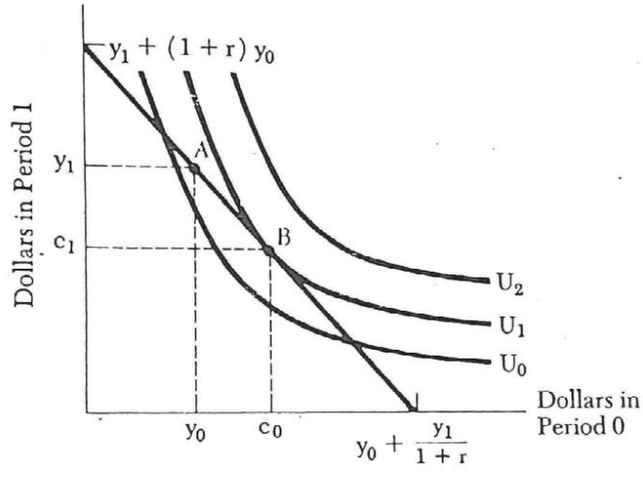

चित्र 5.4

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

व्यक्ति के उपयोगिता फलन से, तुम तुम (,)सीसी 0 , हम एक सेट प्राप्त कर सकते हैं
उदासीनता वक्र जो उन बिंदुओं को दिखाते हैं जिन पर वह अतिरिक्त के बीच उदासीन है
उपयोगिता के प्रत्येक स्तर पर अवधि 1 या अवधि 0 में खपत। ये वक्र - U0 , U1 ,
उपरोक्त चित्र 5.4 में U2 , मानक के गुणों के समान हैं
सूक्ष्मअर्थशास्त्र में उदासीनता वक्र। U0 से U1 से U2 तक की गति बढ़ती है
व्यक्ति की उपयोगिता का स्तर। इसका मतलब है, उच्च उदासीनता वक्र उच्च स्तर देते हैं
उपयोगिता।

अब, हम कह सकते हैं कि बजट रेखा पर या बजट रेखा से नीचे के सभी बिंदु
प्राप्त करने योग्य हैं। अर्थात्, व्यक्ति किसी भी अवधि में किसी भी स्तर पर उपभोग कर सकता है,
बजट बाधा। हालाँकि, इष्टतम उपभोग बिंदु तय करने के लिए
व्यक्ति के बीच, हमें व्यक्ति की उपभोग वरीयता का विश्लेषण करने की आवश्यकता है
सी0 और सी१ उदासीनता वक्र विश्लेषण वरीयता पैटर्न देता है।
उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए, वह बजट रेखा पर उस बिंदु पर उपभोग करेगा जहां यह स्पर्शरेखा है
एक उदासीनता वक्र, जैसे कि ऊपर दिए गए चित्र में बिंदु B. बिंदु B पर, व्यक्ति का
उपभोग पैटर्न (,) सीसी है 0 1 · इसका मतलब यह है कि व्यक्ति को उपभोग करने का चुनाव करना होगा
अवधि 0 में c राशि, और अवधि 1 में c राशि।1चूँकि उसकी आय की ओर झुकाव है
अवधि 1 (1 वर्ष 0 वर्ष से बहुत अधिक है), वह अवधि 0 में ब्याज पर cy उधार ले सकता है 0
दर आर. और अवधि 1 में, वह वापस भुगतान करता है

सी आरसी 1 y11 (0) यू

उपभोक्ता के उपभोग का पैटर्न, जिसमें वर्तमान उपभोग भी शामिल है, उसकी बजट रेखा की स्थिति और उसके सी0. है
उदासीनता वक्र के आकार द्वारा निर्धारित होता है।

बजट रेखा की स्थिति तीन चरों द्वारा निर्धारित होती है: आय
प्रत्येक अवधि, 1 y और ब्याज दर, r. यह उस बिंदु A पर ध्यान देकर देखा जा सकता है
बजट रेखा के निर्देशांक (,) yy हैं, जो प्रत्येक अवधि में आय का मूल्य है। ढलान
बजट रेखा का, 1 आर, ब्याज दर द्वारा निर्धारित किया जाता है। यदि उपभोक्ता की आय
किसी भी अवधि में बढ़ना चाहिए (या तो 0 y बढ़ता है या 0 y या दोनों), तो वर्तमान

स्व निर्देशात्मक
96 सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

उसकी आय धारा का मूल्य (PV) बढ़ जाएगा। जैसे-जैसे बिंदु A क्षैतिज रूप से आगे बढ़ेगा या ऊर्ध्वाधर रूप से, अवधि 0 अवरोधन और बजट रेखा को अपरिवर्तित रखते हुए बाहर की ओर ले जाना ढलान। इस प्रकार, वर्तमान ( ) y या अपेक्षित आय 1 y में कोई भी वृद्धि बजट को स्थानांतरित कर देगी पुरानी बजट रेखा के समानांतर लाइन बनाई जाएगी। इससे उपभोक्ता के लिए यह संभव हो जाएगा एक नए (,) सीसी बिंदु पर उपयोगिता के एक नए, उच्च स्तर तक पहुँचें। 0 1

यदि किसी भी अवधि में उपभोग घटिया वस्तु नहीं है (अर्थात नकारात्मक मूल्य वाली वस्तु) आय प्रभाव), तो जब भी किसी अवधि की आय बढ़ती है, सभी अवधियों में उपभोग बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए, बजट रेखा में वृद्धि ऊपर की ओर स्थानांतरित होती है, जिससे दोनों में वृद्धि होगी सी0और सी १ · यह कहा जा सकता है कि वर्तमान उपभोग का स्तर भविष्य में वृद्धि के साथ बढ़ता है। (अपेक्षित) आय.

इस विश्लेषण का एक निहितार्थ यह है कि वर्तमान खपत में इससे कम अंतर होगा आय। दो-अवधि के मामले में, 0 y में वृद्धि एक में वितरित की जाएगी c और c1 दोनों में वृद्धि । c में परिवर्तन 0 y में परिवर्तन के बराबर होगा केवल तभी जब बिंदु B 0 y की वृद्धि के साथ सीधे दाईं ओर चले गए । अगर हम विश्लेषण को कई तक बढ़ाते हैं अवधि, मान लीजिए, 25 वर्ष, 25 वर्षों की खपत वृद्धि में 0 y वृद्धि को फैलाना ac वृद्धि देगा जो 0 y वृद्धि के सापेक्ष बहुत छोटी है। यदि, उदाहरण के लिए, उपभोक्ता अपनी आय को 25 वर्षों में प्रत्येक वर्ष बराबर उपभोग के लिए आवंटित करता है- दो-अवधि के मामले में यह उपरोक्त आकृति के बिंदु B को मूल बिंदु से 45o रेखा पर रखेगा , ताकि सीसी 0 1 , तो वेतन वृद्धि केवल 4 प्रतिशत होगी $\frac{1}{25}$ 0 वर्ष का वेतन वृद्धि.

आय धारा के वर्तमान मूल्य और वर्तमान के बीच संबंध उपरोक्त आंकड़े से उपभोग का पहला सामान्य सूत्रीकरण प्राप्त होता है उपभोग फ़ंक्शन, जैसे;

सीटी एफ पीवी ; एफ 0 . 9

जहाँ, PV समय t पर वर्तमान और भविष्य की आय का वर्तमान मूल्य है। यह कहता है समय t में किसी व्यक्ति का उपभोग वर्तमान मूल्य का एक बढ़ता हुआ फलन है समय t में उसकी आय का.

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

अगले भाग में, हम बहु-अवधि के मामलों को पेश करके मॉडल का सामान्यीकरण करेंगे। अंतिम परिणाम मूलतः वही होगा, लेकिन मॉडल उपभोक्ता व्यवहार के बारे में सिद्धांत बनाने के लिए विश्लेषण की स्पष्ट समझ प्रदान करेगा।

संख्यात्मक उदाहरण :

कल्पना करें कि एक उपभोक्ता को प्रत्येक अवधि में $1000 की आय प्राप्त होती है (Y1 = Y2 = $1000) और प्रत्येक अवधि में कर $100 (t1 = t2 = $100) है। जिस दर पर लोग उधार ले सकते हैं और बचत कर सकते हैं वह 10% (r = 0.1) है। इसलिए, कर के बाद आय प्रत्येक अवधि में (Yt) = $900 है, और हमारा उपभोक्ता बस इतना ही उपभोग कर सकता है। लेकिन क्या होगा अगर उन्हें कल की तुलना में आज अधिक उपभोग करने की प्राथमिकता है (यानी वे अधीर हैं)?

मान लीजिए कि वे आज $1000 खर्च करना चाहते हैं। तो फिर वे अपनी भविष्य की आय से $100 उधार ले सकते हैं, लेकिन उन्हें इसे (1+r) की ब्याज दर पर वापस चुकाना होगा। इसलिए, अगली अवधि में, उन्हें $100 और 10% ब्याज, $10 वापस चुकाना होगा, जिसका अर्थ है कि अगले वर्ष, उनके पास खर्च करने के लिए केवल $900 - $110, या $790 होंगे।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

5. यदि कोई व्यक्ति अपनी आय से अधिक उपभोग करना चाहता है, तो उसे

क) पैसा उधार देना, ख)

पैसा उधार लेना,

ग) अधिक कर लगाएं

6. विबचत करना (अ)

नकारात्मक बचत है

बी) सकारात्मक बचत

ग) शून्य बचत

7. यदि आय में प्रतिवर्ष वृद्धि होती है, तो

a) केवल c बढ़ता है

b) केवल c बढ़ता है

c) c और c दोनों बढ़ते हैं

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

5.4 इरविंग फिशर का इंटरटेम्पोरल अनुकूलन मॉडल

इरविंग फिशर ने अपनी पुस्तक थ्योरी ऑफ में अंतर-कालिक विकल्प का सिद्धांत विकसित किया। ब्याज (1930)। कीन्स के विपरीत, जिन्होंने उपभोग को चालू आय से जोड़ा, फिशर के मॉडल ने दिखाया कि कैसे तर्कसंगत, दूरदर्शी उपभोक्ता उपभोग का चयन करते हैं वर्तमान और भविष्य के लिए उनकी जीवन भर की उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए। इस कार्य का आधार है उपभोग। यह सिद्धांत कुछ महत्वपूर्ण मान्यताओं पर आधारित है, जैसे कि उपभोक्ता भविष्योन्मुखी होते हैं और अधिकतम उपभोग के लिए वर्तमान और भविष्य का चुनाव करते हैं जीवन भर की संतुष्टि। उसका उपभोग उसके लिए उपलब्ध कुल संसाधनों के अधीन है वर्तमान और भविष्य की खपत। इसलिए मूल रूप से, फिशर के सिद्धांत में, वह मानता है कि व्यक्ति दो समयावधियों में जीता है - वर्तमान और भविष्य, और वह अपने जीवन को किस प्रकार अनुकूलित करता है इन दो समयावधियों में खपत

घरेलू उपभोग के अनुकूलन मॉडल के माध्यम से, इरविन फिशर ने समय के साथ घरेलू व्यवहार को अनुकूलित किया जा सकता है। इस मॉडल पर नीचे चर्चा की गई है:

आइए हम किसी ऐसे व्यक्ति पर विचार करें जो 0 समय पर जीवित रहने की उम्मीद करता है। समय टी. समय 0 पर, परिवार को वर्तमान खपत का एक स्तर चुनना होगा वर्तमान और सभी भावी अवधियों में अपेक्षित उपयोगिता को अधिकतम करना, वर्तमान और अपेक्षित आय और वर्तमान संपत्ति। यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ऐसा नहीं है कि सभी आय का तुरंत उपभोग कर लिया जाता है। आय का कुछ भाग भविष्य में उपभोग के लिए बचा लिया जाता है।

व्यक्ति का उपयोगिता फलन इस प्रकार लिखा जा सकता है:

यू यूसीसीसी सी $_{012 टी}$, , ., , ,सी$_{टी}$ 10

जहाँ, Ct जीवन के tवें वर्ष में उपभोग व्यय है , तथा

T जीवन-काल का कुल वर्ष है।

एक व्यक्तिगत उपभोक्ता उपभोग से अपनी कुल उपयोगिता को अधिकतम करने का प्रयास करता है अपने पूरे जीवन में। मान लें कि उपयोगिता फ़ंक्शन लॉगरिदमिक है, यानी,

यू सीसी एलएन

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

उपयोगिता फ़ंक्शन के गुण:

क) यह भी माना जाता है कि सीमांत उपयोगिता सकारात्मक है, यू सी $\frac{1}{\text{सी}}$ और यह है

खपत में कमी, u सी $\frac{1}{\text{सी}^2}$.

b) हमने यह भी मान लिया कि उपयोगिता फलन समय के साथ योगात्मक और पृथक करने योग्य है।
इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक अवधि की सीमांत उपयोगिता उपभोग से स्वतंत्र होती है
अन्य सभी अवधियों में.

ग) हमने यह भी मान लिया कि भविष्य की उपयोगिताओं को व्यक्तिपरक दर पर छूट दी जाती है ।

इन तीन मान्यताओं का उपयोग करके, हम उपयोगिता फ़ंक्शन को इस प्रकार निर्दिष्ट कर सकते हैं:

$$\text{यू सी } \ln_0 \frac{\text{एलएन सी}_1}{1} \quad .. \quad \frac{\text{एलएन सी}_t}{1^t} \quad . .. \quad \frac{\text{एलएन सी}_T}{1^T} \quad .. \ 11$$

या,

$$\text{यू}_0^T \frac{\text{एलएन सी}_t}{1^t} \quad . \ (12)$$

अब, अंतर-कालिक बजट बाधा को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

C का कुल वर्तमान मूल्य = Y का कुल वर्तमान मूल्य, अर्थात,

$$\text{सी}_0 \frac{\text{सी}_1\text{सी वाई १}}{\text{आर}} \quad . \quad \frac{T}{1^T_{\text{आर}}} \quad \text{य}_0 \frac{1}{1_{\text{आर}}} \quad .. \quad \frac{T}{1^T_{\text{आर}}} \quad .. \ १३$$

संक्षेप में,

$$\sum_0^T \frac{\text{सी}_t}{1^t_{\text{आर}}} \quad \sum_0^T \frac{\text{य}_t}{1^t_{\text{आर}}} \quad .. \ 14$$

इसके बाद, घरेलू उपभोग की अनुकूलन समस्या को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

उद्देश्य समारोह; अधिकतम $\sum_0^T \frac{\text{एलएन सी}_t}{1^t}$

इस बाध्यता के अधीन कि $\sum_0^T \frac{\text{सी}_t}{1^t_{\text{आर}}} \quad \sum_0^T \frac{\text{य}_t}{1^t_{\text{आर}}}$

इस अनुकूलन समस्या को हल करने के लिए, आइए लैग्रेंज गुणकों को लागू करें, फिर

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

हम प्राप्त कर सकते हैं:

अधिकतम एल टी टीटी एलएन सी वाई सी तत त आर 0 0 1 1 1 आर 15

जहाँ, लैग्रेंज गुणक, एक धनात्मक स्थिरांक है जो मापता है धन की एक अतिरिक्त इकाई की सीमांत उपयोगिता।

प्रथम क्रम की स्थितियाँ L का आंशिक विभेदन लेकर प्राप्त की जा सकती हैं सभी Cs और के संबंध में ; और फिर उन्हें शून्य के बराबर सेट करना। ये पहले क्रम शर्तें इस प्रकार लिखी जाती हैं:

$$\frac{एल}{सी_0} \quad \frac{1}{सी_0} \quad 0 \qquad .. \; 16\ ए$$

$$\frac{एल}{सी_ट} \quad \frac{1}{1} \cdot \frac{1}{सी_ट} \quad \frac{}{1 \; आर} \quad 0 \qquad .. \; 16\ बी$$

.

.

$$\frac{एल}{सी_टी} \quad \frac{1}{1^{टी}} \cdot \frac{1}{सी_टी} \quad \frac{}{1 \; आर^{टी}} \quad 0 \qquad . \; 16\ सी$$

$$\frac{एल}{} \quad \sum_0^{टी} \frac{य_ट}{1 \; आर^{ट}} \quad \sum_0^{टी} \frac{सी_ट}{1 \; आर^{ट}} \quad 0 \qquad . \; 16\ डी$$

प्रथम क्रम की स्थितियों में पहले दो समीकरणों पर विचार करने पर, समीकरण 16a और 16 बी, हम समय 0 और समय टी की खपत की तुलना कर सकते हैं, जो एक भविष्य है उपभोग।

$$\frac{सीटी}{सी_0} \quad \frac{1 \; आर^{ट}}{1} \qquad . \; 17$$

सामान्यतः, दो आसन्न अवधियों, t और t-1 के लिए, उपरोक्त समीकरण हो सकता है इस प्रकार लिखा गया:

$$\frac{सी_ट}{सी_{ट\ 1}} \quad \frac{1 \; आर}{1}, \quad या\ सी_ट \quad \frac{1 \; आर}{1} \quad सी_{ट\ 1} \qquad . \; 18$$

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

सीमांत उपयोगिता फ़ंक्शन का उपयोग करके, $\text{यू सी} \quad \frac{1}{\text{सी}}$, हमारे पास हो सकते हैं:

$$\text{यू सी}_{\text{t}} \quad \frac{1}{\text{सी}_{\text{t}}} \quad \text{और} \quad \text{यू सी}_{\text{t}\ 1} \quad \frac{1}{\text{सी}_{\text{t}\ 1}}$$

इन दो अवधियों की सीमांत उपयोगिता का अनुपात है:

$$\frac{\text{यू सीसी}_{\text{t}}}{\text{यू सीसी}_{\text{t}\ 1}} \quad _{\text{t}\ 1} \quad \frac{1}{1 \quad \text{आर}}$$

इस तरह, $\frac{\text{यू सी}_{\text{t}}}{\text{यू सी}_{\text{t}\ 1}} \quad \frac{1}{1 \quad \text{आर}}$ 19

अब, अंतर-कालिक उपभोग संबंध कुछ दिलचस्प जानकारी प्रदान करते हैं
निहितार्थ। समय के साथ खपत बढ़ेगी या घटेगी; यह सापेक्ष पर निर्भर करेगा
आर और के मान .

1 a) यदि (r) , तो 1 r ——— 1

ऐसी स्थिति में, यू सीटी $\text{यू सी}_{\text{t}\ 1}$, जिसका तात्पर्य है घटते उपभोग पथ
अधिक समय तक।

1 बी) यदि (आर) , तो 1 आर ——— 1

ऐसी स्थिति में, यू सीटी $\text{यू सी}_{\text{t}\ 1}$, जिसका तात्पर्य है बढ़ती हुई खपत का मार्ग
अधिक समय तक।

1 c) यदि (r) , तो 1 r ——— 1

ऐसी स्थिति में, यू सीटी $\text{यू सी}_{\text{t}\ 1}$, जिसका तात्पर्य निरंतर खपत से है
समय।

उपभोग और भावी आय का वर्तमान मूल्य:

लैग्रेंज गुणक के साथ पिछले अनुकूलन समस्या से, हम प्राप्त कर सकते हैं
दो अवधियों, 0 और t, की खपत इस प्रकार है:

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

$$\frac{\text{सी}_{\text{टी}}}{1 \quad \text{आर}^{\text{टी}}} \quad \frac{\text{सी}_0}{1 \quad \text{टी}} \qquad .. \ 20$$

अब, वर्तमान मूल्य की परिभाषा का उपयोग करके बाधा को पुनः लिखें:

$$\text{टी} \quad \frac{\text{सी}_{\text{टी}}}{1 \quad \text{आर}^{\text{टी}}} \quad \text{टी} \quad \frac{\text{य}_{\text{टी}}}{1 \quad \text{आर}^{\text{टी}}} \quad \text{पीवी}_0$$
$$0 \qquad\qquad\qquad 0$$

हम C0 को बायें हाथ के योग से बाहर निकाल सकते हैं, यह देखते हुए कि $1 \quad \text{आर}^{0} \quad 1$, जैसा:

$$\text{सी}_0 \quad \text{टी} \quad \frac{\text{सी}_{\text{टी}}}{1 \quad 1 \quad \text{आर}^{\text{टी}}} \quad \text{पीवी}_0$$

प्रथम क्रम की शर्तों से, हम प्रत्येक के लिए / 1 प्रतिस्थापित कर सकते हैं $\text{सी}_{\text{टी}}$ $\text{आर}^{\text{टी}}$ के तहत

सारांश $\text{सी}_0 \ / 1 \quad ^{\text{टी}}$, पाने के लिए और;

$$\text{सी}_0 \quad \text{टी} \quad \frac{\text{सी}_0}{1 \quad 1 \quad \text{टी}} \quad \text{पीवी}_0$$

C0 का गुणनखंड करने पर , हमें अंतिम परिणाम इस प्रकार प्राप्त होता है:

$$\text{सी}_0 \quad 1 \quad \text{टी} \quad \frac{1}{1 \quad 1^{\text{टी}}} \quad \text{पीवी}_0$$

या,

$$\text{सी}_0 \quad \frac{1}{1 \quad 11^{\text{टी}}} \quad \text{पीवी}_0$$

इसका मतलब यह है कि किसी दी गई छूट दर के लिए, खपत आनुपातिक है
भावी आय का पी.वी.

C0 एफ पीवी

स्व निर्देशात्मक
सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

मॉडल का सारांश इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

1) उपभोग पथ का ढलान दो आसन्न उपभोगों के सापेक्ष r पर निर्भर करता है। , किसी के साथ

2) इष्टतम उपभोग पथ के साथ, Ct-1, Ct के लिए एक अच्छा भविष्यवक्ता है ।

3) किसी भी समय t पर उपभोग भविष्य के वर्तमान मूल्य के समानुपाती होता है
उस अवधि में आय PV0 .

केस स्टडी: उपभोग बनाम व्यय:

बुनियादी नवशास्त्रीय उपभोग मॉडल की एक प्रमुख भविष्यवाणी यह है कि जब कोई लंबे समय से प्रत्याशित घटना घटित होती है तो उपभोग में बदलाव नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए, सेवानिवृत्ति आम तौर पर एक आश्चर्य के रूप में नहीं आती है और इसके बजाय यह किसी व्यक्ति के जीवनकाल में सबसे अधिक प्रत्याशित घटनाओं में से एक है।

नवशास्त्रीय उपभोग मॉडल के अनुसार, लोगों के रिटायर होने पर उपभोग में अपेक्षाकृत कोई बदलाव नहीं होने की उम्मीद की जाती है। वास्तव में, किसी भी व्यक्ति की सेवानिवृत्ति के आसपास उपभोग पर होने वाले व्यय में काफी बदलाव होता है।
एक अध्ययन के अनुसार, उपभोग पर व्यय में लगभग 17 प्रतिशत की गिरावट आती है।
उपभोग व्यय में इतनी बड़ी गिरावट कई वर्षों से नवशास्त्रीय मॉडल के लिए एक पहेली बनी हुई थी। यदि व्यक्ति को अपने सेवानिवृत्ति वर्ष का पता है, तो उसे उपभोग पर अपने व्यय को कम करने की आवश्यकता क्यों है? व्यक्ति सेवानिवृत्ति के बाद भी सुचारू उपभोग के लिए योजना क्यों बना रहा है?

इस पहेली को हाल ही में शिकागो विश्वविद्यालय के एरिक हर्स्ट और रोचेस्टर विश्वविद्यालय के मार्क अगुइर ने सुलझाया। उन्होंने बड़ी संख्या में घरों के लिए खाद्य टोकरियों के डेटा सेट का अध्ययन किया। वे दिखाते हैं कि सेवानिवृत्ति के बाद उपभोग पर व्यय वास्तव में तेजी से कम हो जाता है, लेकिन उपभोग में ऐसी कोई गिरावट नहीं दिखती।

इसके बजाय, परिवार भोजन की खरीदारी करने और उसे खुद तैयार करने में ज़्यादा समय बिताते हैं। जब व्यक्ति सेवानिवृत्त हो जाता है, तो वास्तव में खाए जाने वाले भोजन की मात्रा और गुणवत्ता बनी रहती है, भले ही भोजन पर खर्च की जाने वाली राशि कम हो जाती है।
अतः जो नवशास्त्रीय उपभोग मॉडल के लिए प्रारम्भ में एक पहेली प्रतीत होता है, वह उपभोग पर व्यय किए गए धन के विपरीत, उपभोग का अध्ययन करने पर काफी सहायक सिद्ध होता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

8. यदि (r >), तो

क) खपत बढ़ेगी

ख) खपत कम हो जाएगी,

ग) उपभोग अपरिवर्तित रहेगा।

9. वर्तमान खपत इस पर निर्भर करती है:

क) वर्तमान और भविष्य की आय का पीवी,

(ख) केवल वर्तमान आय, (ग) केवल

भविष्य की आय।

10. उपरोक्त मॉडल की मान्यता से, सीमांत उपयोगिता धनात्मक है और ..... [रिक्त स्थान भरें]

5.5 सारांश

कीनेसियन उपभोग फलन उपभोग व्यवहार को समझने का आधार देता है। उनके अनुसार, वर्तमान उपभोग डिस्पोजेबल आय की पूर्ण मात्रा पर निर्भर करता है। कीनेसियन उपभोग फलन कहता है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है, उपभोग भी बढ़ता है, लेकिन आनुपातिक रूप से कम। कीनेस ने उपभोग फलन के लिए दो प्रस्ताव दिए। जैसे-जैसे आय बढ़ती है, c/y घटता है। यह शॉर्ट-रन और क्रॉस-सेक्शनल विश्लेषणों के लिए सही है। और हमेशा, MPC < APC। साइमन कुजनेट ने भी उपभोग फलन का एक दीर्घकालिक पहलू देकर यहाँ योगदान दिया।

लॉग-रन में, एमपीसी = एपीसी, और इसलिए एपीसी अपरिवर्तित रहता है। फिशर का इंटरटेम्पोरल ऑप्टिमाइजेशन मॉडल कई अन्य मॉडलों का आधार है। इसने वर्तमान और भविष्य की खपत पर उपभोक्ता के निर्णय को समझाया। शुरुआत में, मॉडल पर केवल दो अवधियों के साथ चर्चा की गई। उसके बाद, इस पर बहु-अवधि अनुकूलन मॉडल के साथ चर्चा की गई। यह कहता है कि वर्तमान खपत न केवल वर्तमान आय पर बल्कि भविष्य की आय पर भी निर्भर करती है। यदि अपेक्षित भविष्य की आय बढ़ती है तो व्यक्ति अपनी वर्तमान खपत बढ़ाएगा। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि वर्तमान खपत भविष्य की आय धारा के वर्तमान मूल्य पर निर्भर है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

5.6 शब्दावली

व्यापार चक्र: अर्थव्यवस्था के विस्तार और संकुचन का पैटर्न।

उपभोक्ता व्यय: उपभोक्ताओं द्वारा व्यय।

उपभोग फलन: उपभोग को प्रयोज्य आय से संबंधित समीकरण।

क्रेडिट राशनिंग: प्रचलित ब्याज दर पर व्यक्तियों द्वारा उधार ली जा सकने वाली धनराशि को सीमित करना।

बचत में कमी: नकारात्मक बचत; संचित धन से उधार लेना/खर्च करना।

राजकोषीय नीति: सरकारी खरीद, हस्तांतरण भुगतान और कर संरचना के संबंध में सरकारी नीति।

जीवन-चक्र परिकल्पना: उपभोग सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि उपभोक्ता कुल जीवन आय में से उपभोग करते हैं और बचत करते हैं तथा सेवानिवृत्ति के लिए योजना बनाते हैं।

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (एमपीसी): प्रयोज्य आय में एक इकाई की वृद्धि के कारण उपभोग में वृद्धि।

उपभोग की सीमांत उपयोगिता: किसी वस्तु की अतिरिक्त इकाई के उपभोग से उपयोगिता में वृद्धि।

5.7 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. उपभोग व्यय पर कीन्सियन प्रस्ताव की व्याख्या करें।
2. कीनेसियन उपभोग फलन की व्याख्या करें तथा योगदान पर भी चर्चा करें
   साइमन कुज़नेट्स द्वारा लिखित।
3. उपभोक्ता के दो-अवधि अनुकूलन मॉडल की व्याख्या करें।
4. वर्तमान या भविष्य की आय में कोई भी वृद्धि वर्तमान उपभोग और भविष्य के उपभोग दोनों को बढ़ा सकती है। समझाइए।
5. इरविन फिशर के इंटरटेम्पोरल ऑप्टिमाइजेशन मॉडल की व्याख्या करें।
6. फिशर का इंटरटेम्पोरल ऑप्टिमाइजेशन मॉडल किस प्रकार उत्तर प्रदान करता है?
   कीन्सियन प्रस्ताव में उठने वाले प्रश्न?

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

5.8 पाठ्य-अध्याय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. एमपीसी = 0.96
2. बी) ए.पी.सी. में वृद्धि होगी
3. सी) एपीसी < एमपीसी
4. गिरता / घटता है
5. बी) पैसा उधार लें
6. क) नकारात्मक बचत
7. c) C0 और C1 दोनों बढ़ेंगे 8. b) खपत

घटेगी

9. क) वर्तमान और भविष्य की आय का पीवी
10. ह्रासमान

5.9 संदर्भ

ब्रैनसन, डब्ल्यू. (2013). मैक्रोइकॉनॉमिक्स: थ्योरी एंड पॉलिसी, तीसरा संस्करण, ईस्ट वेस्ट प्रेस.

5.10 सुझाए गए पठन सामग्री

डोर्नबुश, आर, फिशर, एस. (1994). मैक्रोइकॉनॉमिक्स, 6वां संस्करण, मैकग्रॉ-हिल.

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ 6

उपभोग व्यय के सिद्धांत

डॉ. स्वरूप संतरा सहायक
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

संरचना

6.0 सीखने के उद्देश्य 6.1 परिचय 6.2
जीवन-चक्र परिकल्पना

6.3 स्थायी आय परिकल्पना (पीआईएच)

6.4 सापेक्ष आय परिकल्पना 6.5 उपभोग व्यय के
अन्य सिद्धांत 6.6 सारांश 6.7 शब्दावली 6.8 स्व-मूल्यांकन प्रश्न 6.9 पाठ में प्रश्नों
के उत्तर

6.10 संदर्भ

6.11 सुझाए गए पठन

6.0 सीखने के उद्देश्य

जीवन-चक्र परिकल्पना के सिद्धांत को समझाने के लिए

स्थायी आय परिकल्पना के सिद्धांत को समझाने के लिए

सापेक्ष आय परिकल्पना के सिद्धांत को समझाने के लिए

6.1 परिचय

उपभोग के तीन सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं, जैसे एंडो-मोदिग्लिआनी की जीवन-चक्र परिकल्पना, फ्रीडमैन की स्थायी आय परिकल्पना और ड्यूसेनबेरी की जीवन-चक्र परिकल्पना।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

सापेक्ष आय परिकल्पना। इस पाठ में, उपभोग के इन तीन सिद्धांतों पर चर्चा की गई है। इसकी शुरुआत एंडो-मोदिग्लिआनी की जीवन-चक्र परिकल्पना से होगी, फिर फ्रीडमैन की ओर रुख करेंगे। फ्रीडमैन का मॉडल मुख्य रूप से भविष्य की आय अवधि के पीवी के उपचार में भिन्न है, खासकर इस बात में कि वे अपनी परिकल्पना के सांख्यिकीय परीक्षण के लिए इस अवधि को अवलोकनीय आर्थिक चर से कैसे जोड़ते हैं। ड्यूसेनबेरी की सापेक्ष आय परिकल्पना कहती है कि उपभोग न केवल व्यक्ति की पूर्ण आय पर निर्भर करता है, बल्कि जनसंख्या के आय वितरण में उनकी सापेक्ष स्थिति पर भी निर्भर करता है। अंत में, हॉल की तर्कसंगत अपेक्षा परिकल्पना पर भी चर्चा की जाएगी।

6.2 जीवन-चक्र परिकल्पना

मोदिग्लिआनी और एंडो द्वारा उपभोग का एक महत्वपूर्ण पोस्ट-कीनेसियन सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है, जिसे जीवन चक्र परिकल्पना सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। जीवन चक्र सिद्धांत के अनुसार, किसी भी अवधि में उपभोग उस अवधि की वर्तमान आय का कार्य नहीं होता है, बल्कि पूरे जीवनकाल की अपेक्षित आय का कार्य होता है। इस प्रकार, जीवन चक्र परिकल्पना में, व्यक्ति को अपने पूरे जीवनकाल में अपनी अपेक्षित आय के आधार पर उपभोग और व्यय के पैटर्न की योजना बनाने के लिए माना जाता है। यह भी माना जाता है कि व्यक्ति उपभोग के कमोबेश स्थिर या थोड़े बढ़ते स्तर को बनाए रखते हैं। हालाँकि, उपभोग का यह स्तर उसके जीवनकाल की आय की अपेक्षाओं द्वारा सीमित होता है।

इस सिद्धांत के अनुसार एक सामान्य व्यक्ति अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में या तो दूसरों से उधार लेकर या अपने माता-पिता से प्राप्त संपत्ति को खर्च करके उपभोग पर खर्च करता है।
अपने मुख्य कार्य वर्षों में, वह अपनी आय से कम उपभोग करता है और इसलिए शुद्ध सकारात्मक बचत करता है। वह इन बचतों को परिसंपत्तियों में निवेश करता है, यानी धन संचय करता है, जिसका वह भविष्य में उपभोग करता है। सेवानिवृत्ति के बाद अपने जीवनकाल में, वह फिर से बचत करता है, यानी अपने जीवन के इन बाद के वर्षों में अपनी आय से अधिक उपभोग करता है, लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद अपने जीवनकाल में अपने उपभोग को बनाए रखने या थोड़ा बढ़ाने में सक्षम होता है।

नीचे दिए गए चित्र में एक औसत व्यक्ति की विशिष्ट आय धारा को y वक्र के रूप में दिखाया गया है। और उपभोग के थोड़े बढ़ते स्तर को सीधी रेखा c द्वारा दर्शाया गया है। यहाँ, T अपेक्षित जीवनकाल है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

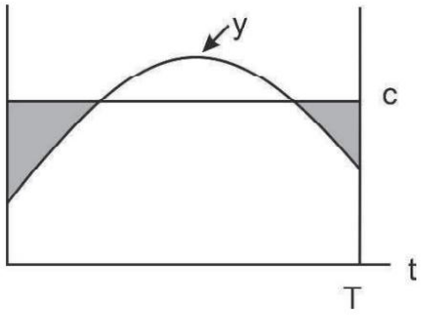

चित्र 6.1

उपरोक्त चित्र 6.1 से पता चलता है कि किसी व्यक्ति के जीवन के प्रारंभिक वर्षों में, व्यक्ति की खपत उसकी आय से अधिक है। इसलिए, वह व्यक्ति शुद्ध उधारकर्ता है (कर में) (पहला छायांकित क्षेत्र) मध्य वर्षों में, किसी व्यक्ति की आय उसकी आय से अधिक होती है। खपत। इसलिए, व्यक्ति पिछले ऋण का भुगतान करने के बाद भी अधिक बचत करता है। बाद में वर्षों से, व्यक्ति की खपत आय से अधिक है। व्यक्ति वित्त का प्रबंध करता है दूसरे छायांकित क्षेत्र में बचत से अतिरिक्त खपत)।

अब, जीवन-चक्र परिकल्पना में, यदि हम एक क्रॉस-सेक्शनल बजट बनाते हैं जनसंख्या का एक नमूना यादृच्छिक रूप से चुनकर और नमूने को वर्गीकृत करके अध्ययन करना उनकी आय का स्तर, फिर

उच्च आय वर्ग में औसत से अधिक अनुपात होगा
जो लोग अपने जीवन के मध्य वर्षों में हैं। और इस प्रकार, उनके पास अपेक्षाकृत अधिक है
कम उपभोग-आय अनुपात (सी/वर्ष)।

इसी प्रकार, निम्न आय वर्ग में अपेक्षाकृत अधिक लोग शामिल होंगे
मुख्य रूप से आयु वितरण के दोनों छोर पर हैं। और इस प्रकार, उनके पास अपेक्षाकृत
उच्च उपभोग-आय अनुपात (सी/वर्ष)।

इस प्रकार, यदि जीवन-चक्र सिद्धांत सत्य है, तो एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन c/y दिखाएगा आय बढ़ने पर गिरावट। यह MPC < APC की व्याख्या कर रहा है।

प्रतिनिधि उपभोक्ता i के लिए, यदि कुल आय का वर्तमान मूल्य (PVi) उसका पूरा जीवन काल कमोबेश आनुपातिक रूप से बढ़ता है, फिर उसका सारा उपभोग ( ) सीटी , कमोबेश आनुपातिक रूप से बढ़ता है।

सी के पीवी ; 0 क 1 .. 1

टिप्पणियाँ

स्व निर्देशात्मक सामग्री 111

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

जहाँ, i k PV\का गुणांक है। यह PV का वह अंश निर्धारित करता है जो वह है
अवधि t में उपभोग करना चाहता है। i k का मान a) उसकीउदासीनता के आकार पर निर्भर करता है
वक्र, बी) ब्याज दर, और सी) उपभोक्ता की व्यक्तिगत छूट दर।

यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है: यदि किसी आय प्रविष्टि में वृद्धि होती है (इसे
वर्तमान या भविष्य), इसके परिणामस्वरूप समग्र पीवी में वृद्धि होती है। फिर, पीवी का i k अंश
भी बढ़ेगी। इसका मतलब है कि इससे चालू अवधि की खपत बढ़ जाती है
कुंआ।

अब, यदि a) क्षेत्र और आय के आधार पर जनसंख्या वितरण अपेक्षाकृत स्थिर है
और बी) वर्तमान और भविष्य की खपत के बीच स्वाद और प्राथमिकताएं स्थिर हैं
समय के साथ, तो हम एक स्थिर समग्र कार्य प्राप्त कर सकते हैं:

सी के पीवी . 2

जहाँ, k स्थिर है.

अब, सिद्धांत में अपेक्षित आय के एक फलन के रूप में उपभोग को शामिल किया गया है,
पीवी में अपेक्षित आय धाराएं शामिल हैं। अपेक्षित आयें अवलोकनीय नहीं हैं, इसलिए
वे मापने योग्य नहीं हैं। इसलिए, PV मापने योग्य नहीं रह जाता। अब, बदलने के लिए
गैर-मापनीय पीवी को मापने योग्य में बदलने के लिए, हमें कुछ मान्यताओं की आवश्यकता है। एंडो और
मोदिग्लिआनी ने आय को दो घटकों में विभाजित किया - श्रम से आय (yL) और
संपत्ति या सम्पत्ति से आय (yP)। इस प्रकार,

$$\text{पीवी}_0 = \sum_{0}^{t} \frac{y^{l}_{t}}{(1+r)^{t}} + \sum_{0}^{t} \frac{y^{p}_{t}}{(1+r)^{t}} \quad . 3$$

जहाँ, समय 0 वर्तमान अवधि है, और t शून्य से शेष तक है
जीवन के वर्ष.

अब, यदि पूंजी बाजार कुशल हैं, तो हम मान सकते हैं कि पी.वी.
संपत्ति से आय संपत्ति के मूल्य (कीमत) के बराबर होती है। मान लीजिए, a वास्तविक आय है $_0$
अवधि की शुरुआत में घरेलू निवल संपत्ति, फिर,

$$\sum_{0}^{t} \frac{y^{p}_{t}}{(1+r)^{t}} = a_0 \quad . 4$$

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

अब, हम ज्ञात वर्तमान श्रम आय ( ) y को से अलग कर सकते हैं $y_0^{एल}$

अज्ञात या अपेक्षित भावी श्रम आय। तब हम PV को इस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं,

$$पीवी_{00}वाई^{एल} \quad \frac{य^{एल}_{टी}}{1_{1}^{टी} \quad 1_{आर}^{टी}} \quad ए_0 \qquad . 5$$

अब समय 0 में औसत अपेक्षित श्रम आय,

$$य^{ई}_0 \quad \frac{1}{टी \quad 1} \quad \frac{य^{एल}_{टी}}{1_{1}^{टी} \quad 1_{आर}^{टी}} \qquad . 6$$

जहाँ, (T – 1) शेष जीवन प्रत्याशा है।

उपरोक्त समीकरण से, हम प्राप्त कर सकते हैं,

$$\frac{य^{एल}_{टी}}{1_{1}^{टी} \quad 1_{आर}^{टी}} \quad टी \; वाई^{ई}_0 \qquad .7$$

इसलिए, आय धारा का वर्तमान मूल्य इस प्रकार लिखा जा सकता है,

$$पीवी_{एलयूई}वाई \; टी \; हां \quad 1^{ई}_{00} \qquad .. \; 8$$

यहाँ, y अप्राप्य है और इसे मापा नहीं जा सकता। इसे प्रेक्षणीय बनाने के लिए,

मान लीजिए कि औसत अपेक्षित श्रम आय वर्तमान श्रम आय का एक गुणक है
आय; इसलिए,

$$Y_{0}^{ई}y^{एल}_0 \; ; \qquad 0 \qquad . 9$$

इसमें यह माना गया है कि यदि वर्तमान आय बढ़ती है, तो लोग अपनी अपेक्षाओं को समायोजित कर लेते हैं।
भविष्य की आय में वृद्धि इस प्रकार होती है कि ye में वृद्धि yL के अंश के अनुसार होती है । इसलिए, में वृद्धि
वर्तमान आय सम्पूर्ण अपेक्षित आय धारा को स्थानांतरित कर देती है और इस प्रकार इसका आकार बहुत बड़ा हो जाता है
वर्तमान उपभोग पर प्रभाव.

अब, हम PV को इस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं,

$$पीवी_{00}वाई^{एल} \quad टी \; हां^{1}_{00}$$

$$पीवी_0 \quad [1 \quad टी \; हां_{1}]^{एल}_{00} \qquad .. \; 10$$

अब, पी.वी. में सभी घटक मापनीय हैं।

तब, खपत भी मापने योग्य होगी,

$$सी_{0}के \; टी \; वाईके \; ए^{एल}_{00} \qquad .. \; 11$$

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

या, सी0का एम वाई एल

जहाँ, M 1 क टी 1

यहाँ, M कुल MPC है।

और एमपीसी एमपीसी एमपीसी य एल य पी

और अल्पकाल में, K a स्थिर है। 0

उपभोग पर अमेरिकी वार्षिक आंकड़ों का एक उदाहरण:

उपरोक्त समीकरण (11) एंडो-मोडिग्लिआनी समीकरण का सांख्यिकीय रूप से मापने योग्य रूप है

उपभोग फ़ंक्शन। एंडो-मोडिग्लिआनी ने a और y के गुणांकों का अनुमान लगाया एल

अमेरिकी वार्षिक डेटा का उपयोग करते हुए। उपभोग फ़ंक्शन का अनुमानित समीकरण है:

सेल्सियस0.7वर्ष एल 0.06 ए . 12

अतः यहाँ k 0.06 तथा M 0.7 है

उपरोक्त अनुमानित समीकरण कहता है कि वास्तविक श्रम आय में एक इकाई की वृद्धि
वास्तविक उपभोग में 0.7 इकाई की वृद्धि होगी।
श्रम आय 0.7 है और परिसंपत्तियों से उपभोग करने की सीमांत प्रवृत्ति 0.06 है।

जैसा कि हम जानते हैं, M 1 हम इसे इस प्रकार टी 1 M और k का मान रखने के बाद
प्राप्त कर सकते हैं:

0.7 0.06 1 1 टी

अब, यदि हम T का मान जानते हैं, जो कि औसत शेष जीवनकाल है, तो हम यह कर सकते हैं
के मूल्य का अनुमान लगाएं मोटे तौर पर, अगर हम यह मान लें कि औसत शेष जीवनकाल है
45 वर्ष, तब हम प्राप्त कर सकते हैं,

0.7 0.06 1 45 1 .

इसलिए, अनुमानित मूल्य है इसका तात्पर्य है कि जब वर्तमान श्रम 25
आय में 100 इकाई की वृद्धि होती है, तो औसत अपेक्षित श्रम आय का अनुमान
25 इकाई की वृद्धि हुई।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

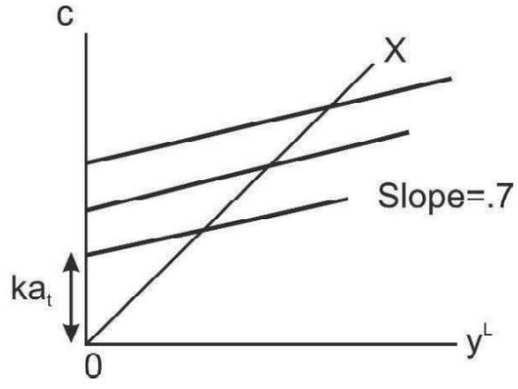

चित्र 6.2

फ़ंक्शन का ढलान - श्रम आय में से उपभोग करने की सीमांत प्रवृत्ति

एल - परिसंपत्तियों के स्थिर रहने पर अल्पावधि चक्रीय उतार-चढ़ाव का गुणांक है।

हालाँकि, दीर्घावधि में, बचत के कारण परिसंपत्तियों में वृद्धि होती है, तथा उपभोग-आय में वृद्धि होती है।

फ़ंक्शन a बढ़ने पर ऊपर की ओर खिसकता है। अनुभवजन्य परिणाम ऊपर चित्र 6.2 में दिखाया गया है।

अब समीकरण (13) को yt से विभाजित करने पर हम प्राप्त कर सकते हैं,

$$\frac{\text{सी}_{\text{टीटी टी}}}{\text{वर्ष}_{\text{टीटी टी}}} 0.7 \frac{\text{एल}}{\text{वर्ष}} 0.06 \frac{\text{ए}}{\text{वर्ष}} \qquad १३$$

c/y अनुपात स्थिर रहेगा यदि yy – कुल आय में श्रम/का हिस्सा – और

a/y - परिसंपत्तियों या पूंजी से उत्पादन का अनुपात - अर्थव्यवस्था के अनुसार लगभग स्थिर है
एक प्रवृत्ति के साथ बढ़ता है.

अमेरिकी डेटा का उपयोग करके, एंग्लो-मोदिग्लिआनी ने अनुपात का अनुमान लगाया, y $\frac{\text{सी}_{\text{टी}}}{\text{टी}} = 0.71.$

कुल आय में से उपभोग करने की औसत प्रवृत्ति 0.7 पर स्थिर है।

इस प्रकार, उपभोग व्यवहार का एंडो-मोदिग्लिआनी मॉडल तीनों पहलुओं की व्याख्या करता है
देखी गई खपत परिघटनाओं का। यह जीवन-चक्र परिकल्पना द्वारा क्रॉस-सेक्शनल बजट अध्ययनों के MPC A^APC
परिणाम की व्याख्या करता है। यह इसके लिए एक स्पष्टीकरण प्रदान करता है
उपभोग का चक्रीय व्यवहार, जिसमें उपभोग-आय अनुपात विपरीत रूप से संबंधित है
आय को अल्पकालिक फ़ंक्शन के रूप में दर्शाता है। यह c/y की दीर्घकालिक स्थिरता को भी स्पष्ट करता है
अनुपात। यह स्पष्ट रूप से उपभोग फ़ंक्शन में एक व्याख्यात्मक चर के रूप में परिसंपत्तियों को शामिल करता है।

एंडो-मोडिग्लिआनी मॉडल फिशरियन इंटरटेम्पोरल मॉडल के करीब है
अनुकूलन मोड। यह समग्र रुझानों के लिए जनसांख्यिकी के महत्व को सामने लाता है

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

उपभोग पैटर्न। हालाँकि, कई अर्थशास्त्रियों ने इस नीति के इस्तेमाल पर सवाल उठाए हैं
औसत वर्तमान श्रम आय का अनुमान लगाकर भविष्य की औसत श्रम आय का अनुमान लगाना।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

1. यदि अनुमानित उपभोग फलन है: C 0.65 वर्ष एम 0.09 ए.सी.ई तो फिर क्या है
एमपीसी को धन आय से कैसे अलग किया जाए?

2. जीवन-चक्र परिकल्पना में, उपभोग फलन है:

क) चिकनी एवं नीचे की ओर ढलान वाली,

ख) चिकनी एवं ऊपर की ओर ढलान वाली,

ग) चिकना और क्षैतिज,

घ) उतार-चढ़ाव एवं गिरावट की प्रवृत्ति।

3. सेवानिवृत्ति के बाद उपभोग इस प्रकार किया जाता है:

क) पिछली बचत से, ख) पुनर्नियोजन ग) उपभोग न करना

6.3 स्थायी आय परिकल्पना (पीआईएच)

मिल्टन फ्रीडमैन की पीआई परिकल्पना इस बुनियादी अंतर्ज्ञान से उत्पन्न होती है कि व्यक्ति
हम उपभोग को सुचारू रखना चाहेंगे और इसमें अल्पावधि के उतार-चढ़ाव के साथ उतार-चढ़ाव नहीं आने देंगे।
आय। उन्होंने यह समझाने की कोशिश की कि आय उपभोग की तुलना में अधिक अस्थिर क्यों है और क्यों
आय से बाहर उपभोग करने की दीर्घकालीन सीमांत प्रवृत्ति अल्पकालीन सीमांत आय से अधिक होती है
इन सवालों के जवाब में उन्होंने कहा कि व्यक्ति अपने उपभोग का आधार
आय के माप का दीर्घकालिक दृष्टिकोण, संभवतः जीवन भर की संपत्ति की धारणा
एक लंबे क्षितिज पर फैला हुआ है। मूल परिकल्पना यह है कि एक स्थायी
आय के आधार पर, व्यक्ति प्रत्येक अवधि में इसका केवल एक अंश ही उपभोग करता है, और इस प्रकार औसत
उपभोग की प्रवृत्ति सीमांत उपभोग की प्रवृत्ति के बराबर होगी।
कई कारक प्रवृत्ति को प्रभावित करते हैं, जैसे ब्याज दर और स्वाद शिफ्टर
वे चर हो सकते हैं, या वे अनिश्चितता आदि को प्रतिबिंबित कर सकते हैं।

फ्राइडमैन व्यक्तिगत उपभोक्ता उपयोगिता अधिकतमीकरण की धारणा से शुरू करते हैं,
जो व्यक्ति के उपभोग और वर्तमान मूल्य के बीच संबंध बताता है
(पीवी).

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

सी एफ पीवी ; एफ 0 . 14

फ्राइडमैन का दृष्टिकोण एंडो-मोदिग्लिआनी से भिन्न है, जो पी.वी. के उपचार से शुरू होता है। फ्रीडमैन ने पी.वी. से स्थायी आय की अवधारणा इस प्रकार प्रस्तुत की:

वर्ष पीवी . 15

स्थायी आय (y) को PV को की दर से गुणा करके प्राप्त किया जा सकता है वापसी आर. इस स्थायी आय में मानव पूंजी शामिल है - भविष्य का वर्तमान मूल्य श्रम आय.

फ्राइडमैन ने भी एक सुचारू और कमोबेश समतल उपभोग पैटर्न की कल्पना की थी। उनके अनुसार, स्थायी उपभोग ( ) c स्थायी आय के समानुपातिक है।

सी के वाई .. 16

कहाँ, क स्थायी उपभोग और स्थायी आय का अनुपात है।

i k निर्भर करता है a) ब्याज दर पर, b) व्यक्तिगत स्वाद पर, और c) परिवर्तनशीलता पर अपेक्षित आय का। और यदि ये सभी कारक आय के स्तर से जुड़े नहीं हैं, तब यह माना जा सकता है कि औसत k सभी आय वर्गों के लिए समान होगा; तथा जो जनसंख्या औसत, k के बराबर होगा । इसलिए, औसत स्थायी उपभोग प्रत्येक आय वर्ग में उसकी औसत स्थायी आय का k गुना होगा :

सी के वाई 17

अब, यह माना जाता है कि कुल आय y स्थायी आय से बनी है

y प्लस एक यादृच्छिक क्षणिक आय घटक य , ऐसा है कि

वर्ष pt 18

आय का क्षणिक घटक धनात्मक, ऋणात्मक या शून्य हो सकता है।

इसी प्रकार, कुल खपत (C स्थायी उपभोग से बना है

(सीपी प्लस एक यादृच्छिक क्षणिक-खपत घटक (सीटी । और क्षणिक)

उपभोग का घटक धनात्मक, ऋणात्मक या शून्य हो सकता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

सीसीसी 19

मान्यताएं:

(ए) ओवी वाई 0

स्थायी आय और अस्थायी आय के बीच कोई संबंध नहीं है।
क्षणिक घटक की आय पूरी तरह से यादृच्छिक है। और इसका औसत मूल्य
क्षणिक आय शून्य है, अर्थात y 0 वाईसलिए, औसत कुल
आय औसत स्थायी आय के बराबर है। आय वर्ग इससे अधिक है
जनसंख्या की औसत आय है 0 वाईसवर्गमले में, कुल
आय स्थायी आय से अधिक है। दूसरी ओर, यदि आय स्थायी आय से अधिक है।
वर्ग जनसंख्या औसत से नीचे है, तो क्षणिक आय ऋणात्मक है, 0 y ।
इस मामले में, कुल आय स्थायी आय से कम है।

(बी) सी ओवीसी सी 0

स्थायी उपभोग और क्षणिक उपभोग के बीच कोई संबंध नहीं है
उपभोग। क्षणिक घटक उपभोग पूरी तरह से यादृच्छिक है। और
क्षणिक खपत का औसत मूल्य शून्य है, अर्थात 0 Ct । अत:,
सीसी , औसत कुल खपत स्थायी खपत के औसत के बराबर है
उपभोग।

(सी) सीओव्हसी व्हाई 0

आय के क्षणिक घटक और व्यय के बीच कोई संबंध नहीं है।
उपभोग का क्षणिक घटक। आय में कोई भी अचानक वृद्धि नहीं होगी
खपत को तुरंत बढ़ाने में सक्षम हो सकेंगे।
जैसा 0, Ct तो हमारे पास CC हो सकता है .
अत:, CC ky . 20

अब, क) जनसंख्या औसत से ऊपर आय समूह के लिए:

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

य 0 और yy , पी

लेकिन, सी केवाई पी . इस तरह, सी क .

हालाँकि, इसे इस प्रकार लिखा जा सकता है, yy , y सी क .

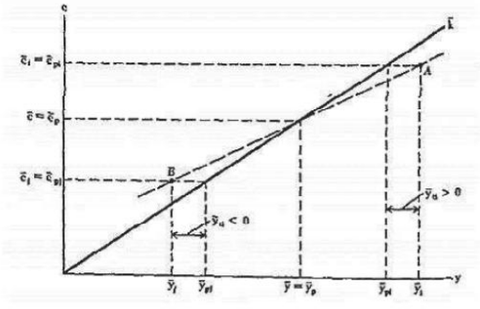

चित्र 6.3

उपरोक्त ग्राफ में, आकृति 6.3 में, AB वास्तविक उपभोग रेखा (क्रॉस) है अनुभागीय उपभोग फ़ंक्शन)। उपरोक्त चित्र में बिंदु A पर, आय समूह है औसत जनसंख्या से ऊपर है। और बिंदु A पर, कुल आय औसत जनसंख्या से अधिक है।

स्थायी आय। इसलिए, क्षणिक आय सकारात्मक है। और बिंदु A पर, सी क .
य

(ख) जनसंख्या औसत से नीचे आय समूह:

t y और 0 yy, पी

लेकिन, सी केवाई पी . अतः, y pi सी क .

हालाँकि, इसे इस प्रकार लिखा जा सकता है, yy , p y सी क .

उपरोक्त चित्र में, बिंदु B जनसंख्या से नीचे के आय समूह को दर्शाता है औसत।

तथा बिन्दु B पर, y सी क .

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

c) k रेखा के अनुदिश, $\frac{\text{सीसी}}{\text{वर्ष पीपी}} \frac{\text{पी}}{\text{क}}$, स्थिर।

k रेखा के अनुदिश, MPC = APC; तथा APC स्थिर है।

AB रेखा के अनुदिश, MPC < APC, क्योंकि AB रेखा k रेखा से अधिक चपटी है।

समय के साथ, जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था बढ़ती है, क्रॉस-सेक्शनल उपभोग फ़ंक्शन ऊपर की ओर खिसकता है, जैसा कि नीचे चित्र 6.4 में दिखाया गया है।

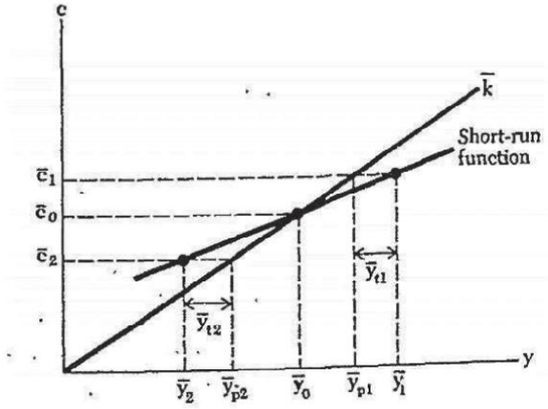

चित्र 6.4

दीर्घकाल में, k रेखा के अनुदिश APC स्थिर रहती है।

चक्रीय रूप से, क्षणिक आय धनात्मक, ऋणात्मक या शून्य हो सकती है।

बूम अवधि के दौरान, जैसे-जैसे y, k रेखा के साथ बढ़ता है, तो क्षणिक आय सकारात्मक है। मंदी की अवधि के दौरान, जैसे-जैसे y k रेखा के साथ घटता है, तब क्षणिक आय ऋणात्मक है। और सामान्य समय में, y k के साथ स्थिर रहता है रेखा, तो क्षणिक आय शून्य है.

क्रॉस-सेक्शनल बजट अध्ययन में,

i) अल्पावधि में, MPC < APC, तथा

ii) दीर्घकाल में, MPC = APC; APC स्थिर रहती है।

iii) दीर्घकाल में, सी.पी. वित्तीय वर्ष पी

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

हालाँकि, यह मॉडल एंडो-मोडिग्लियानी जीवन-चक्र की तुलना में कम संतोषजनक है
मॉडल, क्योंकि:

a) PHI में, परिसंपत्तियों को केवल निहित रूप से निर्धारक के रूप में माना जाता है
स्थायी आय.

ख) तथा स्थायी आय और अस्थायी आय कम दिखाई देती है।

स्थायी आय और अनुकूली अपेक्षा:

स्थायी आय परिकल्पना में, स्थायी आय का अनुमान लगाना कठिन है
क्योंकि वास्तविक आय के केवल पिछले मूल्य ही ज्ञात हैं। इसलिए, स्थायी आय का अनुमान लगाने के लिए
आय के मामले में, फ्राइडमैन ने अनुकूली अपेक्षा दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने कुछ बातों पर विचार किया
यह मान्यता है कि स्थायी आय का स्रोत वास्तविक आय से छोटा है।
फ्राइडमैन की अनुकूली अपेक्षा की प्रक्रिया को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

पी पी YY YY १ ११ टट ट .. 21

जहाँ, 0 < < 0

यहाँ, पी वर्ष 1 पिछली अवधि की त्रुटि है। और इस अवधि की स्थायी आय

अंतिम अवधि की त्रुटि की सहायता से Yt-1 से संशोधित किया गया है ।

य य य 1 1 पी 1 22

अब,

सी पी kY पी

क 1 वाई 1 केवाई पी 1 .. 23

लेकिन, हम यह भी जानते हैं कि, सी पी kY पी 1

इस तरह, सीके वाईसी 1 1 पी 1 . 24

इसलिए. सीटी पी निर्भर करता है i) 1, पिछले वर्ष की वास्तविक आय, और

ii) पिछले पी वर्ष की स्थायी आय .

और जीवन-चक्र मॉडल की तुलना में, जीवन-चक्र मॉडल में और 0 पी सीटी 1
स्थायी आय परिकल्पना में एक समान भूमिका निभाते हैं। इसलिए, यह भेद करना मुश्किल है
अनुभवजन्य विश्लेषण में ये दो मॉडल।

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

केस स्टडी: 2008 की कर छूट

2007-08 में गंभीर वित्तीय संकट के परिणामस्वरूप, अमेरिकी अर्थव्यवस्था मंदी की ओर बढ़ रही थी। मंदी की ताकतों का मुकाबला करने के लिए, अमेरिकी कांग्रेस ने आर्थिक प्रोत्साहन अधिनियम पारित किया, जिसके तहत परिवारों को एकमुश्त 100 बिलियन डॉलर की कर छूट प्रदान की गई।

एकल व्यक्तियों को $300 से $600, दम्पतियों को $600 से $1,200 तथा बच्चों वाले परिवारों को प्रति बच्चे अतिरिक्त $300 प्राप्त हुए। जिन उपभोक्ताओं को पहले भुगतान प्राप्त हुआ, उनके व्यय व्यवहार की तुलना बाद में भुगतान प्राप्त करने वालों के व्यवहार से करके, शोधकर्ता इस यादृच्छिक भिन्नता का उपयोग करके क्षणिक कर कटौती के प्रभाव का अनुमान लगा सकते हैं।

शोधकर्ताओं ने पाया कि औसतन, परिवारों ने अपने प्रोत्साहन भुगतान का लगभग 12 से 30 प्रतिशत, विनिर्देश के आधार पर, गैर-टिकाऊ उपभोग वस्तुओं और सेवाओं (जैसा कि उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण में परिभाषित किया गया है) पर तीन महीने की अवधि के दौरान खर्च किया, जिसमें भुगतान प्राप्त हुए थे। यह प्रतिक्रिया सांख्यिकीय और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है।

उन्होंने टिकाऊ वस्तुओं और संबंधित सेवाओं, मुख्य रूप से वाहनों की खरीद पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पाया, जिससे प्राप्ति की तीन महीने की अवधि के दौरान कुल उपभोग व्यय की औसत प्रतिक्रिया भुगतान के लगभग 50 से 90 प्रतिशत तक पहुंच गई।

इस अध्ययन के निष्कर्ष स्थायी आय परिकल्पना की भविष्यवाणी के बिल्कुल विपरीत हैं। यदि परिवार समय के साथ अपने उपभोग को संतुलित कर रहे होते, जैसा कि स्थायी-आय परिकल्पना मानती है, तो उन्होंने तीन महीने की अवधि में कर छूट का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही खर्च किया होता, लेकिन डेटा खर्च पर छूट के बड़े प्रभाव को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त, यदि स्थायी-आय परिकल्पना सही होती, तो प्रारंभिक चेक प्राप्त करने वालों का व्यवहार बाद में चेक प्राप्त करने वालों से भिन्न नहीं होता, क्योंकि दोनों समूहों की स्थायी आय समान थी।

स्थायी-आय सिद्धांत यह मानने में सही हो सकता है कि स्थायी कर परिवर्तन अस्थायी करों की तुलना में उपभोक्ता खर्च को अधिक शक्तिशाली रूप से प्रभावित करते हैं। लेकिन 2008 के अनुभव से प्राप्त साक्ष्यों से, यह निष्कर्ष निकालना गलत लगता है कि अस्थायी कर परिवर्तनों के प्रभाव नगण्य रूप से छोटे हैं। कर नीति में बहुत ही अस्थायी परिवर्तन भी उपभोक्ताओं के खर्च को प्रभावित कर सकते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

4. जब कुल आय स्थायी आय से अधिक हो, तो

क) क्षणिक आय धनात्मक है,

ख) क्षणिक आय ऋणात्मक में,

ग) क्षणिक आय शून्य है।

5. जहाँ, 0 < < 1, तो यह इस प्रकार है:

क) आंशिक समायोजन, या

ख) पूर्ण समायोजन.

6) इस मॉडल की मान्यताओं से, C ovC C बराबर है

क) नकारात्मक, ख) सकारात्मक, या ग) शून्य.

6.4 सापेक्ष आय परिकल्पना

एक और मॉडल है, जिसे 1949 में ड्यूसेनबेरी द्वारा विकसित किया गया था। इसे कहा जाता है
सापेक्ष आय परिकल्पना। यह मॉडल जीवन-चक्र से काफी अलग है
परिकल्पना और स्थायी आय परिकल्पना। उपभोग पर आधारित था
जीवन-चक्र परिकल्पना (एंडो-मोदिग्लिआनी द्वारा) और दोनों में आय का वर्तमान मूल्य
स्थायी आय परिकल्पना (फ़्राइडमैन द्वारा)। हालाँकि, ड्यूसेनबेरी का विश्लेषण
दो सापेक्ष आय परिकल्पनाओं पर आधारित।

पहली परिकल्पना:

पहली परिकल्पना यह है कि उपभोक्ता अपने पूर्ण स्तर के बारे में चिंतित नहीं हैं।
शेष जनसंख्या के सापेक्ष उनका उपभोग कैसा है।
जीवन-चक्र परिकल्पना और स्थायी आय परिकल्पना में, किसी भी चीज़ की उपयोगिता
व्यक्तिगत उपभोग की पूर्ण मात्रा पर आधारित था, जैसे:

यूयू सीसी सी 0 1 , , ।, एन . हालाँकि, ड्यूसेनबेरी ने उपभोग को इसमें शामिल कर लिया

व्यक्ति की उपयोगिता अलग-अलग तरीके से कार्य करती है, जैसा कि नीचे दिए गए समीकरण में है:

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

तुम तुम $\frac{\text{सी}_0}{\text{आर}_0}, \text{आर}$, $\frac{\text{सी}_\text{ए}}{\text{ए}}$, ., $\frac{\text{सी}_\text{टी}}{\text{टी}}$. 25

जहाँ, सभी R शेष जनसंख्या के भारित औसत हैं
उपभोग। समीकरण (25) का तात्पर्य है कि उपयोगिता केवल तभी बढ़ती है जब व्यक्ति की
औसत के सापेक्ष खपत बढ़ जाती है।

उपरोक्त धारणा से, हम कह सकते हैं कि व्यक्ति का c APC (अर्थात, c/y)
अनुपात) आय वितरण में उसकी स्थिति पर निर्भर करेगा। यदि किसी व्यक्ति की आय गिरती है
जनसंख्या की औसत आय से नीचे है, तो व्यक्ति उस तक पहुँचने का प्रयास कर रहा है
औसत जनसंख्या का उपभोग मानक (अर्थात राष्ट्रीय औसत उपभोग
मानक) खपत बढ़ाकर। ऐसे मामले में, c/y बढ़ता है। दूसरी ओर,
औसत से अधिक आय वाले व्यक्ति का c/y अनुपात कम होगा क्योंकि इसमें
उपभोक्ता की मानक टोकरी खरीदने के लिए व्यक्ति की आय का छोटा अनुपात
यह क्रॉस-सेक्शन परिणाम की व्याख्या प्रदान करता है: कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है,
c/y अनुपात गिरता है, तथा MPC < APC होता है।

यदि आय प्रवृत्ति के अनुरूप बढ़ती है, तो आय का सापेक्ष वितरण स्थिर होता है।
इसका तात्पर्य यह है कि अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति की आय समान रूप से बढ़ती है।
अनुपात। तब c/y में परिवर्तन का कोई कारण नहीं होगा, क्योंकि सापेक्ष स्थिति
आय बढ़ने के बाद भी जनसंख्या में एक व्यक्ति की स्थिति वही रहेगी।
लोग प्रवृत्ति के अनुरूप अधिक कमाते हैं, वे आनुपातिक रूप से अपनी खपत बढ़ा सकते हैं
उनकी खपत और राष्ट्रीय औसत के बीच समान अनुपात बनाए रखना।
इसलिए, यह c/y अनुपात की दीर्घकालिक स्थिरता का स्पष्टीकरण प्रदान करता है (अर्थात,
एपीसी).

उपरोक्त चर्चा से हम कह सकते हैं कि यह विश्लेषण एक स्पष्टीकरण प्रदान करता है
दोनों क्रॉस-सेक्शन परिणामों के:

i) एम.पी.सी. < ए.पी.सी., तथा

ii) c/y की दीर्घकालिक स्थिरता (अर्थात, APC)।

दूसरी परिकल्पना:

ड्यूसेनबेरी के मॉडल की दूसरी परिकल्पना यह है कि वर्तमान उपभोग
वर्तमान आय केवल निरपेक्ष आय और सापेक्ष आय के वर्तमान स्तर से प्रभावित होती है।
उपभोग व्यक्ति द्वारा प्राप्त उपभोग के स्तर से भी प्रभावित होता है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पिछले समय में। उनके अनुसार, किसी भी परिवार के लिए स्तर को कम करना मुश्किल है
पहले प्राप्त उपभोग की मात्रा। हालांकि बचत को कम करना मुश्किल नहीं है,
खपत कम करना मुश्किल है। व्यक्ति कम से कम खपत का स्तर बनाए रखने की कोशिश करते हैं
वह जीवन जो उन्होंने पहले ही प्राप्त कर लिया है।

यह धारणा बताती है कि आय से बचत का औसत अनुपात इस पर निर्भर करता है
पिछली अधिकतम आय के सापेक्ष वर्तमान आय का स्तर। मान लीजिए, yˆ वह स्तर है जो
पहले प्राप्त की गई अधिकतम आय, s वास्तविक बचत है, और y वास्तविक प्रयोज्य है
आय। फिर, हम गणितीय रूप से लिख सकते हैं, जैसे:

$$\frac{s}{y} = \alpha_0 + \alpha_1 \frac{y}{\hat{y}} \qquad .. \ 26$$

समीकरण (26) के अनुसार, जैसे-जैसे वर्तमान आय पिछली आय के सापेक्ष बढ़ती है
अधिकतम आय, फिर $\frac{y}{\hat{y}}$, तो $\frac{s}{y}$ भी बढ़ जाती है। और यदि वर्तमान आय सापेक्ष रूप से गिरती है
यदि इसकी पिछली आय अधिकतम स्तर पर पहुंच जाती है, तो उसमें भी गिरावट आ जाती है। $\frac{s}{y}$

ड्यूसेनबेरी के बचत फ़ंक्शन (26) को उपभोग फ़ंक्शन में परिवर्तित किया जा सकता है,
जैसा;

$$\frac{c}{y} = 1 - \frac{s}{y}$$

$$\frac{c}{y} = 1 - \alpha_0 + \alpha_1 \frac{y}{\hat{y}}$$

$$\frac{c}{y} = 1 - \alpha_0 + \alpha_1 \frac{y}{\hat{y}} \qquad 27$$

समीकरण (27) कहता है कि जैसे-जैसे वर्तमान आय सापेक्ष गिरती है, $\frac{y}{\hat{y}}$ भी गिरता है और इसलिए, $\frac{c}{y}$ उगना।

फिर से, मान लीजिए कि g वास्तविक आय की वृद्धि दर है। यदि आय बढ़ती है
प्रवृत्ति के अनुरूप, तो पिछले वर्ष की आय पिछली उच्चतम आय होगी; और तब,

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

$$\frac{\hat{y}}{y} \quad 1 \quad \text{जी}_{y}$$

उदाहरण के लिए, यदि y प्रवृत्ति के अनुरूप 5% की दर से बढ़ता है, तो $\hat{}$ $\frac{y}{y}$ 1.05 होगा

और यह $\frac{\text{सी}}{y}$ स्थिर रहेगा, जैसा कि कुज़नेट्स द्वारा किए गए दीर्घकालिक विश्लेषण में अपेक्षित है।

हालाँकि, चूंकि आय प्रवृत्ति के अनुरूप उतार-चढ़ाव करती रहती है, $\frac{\text{सी}}{y}$ अनुपात व्युत्क्रमानुपाती रूप से भिन्न होगा

आय के साथ, $\hat{}$ के नकारात्मक गुणांक के कारण $\frac{y}{y}$, (a)1 समीकरण (27) में।

अब, हम उपभोग फ़ंक्शन (27) का MPC प्राप्त करना चाहते हैं। तो, गुणा करें
समीकरण (27) को y से गुणा करें, और फिर हम प्राप्त करते हैं;

$$\text{सी} \quad 1 \quad \text{अया} \quad {}_{1}\frac{\hat{y}^{2}}{y}$$

फिर y के संबंध में c का आंशिक व्युत्पन्न लें, हम प्राप्त करते हैं;

$$\frac{\text{सी}}{y} \quad 1 \quad {}_{\text{एक}_{0}} \quad 2\,\text{ए}\,{}_{1}\frac{\hat{y}}{y}$$

हम वह जानते हैं एमपीसी $\frac{\text{सी}}{y}$ परिभाषा के अनुसार। नया लिख सकते हैं;

$$\text{एमपीसी ए} \quad 1 \quad {}_{0} \quad 2\,\text{ए}\,{}_{1}\frac{y}{y} \qquad . \ 28$$

अब, समीकरण (28) से MPC और समीकरण (27) से APC की तुलना करने पर,
हम कह सकते हैं कि एमपीसी सी/वाई अनुपात से कम है। अल्पावधि में, पिछला शिखर
आय $y\hat{}$ पर स्थिर है , सापेक्ष आय परिकल्पना मॉडल का तात्पर्य है, MPC < APC।

रैचेट प्रभाव:

ड्यूसेनबेरी का मॉडल रैचेट प्रभाव को दर्शाता है। यह कहता है कि जब आय कम हो जाती है,
आय के रुझान के अनुसार बढ़ने पर खपत में कमी कम होती है, बजाय इसके कि यह बढ़ती है। दूसरे शब्दों में,
यदि आय बढ़ती है, तो उपभोग भी एक निश्चित अनुपात में बढ़ता है, लेकिन जब आय

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

गिरावट आती है, तो खपत भी गिरती है, लेकिन वर्ष के दौरान के अनुपात की तुलना में कम अनुपात में बढ़ोतरी।

इसे नीचे ग्राफ़िक रूप से समझाया जा सकता है।

मूल दीर्घकालीन उपभोग फलन है। आय, y, और उपभोग, c

दीर्घकालीन उपभोग फलन के साथ आगे बढ़ें। जैसे-जैसे आय, y, बढ़ती है, उपभोग, c,

भी उसी अनुपात में बढ़ता है। परिणामस्वरूप, लंबी अवधि में c/y अनुपात स्थिर रहता है।

दौड़ना।

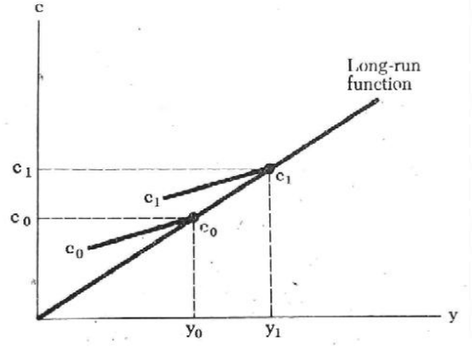

चित्र 6.5

हालाँकि, दीर्घकालीन उपभोग फलन पर बिंदु c_0 पर, जहाँ

उपभोग c है और आय ऊपर y_0 चित्र 6.5 में दर्शाई गई है, क्योंकि आय में गिरावट आती है

बंद और अर्थव्यवस्था मंदी का सामना करती है, c और y लंबे समय तक नीचे की ओर नहीं बढ़ते हैं

प्रवृत्ति रेखा पर चलते हैं, लेकिन वे अल्पावधि कार्य के साथ नीचे की ओर बढ़ते हैं, $सीसी_0$, चित्र में.

अल्पावधि cc उपभोग फ़ंक्शन का ढलान MPC_0 देता है, जैसा कि समीकरण में है

(28).

एक बार जब अर्थव्यवस्था में सुधार होने लगता है, आय बढ़ती है, तो यह अल्पावधि कार्य के साथ आगे बढ़ती है और पिछले उच्चतम आय स्तर पर दीर्घावधि प्रवृत्ति पर वापस पहुंच जाती है।

और अगर आय में आगे भी वृद्धि जारी रहती है, तो यह प्रवृत्ति रेखा के साथ बढ़ेगी। मान लीजिए, यह

दीर्घावधि प्रवृत्ति रेखा पर c पर एक और शिखर आय स्तर तक पहुँचता है। एक और उदाहरण पर विचार करें

मंदी के दौर में $सी_1$, तो खपत (सी) और आय (1 y) वापस गिर जाती है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

अल्पावधि उपभोग फ़ंक्शन। एक बार, अर्थव्यवस्था फिर से ठीक होने लगती है, आय
बढ़ता है, और अर्थव्यवस्था सीसी अल्पावधि उपभोग रेखा के साथ ऊपर की ओर बढ़ती है। और यह
दीर्घकालिक प्रवृत्ति रेखा पर बिंदु c पर पुनः पिछली शिखर आय पर पहुंच गया।

ड्यूसेनबेरी का सापेक्ष आय मॉडल इस तरह से रैचेट प्रभाव का संकेत देता है;

आय में गिरावट आती है, तो उपभोग में भी गिरावट आती है, लेकिन आय की प्रवृत्ति के अनुरूप वृद्धि होने पर यह गिरावट कम होती है।

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

7. ड्यूसेनबेरी का मॉडल कहता है कि उपभोग इस पर निर्भर करता है:

   क) पूर्ण आय,

   ख) सापेक्ष आय, ग) धन

   आय,

8. ड्यूसेनबेरी के मॉडल में, क्रॉस-सेक्शन विश्लेषण में

   ए) एमपीसी < एपीसी

   बी) एमपीसी = एपीसी

   सी) एमपीसी > एपीसी

9. जब आय गिरती है, तो उसे कम करना अधिक कठिन होता है,

   क) बचत,

   ख) निवेश

   ग) उपभोग

10. रैचेट प्रभाव कहता है कि जब आय कम हो जाती है, तो उपभोग भी कम हो जाता है, जबकि आय बढ़ने पर उपभोग बढ़ जाता है।

    क) अधिक आनुपातिक रूप से

    ख) कम आनुपातिक रूप से

    ग) समानुपातिक रूप से

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

6.5 उपभोग के अन्य सिद्धांत व्यय

हॉल का तर्कसंगत अपेक्षा दृष्टिकोण:

तर्कसंगत अपेक्षा दृष्टिकोण के अनुसार, लोग पूरी जानकारी का उपयोग करते हैं
भविष्य की आय की उम्मीद है.

आइए फिशर के अंतर-कालिक सिद्धांत से ली गई उपभोग की अवधारणा से शुरुआत करें।
नमूना।

$$C_{t+1} = \frac{1+r}{1} C_t \quad .29$$

आइए उपयोगिता फ़ंक्शन को इस प्रकार मानें: u lnC

और इसलिए, $u' = \frac{1}{C}$

तब, $u'(C_{t+1}) = \frac{1+r}{1} u'(C_t)$ 39

तर्कसंगत अपेक्षा की धारणा को देखते हुए, चूँकि Ct पहले से ही ज्ञात है। इसलिए, यह है
उम्मीद करना आसान C_t. चूंकि कुल खपत स्थायी खपत का योग है
है और क्षणभंगुर खपत। इसलिए, अगर हम खपत के क्षणभंगुर घटक को जोड़ते हैं
समीकरण (26) के साथ, तो हम समीकरण (26) को इस प्रकार संशोधित कर सकते हैं:

$$C_{t+1} = C_t + \frac{1+r}{1} \varepsilon_{t+1} \quad .30$$

यदि वास्तविक उपभोग Ct का वर्तमान मूल्य वास्तव में उपभोक्ता के उपभोग को शामिल करता है
निष्पक्ष तरीकों से स्थायी आय का सबसे अच्छा अनुमान, फिर स्थायी की उम्मीद
आय तर्कसंगत है और क्षणिक उपभोग यादृच्छिक है।

हॉल के दृष्टिकोण के कमजोर बिंदु तर्कसंगत अपेक्षा का अनुप्रयोग हैं
उपभोक्ताओं द्वारा स्थायी आय का अनुमान लगाने के लिए उपयोग की जाने वाली प्रक्रिया। फ्राइडमैन ने बस यह मान लिया
अनुकूली अपेक्षाएँ सार्थक हो सकती हैं। अनुकूली अपेक्षा मॉडल में,

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

यह एक ज्ञात विलम्बित चर होगा, तथा आंशिक समायोजन स्थायी आय का अनुमान लगाने में मदद कर सकता है।

हॉल ने तर्कसंगत अपेक्षा दृष्टिकोण को लागू किया है; एक कम-रूप पूर्वानुमान समीकरण पर विचार किया गया है। हॉल का समीकरण बुनियादी संरचनात्मक संबंधों के अनुरूप है।

केस स्टडी: क्या आय में पूर्वानुमानित परिवर्तन उपभोग में पूर्वानुमानित परिवर्तन की ओर ले जाते हैं?

व्यापार चक्र में आय और खपत में उतार-चढ़ाव होता रहता है। जब अर्थव्यवस्था मंदी में चली जाती है, तो आय और खपत दोनों में गिरावट आती है, और जब अर्थव्यवस्था में तेजी आती है, तो आय और खपत दोनों में तेजी से वृद्धि होती है।

हालांकि, यह स्थायी आय परिकल्पना के तर्कसंगत-अपेक्षा संस्करण के बारे में बहुत कुछ नहीं कहता है। अधिकांश अल्पकालिक उतार-चढ़ाव उपभोक्ताओं के लिए अप्रत्याशित होते हैं। इसलिए, जब अर्थव्यवस्था मंदी में चली जाती है, तो उपभोक्ता भविष्य में आने वाले बुरे भविष्य को देखते हैं। और इसलिए, वह उपभोग व्यय को कम कर देता है। और जब अर्थव्यवस्था में उछाल आता है, तो उपभोक्ता को अपने जीवनकाल की आय के बारे में अच्छी खबर मिलती है, इसलिए खपत बढ़ जाती है।

हालांकि, यह व्यवहार रैंडम-वॉक सिद्धांत का उल्लंघन नहीं करता है। रैंडम-वॉक सिद्धांत के अनुसार, आय में इन परिवर्तनों के कारण उपभोक्ताओं को अपनी व्यय योजनाओं में संशोधन नहीं करना चाहिए। यदि उपभोक्ताओं को आय में वृद्धि या कमी की उम्मीद है, तो उन्हें उस जानकारी के जवाब में पहले से ही अपने उपभोग को समायोजित कर लेना चाहिए।
इस प्रकार, आय में पूर्वानुमानित परिवर्तनों से उपभोग में पूर्वानुमानित परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

हालाँकि, उपभोग और आय पर डेटा रैंडम-वॉक सिद्धांत के इस निहितार्थ को संतुष्ट नहीं करता है। आय में पूर्वानुमानित परिवर्तन उपभोग में पूर्वानुमानित परिवर्तनों की ओर ले जाते हैं जो लगभग आधे से भी बड़े होते हैं।

इस व्यवहार की एक संभावित व्याख्या यह है कि कुछ उपभोक्ता तर्कसंगत अपेक्षाएँ रखने में विफल हो सकते हैं। इसके बजाय, वे भविष्य की आय की अपनी अपेक्षाओं को वर्तमान आय पर अत्यधिक आधारित कर सकते हैं। इस प्रकार, जब आय बढ़ती या घटती है (यहाँ तक कि पूर्वानुमानित भी), तो वे ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे उन्हें अपने जीवनकाल के संसाधनों के बारे में समाचार प्राप्त हो गया हो और वे अपने उपभोग को उसी के अनुसार बदल देते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

11. हॉल का दृष्टिकोण इस प्रकार है:

क) कोई उम्मीद नहीं,

ख) अनुकूली अपेक्षा,

ग) तर्कसंगत अपेक्षा.

12. हॉल का दृष्टिकोण उपयोग करता है:

क) आंशिक जानकारी,

ख) पूर्ण जानकारी, ग)

कोई जानकारी नहीं।

केस स्टडी: व्यवहार अर्थशास्त्र और उपभोग (तत्काल संतुष्टि)

अर्थशास्त्र में एक आम धारणा यह है कि एक आर्थिक एजेंट एक पूरी तरह से तर्कसंगत व्यक्ति होगा, एक दूरदर्शी व्यक्ति जो जटिल आर्थिक समस्याओं को हल करने में बेहद अच्छा होगा। हालाँकि, दुनिया के ज़्यादातर लोग तर्कसंगतता के उच्च मानक से कमतर हैं। इसलिए व्यवहार अर्थशास्त्र के क्षेत्र में आने वाला सवाल यह है: अगर हमारे मॉडल अधिक यथार्थवादी व्यवहार संबंधी मान्यताओं पर विचार करते हैं तो क्या होगा? उदाहरण के लिए, क्या होगा अगर लोग गणित की समस्याओं को हल करने में उतने अच्छे नहीं हैं और उनके पास बेहतर तर्क शक्ति नहीं है? व्यवहार अर्थशास्त्र की शाखा में व्यवहारिक दृष्टिकोण पूरे अर्थशास्त्र में लागू किए गए हैं।

लेकिन इनमें से एक अनुप्रयोग जिसे सबसे अधिक सफलता मिली है, वह है उपभोग और बचत का सिद्धांत।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डेविड लाइबसन ने हमारे मानक तर्कसंगत आर्थिक एजेंटों के व्यवहार में एक सरल संशोधन का प्रस्ताव दिया है। उन्होंने कई मनोवैज्ञानिक प्रयोगों पर विचार किया, और इसलिए उन्होंने सोचा कि ऐसी संभावना है कि लोग वर्तमान और भविष्य के बीच चुनाव से जुड़ी निर्णय लेने की स्थिति का सामना करते समय अधीर हो सकते हैं। लाइबसन ने दिखाया कि इस धारणा के तहत, स्थायी आय परिकल्पना की भविष्यवाणी की तुलना में उपभोग आय में होने वाले बदलावों के प्रति अधिक संवेदनशील होगा।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

इस तरह के विचलन अनुभवजन्य रूप से देखे गए हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके अत्यधिक उधार लेते हैं, जिनकी ब्याज दरें बहुत अधिक होती हैं।
अन्य लोगों को आय में बड़ी, अस्थायी वृद्धि के जवाब में बचत करने के लिए आवश्यक आत्म-नियंत्रण का प्रयोग करने में परेशानी हो सकती है।

व्यवहार संबंधी विचारों के महत्व पर सबसे सम्मोहक साक्ष्य कर्मचारियों की पेंशन योजनाओं से मिलते हैं। कर्मचारी अपने वेतन का एक हिस्सा सेवानिवृत्ति के लिए बचाते हैं। नियोक्ता भी ऐसी योजनाओं में योगदान देते हैं। साथ ही, पेंशन योजना में बचत करने पर कर्मचारी को कुछ कर छूट भी मिलती है।

व्यक्ति चुन सकते हैं कि उन्हें अपने वेतन का कितना अंश बचाना है, अधिकतम सीमा तक, और वे मनी मार्केट और म्यूचुअल फंड सहित कई वित्तीय साधनों में से चुन सकते हैं। इन योजनाओं का डिफ़ॉल्ट डिज़ाइन इस बात पर बहुत अधिक प्रभाव डालता है कि व्यक्ति किस तरह से भाग लेते हैं: डिफ़ॉल्ट विकल्प "चिपचिपे" होते हैं। उदाहरण के लिए, शोध से पता चलता है कि जब नियोक्ताओं द्वारा प्रायोजित कुछ पेंशन योजनाएँ होती हैं, तो लगभग कोई भी कर्मचारी ऐसी योजनाओं का लाभ उठाने से इनकार नहीं करता है, और इसलिए भागीदारी लगभग 100 प्रतिशत होती है।

एक अन्य प्रसिद्ध उदाहरण ऊर्जा-व्यापार कंपनी एनरॉन का है।
2000 में, एनरॉन कॉर्पोरेशन के वर्तमान और भूतपूर्व कर्मचारियों के पास फर्म की अपनी पेंशन योजना में $2.1 बिलियन थे। इन निधियों का आश्चर्यजनक रूप से 62% एनरॉन के अपने स्टॉक में था, इस तथ्य के बावजूद कि कर्मचारियों को उनसे जुड़े जोखिम कारकों को कम करने के लिए अपनी होल्डिंग्स में विविधता लाने की अनुमति थी। 2001 के अंत में कुछ ही हफ्तों में, लेखांकन धोखाधड़ी के कारण एनरॉन दिवालिया हो गया। वर्ष की शुरुआत में $83 प्रति शेयर पर कारोबार करने वाले शेयर बेकार हो गए, और हजारों कर्मचारियों और सेवानिवृत्त लोगों ने अपनी सेवानिवृत्ति बचत का अधिकांश हिस्सा खत्म होते देखा।

6.6 सारांश

जीवनचक्र परिकल्पना कहती है कि वर्तमान उपभोग भी आजीवन भविष्य की आय पर निर्भर करता है। एक उपभोक्ता अपने पूरे जीवन के उपभोग पथ की योजना बनाता है, जो कि जीवन-काल से होने वाली कुल आय पर निर्भर करता है। स्थायी आय परिकल्पना जीवन-चक्र के समान है। इससे यह भी पता चलता है कि उपभोग भविष्य के वर्तमान मूल्य पर आधारित है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

आय। ऐसा कहा जाता है कि व्यक्तियों को अपनी अपेक्षित स्थायी आय की एक अवधारणा होती है। उपभोग केवल स्थायी आय पर निर्भर करता है।

दूसरी ओर, ड्यूसेनबेरी की सापेक्ष आय परिकल्पना कहती है कि किसी भी व्यक्ति का उपभोग न केवल निरपेक्ष आय पर निर्भर करता है, बल्कि शेष आबादी की औसत आय की तुलना में सापेक्ष आय पर भी निर्भर करता है। उनके अनुसार, उपभोग व्यक्ति द्वारा प्राप्त पिछली अधिकतम आय पर भी निर्भर करता है। एक व्यक्ति हमेशा अपने उपभोग के पिछले मानक को बनाए रखने की कोशिश करता है।

अंत में, हॉल का दृष्टिकोण तर्कसंगत अपेक्षाओं का अनुसरण करता है। इसमें व्यक्ति की भविष्य की आय के बारे में पूरी जानकारी शामिल है।

6.7 शब्दावली

स्थायी आय परिकल्पना: इसमें कहा गया है कि लोग अपनी भावी आय की अपेक्षाएं बनाते हैं तथा उसके साथ-साथ अपनी वर्तमान आय के आधार पर यह चुनते हैं कि उन्हें कितना उपभोग करना है।

रैचेट प्रभाव: यदि आय बढ़ती है, तो उपभोग भी निश्चित अनुपात में बढ़ता है, लेकिन जब आय घटती है, तो उपभोग भी घटता है, लेकिन वृद्धि के दौरान के अनुपात की तुलना में कम अनुपात में।

तर्कसंगत अपेक्षा (RationalExpectation): अपेक्षा निर्माण का सिद्धांत जिसमें अपेक्षाएं अंतर्निहित आर्थिक चर के बारे में सभी उपलब्ध सूचनाओं पर आधारित होती हैं; अक्सर नवीन शास्त्रीय समष्टि अर्थशास्त्र से संबद्ध।

सापेक्ष आय: किसी व्यक्ति की आय, शेष जनसंख्या की औसत आय के सापेक्ष।

6.8 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. जीवन-चक्र परिकल्पना के एंडो-मोदिग्लिआनी दृष्टिकोण पर चर्चा करें।
2. फ्रीडमैन की स्थायी आय परिकल्पना पर चर्चा करें।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

3. फ्रीडमैन की स्थायी आय में महत्वपूर्ण मान्यताओं पर चर्चा करें
   परिकल्पना।
4. स्थायी आय में अनुकूली अपेक्षा दृष्टिकोण के अनुप्रयोग की व्याख्या करें
   परिकल्पना।
5. जीवन-चक्र परिकल्पना और के बीच समानता और अंतर की व्याख्या करें
   स्थायी आय परिकल्पना.
6. ड्यूसेनबेरी मॉडल में रैचेट प्रभाव की व्याख्या करें।
7. ड्यूसेनबेरी की सापेक्ष आय परिकल्पना में दो परिकल्पनाओं पर चर्चा करें।
8. हॉल के तर्कसंगत अपेक्षा दृष्टिकोण की व्याख्या करें।

6.9 पाठ्य-अध्याय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. 0.09
2. ख) चिकना और ऊपर की ओर ढलान वाला,
3. क) पिछली बचत से,
4. क) क्षणिक आय सकारात्मक है
5. क) आंशिक समायोजन 6. ग)

शून्य

7. बी) सापेक्ष आय
8. ए) एमपीसी < एपीसी
9. सी) उपभोग
10. क) अधिक आनुपातिक रूप से
11. सी) तर्कसंगत अपेक्षा.
12. ख) पूर्ण जानकारी,

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

6.10 संदर्भ

ब्रैनसन, डब्ल्यू. (2013). मैक्रोइकॉनॉमिक्स: थ्योरी एंड पॉलिसी, तीसरा संस्करण, ईस्ट वेस्ट प्रेस.

6.11 सुझाए गए पठन सामग्री

डोर्नबुश, आर, फिशर, एस. (1994). मैक्रोइकॉनॉमिक्स, 6वां संस्करण, मैकग्रॉ-हिल.

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ 7

निवेश कार्य

डॉ. स्वरूप संतरा सहायक
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

संरचना

7.0 सीखने के उद्देश्य 7.1 परिचय 7.2 निश्चित
निवेश: नवशास्त्रीय दृष्टिकोण

7.2.1 पूंजी का वांछित स्टॉक 7.2.2 पूंजी की सीमांत उत्पादकता 7.2.3 पूंजी की किराया लागत

7.2.4 निवेश की वास्तविक दर

7.2.5 कर और पूंजी की किराया लागत 7.2.6 शेयर बाजार
और पूंजी की लागत 7.2.7 वांछित पूंजी पर राजकोषीय और मौद्रिक
नीति का प्रभाव
भंडार

7.2.8 वांछित पूंजी स्टॉक से निवेश तक 7.2.9 पूंजी स्टॉक समायोजन
7.2.10 निवेश का समय और निवेश कर
क्रेडिट 7.2.11 अनुभवजन्य परिणाम 7.3 व्यवसाय निश्चित निवेश: वैकल्पिक दृष्टिकोण

7.3.1 व्यवसाय निवेश निर्णय

7.3.2 एक्सेलेरेटर मॉडल और पूंजीगत प्रभाव की लागत 7.3.3 क्रेडिट राशनिंग और
वित्त के आंतरिक स्रोत 7.3.4 निवेश में उतार-चढ़ाव क्यों होता है?

7.4 आवासीय निवेश

7.4.1 सिद्धांत
7.4.2 मौद्रिक नीति और आवास निवेश 7.5 इन्वेंट्री निवेश 7.5.1
प्रत्याशित बनाम अप्रत्याशित इन्वेंट्री
निवेश 7.5.2 व्यापार चक्र में इन्वेंट्री 7.5.3 जस्ट-इन-टाइम इन्वेंट्री निवेश 7.6 सारांश

स्व निर्देशात्मक
सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

7.7 शब्दावली 7.8
पाठ्य-अध्याय प्रश्नों के उत्तर 7.9 आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 7.10
संदर्भ 7.11 सुझाए गए पठन

7.0 सीखने के उद्देश्य

निवेश के नव-शास्त्रीय सिद्धांत को समझाने के लिए

निश्चित निवेश की अवधारणा को समझना

आवासीय और इन्वेंट्री निवेश को समझाने के लिए

7.1 परिचय

मैक्रोइकॉनॉमिक्स विश्लेषण में निवेश व्यय महत्वपूर्ण है। मैक्रोइकॉनॉमिक्स में इसका केंद्रीय विषय होने के दो मुख्य कारण हैं।

क) सबसे पहले, निवेश व्यय में कोई भी उतार-चढ़ाव जीडीपी और इसलिए, व्यापार चक्र में आंदोलनों को प्रभावित कर सकता है। ख) दूसरे, निवेश

व्यय अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण (यानी, भौतिक पूंजी के लिए स्टॉक का अनुपात) की दर निर्धारित करता है। पूंजी स्टॉक में वृद्धि दीर्घकालिक आर्थिक विकास और उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण है।

निवेश व्यय का विस्तृत विश्लेषण शुरू करने से पहले, यहाँ इस्तेमाल की गई अवधारणा को सुविधाजनक बनाना महत्वपूर्ण है। पहली अवधारणा निवेश व्यय ही है।
समष्टि अर्थशास्त्र विश्लेषण में निवेश केवल भौतिक पूंजी तक ही सीमित है। इसलिए, निवेश व्यय का प्रवाह है जो पूंजी के भौतिक स्टॉक में वृद्धि करता है। स्टॉक अवधारणा और प्रवाह अवधारणा के बीच अंतर में दूसरी महत्वपूर्ण स्पष्टता की आवश्यकता है। पूंजी एक स्टॉक अवधारणा है। किसी विशेष समय पर उपलब्ध कुल पूंजी पूंजी का स्टॉक है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

दूसरी ओर, निवेश व्यय एक प्रवाह अवधारणा है। निवेश का प्रवाह पूंजी के स्टॉक के अतिरिक्त है। पूंजी का स्टॉक अतीत से निवेश के प्रवाह को जोड़कर बनता है। निवेश के प्रवाह के कारण पूंजी का स्टॉक बढ़ता है और मूल्यह्रास के कारण घटता है।

अर्थव्यवस्था में निवेश व्यय के तीन प्रकार हैं। दूसरे शब्दों में, निवेश को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। निवेश व्यय की इन तीन श्रेणियों को जोड़कर कुल निवेश को मापा जाता है। निवेश की तीन श्रेणियाँ इस प्रकार हैं:

i) व्यावसायिक निश्चित निवेश, ii)
आवासीय निवेश, और
iii) इन्वेंटरी निवेश.

व्यावसायिक बुनियादी ढांचे, मशीनरी, उपकरण, इमारतों आदि पर व्यावसायिक व्यय व्यावसायिक निश्चित निवेश का एक उदाहरण है। आवासीय निवेश घरों और आवास में किया जाने वाला निवेश है। और इन्वेंट्री निवेश इन्वेंट्री के स्टॉक में वृद्धि है।

7.2 निश्चित निवेश: नवशास्त्रीय दृष्टिकोण

अगर हम पिछले सालों के निवेश के आंकड़ों पर नज़र डालें तो हम देख सकते हैं कि मंदी के दौर में निवेश में कमी आई और अर्थव्यवस्था के ठीक होने के दौरान इसमें बढ़ोतरी हुई। निवेश खर्च व्यापार चक्र के अनुसार उतार-चढ़ाव करता है। इसलिए निवेश खर्च का अध्ययन करने से हमें व्यापार चक्र को समझने में मदद मिलेगी।

आईएस-एलएम मॉडल में, हमने देखा है कि निवेश व्यय ब्याज दरों से विपरीत रूप से संबंधित है। जैसे-जैसे ब्याज दर बढ़ती है, निवेश महंगा होता जाता है। इसलिए, निवेश व्यय घटता जाता है। हमने यह भी देखा है कि निवेश व्यय आउटपुट के वित्तीय बजट, करों और सरकारी नीतियों से प्रभावित होता है।

इस पाठ में, हम पूंजी के स्टॉक को जोड़ने के बारे में व्यक्तिगत निवेशक के निर्णय को समझने की कोशिश करेंगे। मैक्रो-इकोनॉमी के लिए कुल निवेश व्यय को समझने के लिए, हमें माइक्रोइकोनॉमिक स्तर पर निवेश निर्णयों का अध्ययन करने की आवश्यकता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

7.2.1 पूंजी का वांछित स्टॉक

निवेश व्यय के विश्लेषण के दो चरण हो सकते हैं। सबसे पहले, किसी भी व्यावसायिक इकाई के लिए पूंजी के स्टॉक का इष्टतम स्तर जानना महत्वपूर्ण है। और फिर, यदि पूंजी का वास्तविक स्टॉक इष्टतम से अलग है, तो पूंजी स्टॉक के समायोजन की दर दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है।

प्रत्येक व्यावसायिक इकाई का एक इष्टतम स्तर होता है, जो फर्म के उद्देश्यों पर निर्भर करता है। मान लीजिए कि फर्म का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना है। किसी फर्म का लाभ अधिकतम करना उत्पादन स्तर, लागत और राजस्व संरचना पर निर्भर करता है। इसलिए, अधिकतम लाभ के लिए पूंजी के स्टॉक का एक संगत स्तर होता है। पूंजी के स्टॉक का एक विशेष स्तर होना चाहिए जिस पर फर्म अपने लाभ को अधिकतम कर सके। इसे वांछित पूंजी स्टॉक कहा जाता है। यदि पूंजी का वास्तविक स्टॉक वांछित पूंजी स्टॉक के समान नहीं है, तो फर्म को इसे वांछित पूंजी स्टॉक की ओर समायोजित करने की आवश्यकता है। पूंजी के स्टॉक में इस समायोजन के लिए, फर्मों को निवेश की आवश्यकता होती है।

अधिक पूंजी के उपयोग से मिलने वाले लाभ को पूंजी के सीमांत उत्पाद (MPK) द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। पूंजी में एक इकाई की वृद्धि के कारण उत्पादन में वृद्धि की मात्रा पूंजी के सीमांत उत्पाद का माप देती है। दूसरी ओर, पूंजी प्राप्त करने की लागत को पूंजी की किराया लागत कहा जाता है। उदाहरण के लिए, पूंजी की एक और इकाई का उपयोग करके, फर्म को अपने ऋण पर बैंक को अतिरिक्त ब्याज का भुगतान करना पड़ता है। पूंजी की एक इकाई के लिए इस अतिरिक्त लागत को पूंजी की किराया लागत कहा जाता है। पूंजी की किराया लागत का मूल माप r (ब्याज की दर) है। लाभ अधिकतमीकरण के सिद्धांत हमें संतुलन के लिए शर्त देते हैं:

एम का मान पीके पूंजी की किराया लागत 1

7.2.2 पूंजी की सीमांत उत्पादकता

वांछित पूंजी स्टॉक (K*), किराया लागत और उत्पादन के स्तर (Y) के बीच सामान्य संबंध है:

के एफ आरसी, य * . 2

उपरोक्त समीकरण यह दर्शाता है कि वांछित पूंजी स्टॉक पूंजी की किराया लागत और उत्पादन के स्तर पर निर्भर करता है। किराया लागत जितनी कम होगी, वांछित पूंजी स्टॉक उतना ही बड़ा होगा। और पूंजी का स्तर जितना अधिक होगा, वांछित पूंजी स्टॉक उतना ही बड़ा होगा।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

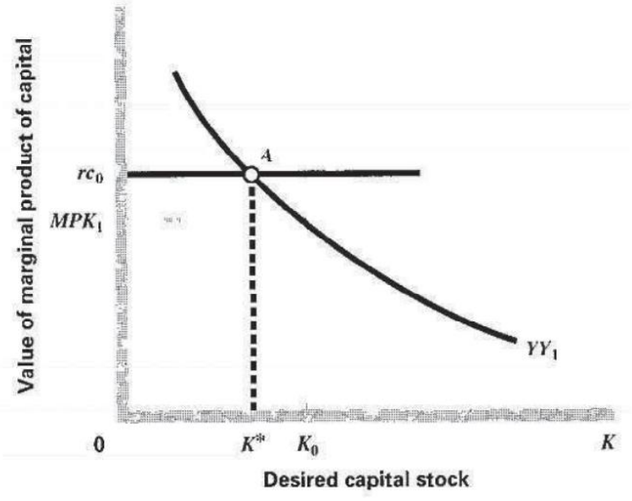

चित्र 7.1

जैसे-जैसे फर्म दिए गए उत्पादन की मात्रा के उत्पादन में अपेक्षाकृत कम श्रम के साथ उत्तरोत्तर अधिक पूंजी जोड़ती है, एमपीके घटता जाता है। यह संबंध ऊपर दिए गए चित्र 7.1 में नीचे की ओर झुके हुए वक्र द्वारा दिखाया गया है। वक्र YY1 उत्पादन Y1 के स्तर को दर्शाता है। पूंजी की किराया लागत rc0 क्षैतिज रेखा है।

तब वांछित पूंजी स्टॉक K * होगा। यदि उच्च पूंजी स्टॉक का चयन किया जाता है, अर्थात K0 , तो MPK rc से कम होगा और फर्म के लिए पूंजी में कटौती करना बेहतर होगा।

यदि आउटपुट अधिक है, मान लीजिए Y2, तो वक्र बाहर की ओर तथा दाईं ओर खिसक जाएगा। अपरिवर्तित किराया लागत के कारण, वांछित पूंजी स्टॉक में वृद्धि होगी।

7.2.3 पूंजी की किराया लागत

किराये की लागत ब्याज दर से संबंधित है, यानी, फर्मों को अपनी पूंजी के उपयोग के लिए उधार लेना होगा। चूंकि पूंजी के एक वर्ष के दौरान टूट-फूट के कारण मूल्यह्रास होने की संभावना है, इसलिए वह मूल्यह्रास भी उस पूंजी का उपयोग करने की लागत का एक हिस्सा है। मूल्यह्रास को एक लागत के रूप में माना जाता है क्योंकि फर्म को पूंजी को उसी तरह काम करने के लिए मरम्मत पर पैसा खर्च करना पड़ता है जैसा कि यह तब था जब यह नया था। यह मानते हुए कि पूंजी के प्रति डॉलर, पूंजी को पूरी दक्षता से काम करने के लिए प्रति अवधि 'd' डॉलर की आवश्यकता होती है। यह पूंजी का उपयोग करने की पूंजी लागत है।

टिप्पणियाँ

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

आरसी ब्याज दर मूल्यह्रास लागत

आरसी आरडी .. 3

7.2.4 निवेश की वास्तविक दर

वास्तविक ब्याज दर नाममात्र (कथित) ब्याज दर से मुद्रास्फीति दर को घटाकर प्राप्त की जाती है। यह ब्याज की अपेक्षित वास्तविक दर है जिसका उपयोग किया जाना चाहिए। फर्म भविष्य में बिक्री के लिए माल का उत्पादन करने के लिए उधार ले रही है। माल की कीमत सामान्य मूल्य स्तर के साथ-साथ बढ़ती रहेगी। इस प्रकार, एमपीके का नाममात्र मूल्य मूल्य स्तर के साथ बढ़ेगा, लेकिन फर्म को भुगतान की जाने वाली ब्याज की नाममात्र राशि मूल्य स्तर के साथ नहीं बढ़ती है।

इसके अलावा, मुद्रास्फीति के कारण फर्म के ऋण का वास्तविक मूल्य समय के साथ कम हो जाएगा, और फर्म को यह निर्णय लेते समय कि कितनी पूंजी लगानी है, अपने बकाया ऋणों के वास्तविक मूल्य में इस कमी को ध्यान में रखना चाहिए।

इसलिए, rc rd

जहाँ, वास्तविक ब्याज दर = नाममात्र ब्याज दर - मुद्रास्फीति का अपेक्षित मूल्य (ई)। इसलिए, फर्म की पूंजी की लागत वास्तविक दर से निर्धारित होती है, नाममात्र ब्याज दर से नहीं। जब पूंजी की वास्तविक लागत कम होती है तो निवेश खर्च अधिक होता है।

7.2.5 कर और पूंजी की किराया लागत

किराये की लागत पर करों का भी असर पड़ता है। दो मुख्य कर चर हैं कॉर्पोरेट कर और निवेश कर क्रेडिट।

निवेश कर क्रेडिट:

निवेश कर क्रेडिट फर्मों को हर साल अपने निवेश व्यय का एक निश्चित अनुपात, मान लीजिए t, अपने करों से घटाने की अनुमति देता है। निवेश कर क्रेडिट फर्म के लिए पूंजीगत वस्तु की कीमत को t के अनुपात से कम करता है। इसलिए, निवेश कर क्रेडिट पूंजी की किराये की लागत को कम करता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

कॉर्पोरेट आयकर:

कॉर्पोरेट आयकर पूंजी के वांछित स्टॉक को प्रभावित नहीं करता है। फर्म एमपीके के कर-पश्चात मूल्य को पूंजी के कर-पश्चात किराये की लागत के बराबर करेगी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मुनाफे में पूंजी का सीमांत योगदान इसके उपयोग की सीमांत लागत के बराबर हो। कॉर्पोरेट टैक्स का प्रभाव यह है कि करों की गणना से पहले फर्म की आय से ब्याज भुगतान काट लिया जाता है। हालांकि, अगर लाभांश का भुगतान कर कटौती के बाद किया जाता है, तो कॉर्पोरेट टैक्स की दर बढ़ने के साथ पूंजी की किराये की लागत बढ़ जाती है।

7.2.6 शेयर बाज़ार और पूंजी की लागत

एक फर्म शेयर और इक्विटी बेचकर शेयर बाजार से धन जुटा सकती है। लोग लाभांश (यदि पूंजीगत लाभ हो) से रिटर्न की उम्मीद में शेयर और इक्विटी खरीदते हैं।
जब शेयरों की कीमत अधिक होती है, तो कंपनी अपेक्षाकृत कम शेयर बेचकर बहुत सारा पैसा जुटा सकती है। जब शेयरों की कीमत कम होती है, तो कंपनी को एक निश्चित राशि जुटाने के लिए अधिक शेयर बेचने पड़ते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि जब शेयर बाजार कम होता है, तो निगम निवेश को वित्तपोषित करने के लिए इक्विटी बेचने के लिए अधिक इच्छुक होंगे।

इक्विटी पूंजी की लागत को अक्सर फर्म के लाभांश और उसके स्टॉक की कीमत के अनुपात से मापा जाता है। फिर, स्टॉक की कीमत जितनी अधिक होगी, इक्विटी पूंजी की लागत उतनी ही कम होगी, और पूंजी की कुल लागत भी उतनी ही कम होगी। इसलिए, यह कहा जाता है कि तेजी से बढ़ता शेयर बाजार निवेश के लिए अच्छा है।

7.2.7 वांछित पूंजी पर राजकोषीय और मौद्रिक नीति का प्रभाव भंडार

पूंजी का वांछित स्टॉक सकारात्मक रूप से उत्पादन पर और नकारात्मक रूप से पूंजी की किराया लागत पर निर्भर करता है।

$$\text{के}^{*} \text{एफ आरसी, वाई} \quad \text{..... (4)}$$

—

मान लीजिए ब्याज की दर कम हो गई, या मूल्यह्रास की दर बढ़ गई, या निवेश कर क्रेडिट बढ़ गया, और पूंजी की किराया लागत कम हो गई। जैसे-जैसे पूंजी की किराया लागत (rc) घटती है और/या उत्पादन (Y) बढ़ता है, पूंजी का वांछित स्टॉक बढ़ता है।

स्व निर्देशात्मक सामग्री

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

राजकोषीय नीति:

राजकोषीय नीति आईएस वक्र की स्थिति और इस प्रकार ब्याज दर पर अपने समग्र प्रभाव के माध्यम से पूंजी की मांग को भी प्रभावित करती है। उच्च-कर-कम-सरकारी-खर्च नीति वास्तविक ब्याज दर को कम रखती है और पूंजी की मांग को प्रोत्साहित करती है। दूसरी ओर, कम-कर-उच्च-सरकारी-खर्च नीति जो बड़े घाटे का उत्पादन करती है, वास्तविक ब्याज दर को बढ़ाती है और पूंजी की मांग को हतोत्साहित करती है।

मौद्रिक नीति:

मौद्रिक नीति बाजार ब्याज दर को प्रभावित करके पूंजी की मांग को प्रभावित करती है। RBI द्वारा नाममात्र ब्याज दर में कमी करने से फ़र्मों को अधिक पूंजी की इच्छा होती है। पूंजी की मांग में यह वृद्धि, बदले में, निवेश व्यय को प्रभावित करेगी।

7.2.8 वांछित पूंजी स्टॉक से निवेश तक

पूंजी का वास्तविक स्टॉक (K) हमेशा वांछित पूंजी स्टॉक (K*) के बराबर नहीं हो सकता है। लेकिन फर्म वांछित पूंजी स्टॉक तक पहुंचने के लिए पूंजी स्टॉक को समायोजित करना चाहती हैं। चूंकि निवेश परियोजना की योजना बनाने और उसे पूरा करने में समय लगता है, और क्योंकि पूंजी स्टॉक के क्रमिक समायोजन की तुलना में जल्दी निवेश करना अधिक महंगा होने की संभावना है, इसलिए फर्म अपने पूंजी स्टॉक को दीर्घकालिक वांछित स्तर पर तुरंत समायोजित करने का प्रयास नहीं करती हैं। इस प्रकार, फर्म आमतौर पर अपने पूंजी स्टॉक को तुरंत समायोजित करने के बजाय समय की अवधि में धीरे-धीरे समायोजित करने की योजना बनाती हैं।

7.2.9 पूंजी स्टॉक समायोजन:

क्रमिक समायोजन परिकल्पना, या लचीले त्वरक मॉडल का पालन यहाँ उस गति के बारे में जानने के लिए किया गया है जिस पर फर्म समय के साथ अपने पूंजी स्टॉक को समायोजित करने की योजना बनाते हैं। मूल धारणा यह है कि मौजूदा पूंजी स्टॉक और वांछित पूंजी स्टॉक के बीच का अंतर जितना बड़ा होगा, फर्म की निवेश की दर उतनी ही तेज़ होगी।

मान लीजिए कि अंतिम अवधि के अंत में पूंजी स्टॉक को K1 द्वारा दर्शाया गया है । इसलिए,

वांछित और वास्तविक पूंजी स्टॉक के बीच का अंतर है $K^* - K_1$.परिकल्पना यह है

फर्म वांछित और वास्तविक के बीच के अंतर का एक अंश, e¨, जोड़ने की योजना बना रही है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पूंजी स्टॉक हैं के.कें. 1 पिछली अवधि के पूंजी स्टॉक में इस प्रकार से कि वास्तविक पूंजी चालू अवधि के अंत में स्टॉक (के) होगा:

केके केके 1 * 1 . 5

पूंजी स्टॉक को K-1 से K के स्तर तक बढ़ाने के लिए, फर्म को प्राप्त करना होगा शुद्ध निवेश की राशि, IK K1 .

इसलिए, शुद्ध निवेश को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

मैं के.कें. 1 . 6

समीकरण (6) में, अपेक्षित निवेश फ़ंक्शन तक पहुँच गया है। का मान है , अंतर जितनी तेजी से कम होगा। निवेश फ़ंक्शन K पर निर्भर करता है * , के१ , .

कोई भी कारक जो वांछित पूंजी स्टॉक को बढ़ाता है, निवेश की दर को बढ़ाता है। इसलिए, अपेक्षित उत्पादन में वृद्धि, वास्तविक ब्याज दर में कमी, या निवेश कर क्रेडिट में वृद्धि से निवेश की दर में वृद्धि होगी।

इसके अलावा, निवेश के सिद्धांत में गतिशील व्यवहार के पहलू शामिल हैं वर्तमान अवधि के अलावा अन्य अवधियों में आर्थिक चरों के मूल्यों पर निर्भर करते हैं।

गतिशील व्यवहार:

समीकरण (6) में गतिशील व्यवहार के दो स्रोत हैं:

1. अपेक्षा: पहला, अपेक्षाओं से उत्पन्न होता है। K* शब्द इस पर निर्भर करता है फर्म का भावी या स्थायी उत्पादन का अनुमान।
2. समायोजन विलंब: गतिशील व्यवहार का दूसरा स्रोत उत्पन्न होता है समायोजन में देरी। फ़र्मों ने अंतर के केवल एक अनुपात को ही पाटने की योजना बनाई है प्रत्येक अवधि में वास्तविक और वांछित पूंजी स्टॉक। समायोजन अंतराल एक उत्पादन करते हैं वांछित परिणाम को प्रभावित करने वाले चरों में परिवर्तन के प्रति निवेश की विलंबित प्रतिक्रिया शेयर पूंजी।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

7.2.10 निवेश का समय और निवेश कर क्रेडिट

लचीला त्वरक मॉडल निवेश की गतिशीलता का उपयोगी सारांश प्रदान करता है। लेकिन यह निवेश के समय पर पर्याप्त जोर नहीं देता है। इसे पूरा होने में कई साल लग सकते हैं। इसे पूरा करने की तिथियों में लचीलापन है किया गया।

यह समयबद्ध लचीलापन, के प्रभावों के बीच एक दिलचस्प विरोधाभास को जन्म देता है। निवेश कर क्रेडिट और आयकर। आयकर में स्थायी परिवर्तन से बहुत कुछ बदल गया है उपभोग पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। हालाँकि, एक अस्थायी निवेश कर क्रेडिट के दौरान, निवेश की दर तेज़ होगी। अगर फर्मों को पता होता कि निवेश कर क्रेडिट था यदि यह नीति अस्थायी है, तो वे उस नीति का लाभ उठाने के लिए अब अधिक निवेश करने का प्रयास करेंगे।

7.2.11 अनुभवजन्य परिणाम

नवशास्त्रीय मॉडल निवेश के व्यवहार को समझा सकता है। है:

मैं के.कै. $_1$ .. 7

और वांछित पूंजी स्टॉक, * K, Y और पूंजी की किराया लागत पर निर्भर करता है।

$$क^* \quad \frac{य}{आर सी} \qquad 8$$

अब * के स्थान पर वांछित पूंजी स्टॉक को प्रतिस्थापित करना आवश्यक है । अतः, शुद्ध निवेश फ़ंक्शन को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

$$मैं \quad \frac{य}{आर सी} \quad क_1 \qquad .9$$

तदनुसार, निवेश वर्तमान उत्पादन पर सकारात्मक रूप से और नकारात्मक रूप से वर्तमान उत्पादन पर निर्भर करता है। पूंजी की किराये की लागत पर। और अक्सर, उत्पादन का कोब-डगलस रूप फ़ंक्शन का उपयोग निवेश फ़ंक्शन के लिए किया जाता है।

कई अनुभवजन्य अध्ययनों से पता चला है कि चरों सहित एक निवेश कार्य उपरोक्त समीकरण में व्यवसायिक निश्चित निवेश का उचित स्पष्टीकरण दिया गया है। हालाँकि, निवेश की धीमी प्रतिक्रिया पर विचार करके इस संबंध को सुधारा जा सकता है उत्पादन में परिवर्तन की मांग।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

7.3 व्यवसाय निश्चित निवेश: विकल्प
दृष्टिकोण

7.3.1 व्यवसाय निवेश निर्णय

निवेश तय करने के लिए अन्य वैकल्पिक तरीके भी हैं। इनमें डिस्काउंटेड कैश फ्लो विश्लेषण सबसे महत्वपूर्ण है। यह लागत-लाभ विश्लेषण पर आधारित है।

किसी परियोजना को शुरू करने से पहले, फर्म लागत-लाभ विश्लेषण करती हैं। और इस विश्लेषण में, छूट प्राप्त नकदी प्रवाह सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। शुरुआत में, फर्म डिस्काउंटिंग फैक्टर का उपयोग करके सभी भविष्य की राजस्व धाराओं के लिए छूट प्राप्त वर्तमान मूल्य (पीवी) की गणना करेगी। फिर, पीवी की तुलना वर्तमान निवेश से की जाएगी।

ब्याज दर जितनी अधिक होगी, छूट कारक उतना ही बड़ा होगा। इसलिए, छूट वाला पीवी कम होगा। ऐसे मामले में, संभावना है कि कुल छूट वाला नकदी प्रवाह परियोजना की लागत से कम होगा। इसलिए, किसी भी निवेश परियोजना को लेने की संभावना कम होगी।

7.3.2 एक्सेलेरेटर मॉडल और पूंजीगत प्रभाव की लागत

सरल त्वरक मॉडल का दावा है कि निवेश व्यय उत्पादन में परिवर्तन के समानुपातिक है और पूंजी की लागत से प्रभावित नहीं होता है। यदि फर्म अधिक उत्पादन करना चाहती हैं, तो उन्हें लागत संरचना के बावजूद अधिक निवेश करना होगा। यदि उत्पादन में वृद्धि की उम्मीद थी, तो निवेश की आवश्यकता है।

मैं वर्ष वर्ष ई 10

निवेश अपेक्षित उत्पादन और वास्तविक उत्पादन के बीच के अंतर का एक कार्य है। यदि उत्पादन में परिवर्तन की उम्मीद नहीं है, तो शुद्ध निवेश शून्य होगा।

पूंजी की किराया लागत का निवेश तय करने में कोई भूमिका नहीं होती।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

7.3.3 क्रेडिट राशनिंग और वित्त के आंतरिक स्रोत

पैसे उधार देते समय हमेशा एक निश्चित स्तर का जोखिम होता है। उधारकर्ता दिवालिया या डिफॉल्टर बन सकते हैं। ऐसे मामलों में, उधारकर्ता ऋण राशि चुकाने में सक्षम नहीं होगा। इसलिए, ऋण देने से जुड़े जोखिम कारक को कम करने के लिए, बैंक कुछ उधारकर्ताओं को बड़ी मात्रा में धन नहीं देते हैं। बैंक क्रेडिट राशनिंग करते हैं। क्रेडिट राशनिंग के कारण, फर्म बड़ी मात्रा में धन उधार नहीं ले सकती हैं, भले ही वे चाहें। छोटी फर्मों के लिए भी क्रेडिट राशनिंग महत्वपूर्ण है। छोटी फर्मों को दी गई बड़ी ऋण राशि संभवतः उन्हें डिफॉल्टर बना सकती है।

चूंकि कुल ऋण का एक हिस्सा गैर-निष्पादित और डिफॉल्ट हो सकता है, इसलिए बैंक उस डिफॉल्ट राशि की भरपाई के लिए सभी से अधिक ब्याज मांगते हैं। इसलिए, ब्याज की बाजार दर बढ़ जाएगी। इससे ईमानदार उधारकर्ता हतोत्साहित होंगे। लेकिन बेईमान उधारकर्ता ऋण लेना जारी रखेंगे और डिफॉल्टर बने रहेंगे। RBI बैंकों पर क्रेडिट सीमा लगा सकता है। RBI बैंकों को कुछ बड़े उधारकर्ताओं को बड़ी मात्रा में ऋण देने से रोक सकता है।

7.3.4 निवेश में उतार-चढ़ाव क्यों होता है?

अनिश्चित अपेक्षा

निवेश में उतार-चढ़ाव के संभावित कारणों में से एक अनिश्चित अपेक्षाएँ हैं। किसी भी फर्म का निवेश निर्णय फर्म के आशावादी या निराशावादी विचारों पर निर्भर करता है। कीन्स के अनुसार, यह 'पशु भावना' है जो किसी फर्म को निवेश करने के लिए प्रेरित करती है। यह निवेश के लिए सिर्फ उत्साह है। हालाँकि, उम्मीद के लिए ऐसा कोई कारण या आधार नहीं है। निवेश निर्णयों के लिए कोई निश्चित अपेक्षा नहीं है।

निवेश निर्णय का समय

निवेश में उतार-चढ़ाव का दूसरा अतिरिक्त कारण यह है कि निवेश के फैसले में देरी हो सकती है। मान लीजिए कि कोई फर्म किसी निवेश परियोजना पर विचार कर रही है, लेकिन अर्थव्यवस्था फिलहाल मंदी में है। ऐसे में फर्म पहले जितना सोचा था, उतना निवेश नहीं करने का फैसला करती है। फर्म अपने निवेश के फैसले में देरी करेगी।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

1. वांछित पूंजी स्टॉक का अनुमान तब लगाया जाता है, जब

ए) एमपीके < आरसी

बी) एमपीके > आरसी

c) एमपीके =

आरसी 2. वांछित पूंजी स्टॉक और आरसी

क) सकारात्मक रूप से संबंधित

ख) नकारात्मक रूप से संबंधित.

3) वांछित पूंजी स्टॉक और आउटपुट

क) सकारात्मक रूप से संबंधित,

ख) नकारात्मक रूप से संबंधित.

7.4 आवासीय निवेश

आवासीय निवेश में नए आवास की खरीद शामिल है, दोनों ही मामलों में उन लोगों द्वारा जो उसमें रहने की योजना बनाते हैं और उन मकान मालिकों द्वारा जो इसे दूसरों को किराए पर देने की योजना बनाते हैं। आवासीय निवेश में एकल-परिवार और बहु-परिवार आवासों का निर्माण शामिल है। संक्षेप में, इसे आवास कहा जा सकता है। आवास को इसके लंबे जीवन के कारण अन्य परिसंपत्तियों से अलग किया जा सकता है।

इसके अलावा, किसी भी एक वर्ष में आवास में निवेश, मौजूदा मकानों के स्टॉक का केवल एक छोटा प्रतिशत ही होता है।

7.4.1 सिद्धांत

आवासीय निवेश का सिद्धांत आवास के मौजूदा स्टॉक की मांग पर विचार करके शुरू होता है। और आवास उन कई परिसंपत्तियों में से एक है जिसे कोई व्यक्ति रखना चाहता है।

चित्र 7.2, पैनल (ए) में, आवास के स्टॉक की मांग नीचे की ओर झुकी हुई मांग वक्र (DD0) है। यदि आवास के मौजूदा स्टॉक की कीमत बढ़ जाती है, तो मांग के नियम के अनुसार, आवास की मांग कम हो जाएगी, और इसके विपरीत। और ऊर्ध्वाधर रेखा (SS) मौजूदा घरों में स्टॉक की आपूर्ति वक्र है। यह है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

इसे आवास की स्टॉक सप्लाई (एसएस) कहा जाता है। इसका मतलब है कि एक निश्चित समय के लिए आवास के मौजूदा स्टॉक की आपूर्ति तय होती है। इसे अल्पावधि में तुरंत नहीं बदला जा सकता।

बिंदु E संतुलन बिंदु है - मांग वक्र के बीच एक प्रतिच्छेद बिंदु

0

(DD0) और स्टॉक आपूर्ति (SS) वक्र। और इसलिए, संबंधित मूल्य, PH , आवास के मौजूदा स्टॉक का संतुलन मूल्य है।

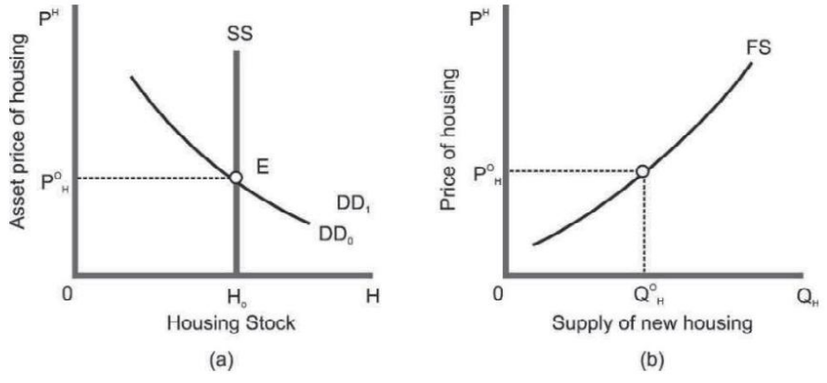

पैनल (ए) पैनल (बी)

चित्र 7.2

संतुलन मूल्य आवास की कीमत है। आवास की यह कीमत रियल्टर को नए आवास में निवेश करने के लिए प्रभावित करती है। यदि आवास का बाजार मूल्य बढ़ रहा है, तो उत्पादकों को नए आवास में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। इसलिए, फर्म नए आवास की अधिक आपूर्ति प्रदान करेंगे, जिसे प्रवाह आपूर्ति (FS) कहा जाता है। इसलिए, प्रवाह आपूर्ति (FS) वक्र एक ऊपर की ओर झुका हुआ वक्र है।

अब, किसी भी कारण से (संपत्ति में वृद्धि के लिए हो सकता है), यदि आवास की मांग बढ़ जाती है, तो प्रारंभिक मांग वक्र, DD0 , DD1 तक बढ़ जाता है । इसलिए, आवास की कीमत बढ़ जाएगी। जैसे-जैसे आवास की कीमत बढ़ेगी, निर्माता अधिक नए घर बनाएंगे और उनमें अधिक निवेश करेंगे।

किसी भी संपत्ति की मांग अन्य संपत्तियों से मिलने वाले रिटर्न पर भी निर्भर करती है। इसलिए, अगर अन्य संपत्तियों से मिलने वाले रिटर्न में कमी आती है, तो आवास की मांग बढ़ जाएगी।

और इसलिए, आवास की मांग ऊपर की ओर बढ़ेगी। हालांकि, घर का मालिक होना घर की लागत और रिटर्न संरचना पर भी निर्भर करेगा। आवास से रिटर्न किराए की रसीदों और पूंजीगत लाभ से होता है। अगर आवास किसी और को बदले में दिया जाता है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

कुछ किराए के लिए, तो आवास के मालिक को किराया मिलेगा। इसके अलावा, समय के साथ, आवास की कीमत बढ़ सकती है, और आवास के मालिक को इसे बेचने पर पूंजी मिल सकती है। दूसरी ओर, घर के मालिक होने की लागत बैंक को ब्याज भुगतान है। मालिक को बैंक ऋण प्राप्त करने के लिए कुछ बंधक रखने की आवश्यकता होती है। आवास के मालिक को सरकार को अचल संपत्ति कर का भुगतान करना होगा। और इसके साथ, समय के साथ आवास का मूल्यह्रास होगा। ये सभी घर के मालिक होने की लागतें हैं।

7.4.1.1 निवेश की दर

प्रवाह आपूर्ति (FS) वक्र नए आवास का आपूर्ति वक्र है। आवास की प्रवाह आपूर्ति मौजूदा आवास की कीमत का एक बढ़ता हुआ कार्य है। आपूर्ति वक्र की स्थिति आवास और प्रौद्योगिकी की लागत पर निर्भर करती है। परिसंपत्ति की कीमत जितनी अधिक होगी, नए आवास की आपूर्ति उतनी ही अधिक होगी और फिर बड़े निवेश की आवश्यकता होगी।

कुछ कारक आवास के मौजूदा स्टॉक की मांग को प्रभावित करते हैं और परिसंपत्ति की कीमत को प्रभावित करते हैं। वे कारक वास्तव में आवास में निवेश की दर को प्रभावित करते हैं। इसी तरह, प्रवाह आपूर्ति वक्र, FS, को बदलने वाले कोई भी कारक निवेश की दर को प्रभावित करेंगे।

मान लीजिए ब्याज दर बढ़ जाती है, तो उधार लेने की लागत बढ़ जाती है, और फिर आवास की मांग कम हो जाती है। नतीजतन, आवास की परिसंपत्ति की कीमत कम हो जाएगी।
निवेश की दर भी गिर जाएगी। अगर बंधक दर बढ़ जाती है, तो आवास के लिए ऋण प्राप्त करना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए, आवास की मांग कम हो जाएगी, और आवास की कीमत गिर जाएगी। और परिणामस्वरूप, निवेश की दर भी गिर जाएगी।

लंबे समय में

नए आवासों का निर्माण आवासों के मौजूदा स्टॉक में वृद्धि करेगा। मौजूदा आवासों की कुल आपूर्ति में वृद्धि होगी। मौजूदा आवासों की स्टॉक आपूर्ति (SS) में वृद्धि होगी। स्टॉक आपूर्ति (SS) वक्र दाईं ओर खिसक जाएगा। आवासों की संतुलन कीमत गिरती है। लंबे समय में, आवासों के स्टॉक को स्थिर रखने के लिए, सकल निवेश को मूल्यह्रास के बराबर होना चाहिए, या शुद्ध निवेश को शून्य होना चाहिए।

और यदि जनसंख्या, आय और संपत्ति एक स्थिर दर से बढ़ रही हों, तो दीर्घकालिक संतुलन वह होगा जिसमें निर्माण की दर मूल्यह्रास और लगातार बढ़ती स्टॉक मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त होगी।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

अपेक्षित मूल्य

मौजूदा आवास स्टॉक की कीमत में होने वाले बदलावों के जवाब में नए आवास का निर्माण तुरंत नहीं किया जा सकता। इसलिए, नए आवास की आपूर्ति आवास की वास्तविक कीमत पर निर्भर नहीं करती है। लेकिन नए आवास की आपूर्ति निर्माण पूरा होने पर प्रचलित होने वाली अपेक्षित कीमत पर निर्भर करती है।

7.4.1.2 निवेश का क्यू-सिद्धांत:

वित्तीय बाज़ार में क्यू-सिद्धांत लोकप्रिय है। क्यू का मान स्टॉक के मूल्य और परिसंपत्तियों की लागत के अनुपात से मापा जाता है।

q-मूल्य = (स्टॉक का मूल्य) / (परिसंपत्तियों की लागत) ..... (11)

क्यू-सिद्धांत आवास निवेश में भी उपयोगी हो सकता है। जब क्यू-मूल्य (अनुपात) अगर निवेश का स्तर ऊंचा होगा तो कंपनियां अधिक संपत्ति बनाएंगी। इसलिए निवेश तेजी से होगा।

आवास बाजार में q-मूल्य = (आवास की कीमत) / (आवास की लागत)

पीएच को मौजूदा आवास की कीमत के रूप में समझा जा सकता है, जो कि नए आवास के निर्माण की लागत के सापेक्ष है। जब यह अनुपात अधिक होता है, तो आवासीय निवेश में वृद्धि करके कई नए आवास बनाए जाएँगे।

7.4.2 मौद्रिक नीति और आवास निवेश

बैंक बंधक के आधार पर गृह ऋण देते हैं। बंधक एक ऋण साधन है जो लंबी अवधि के लिए होता है और परिपक्वता तक मासिक किश्तों का भुगतान करना होता है। यदि बंधक पर ब्याज दर कम हो जाती है, तो आवास ऋण की उधारी बढ़ जाती है। इसलिए, नए आवास के लिए निवेश की मांग बढ़ जाती है, क्योंकि आवास की मांग ब्याज दर के प्रति बहुत संवेदनशील होती है।

राजकोषीय नीति

आवासीय निवेश के लिए एक संभावित राजकोषीय नीति है। घर खरीदने वाले अपने होम लोन पर कर लाभ उठा सकते हैं। होम लोन पर चुकाए गए ब्याज की राशि को आयकर का भुगतान करने से पहले घर खरीदने वालों की कुल आय से घटाया जा सकता है। इसलिए, होम लोन पर कर लाभ की शुरूआत लोगों को नए घर खरीदने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।
नये आवास की मांग बढ़ेगी, जिसके परिणामस्वरूप आवासीय निवेश में वृद्धि होगी।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

4. क्यू-सिद्धांत सर्वाधिक लोकप्रिय है

क) वित्तीय बाजार,

ख) कृषि बाजार,

ग) डिजिटल मार्केट.

5. स्टॉक आपूर्ति वक्र है

क) क्षैतिज,

b) ऊपर की ओर ढलान c)

लंबवत

6. प्रवाह आपूर्ति वक्र है

क) नीचे की ओर ढलान, ख)

ऊपर की ओर ढलान

ग) ऊर्ध्वाधर,

7.5 इन्वेंटरी निवेश

इन्वेंटरी में न केवल तैयार माल शामिल होता है, बल्कि कच्चे माल का स्टॉक, निर्माणाधीन माल, तथा विशिष्ट उद्देश्यों को पूरा करने के लिए फर्मों द्वारा भंडारण में रखे गए माल भी शामिल होते हैं।
वे उत्पादन और वितरण प्रक्रियाओं का एक अनिवार्य हिस्सा हैं और पूंजी का प्रतिनिधित्व करते हैं जो बिना बिके माल में बंधी होती है। इसे इन्वेंट्री निवेश कहा जाता है।

एक फर्म इन्वेंटरी क्यों रखती है?

एक फर्म कई कारणों से इन्वेंट्री रखती है। ये हैं:

फर्म भविष्य में माल की मांग को पूरा करने के लिए इन्वेंट्री रखती हैं। मांग मिलने के तुरंत बाद माल का उत्पादन नहीं किया जा सकता। इसलिए, इन्वेंट्री रखने से फर्म अपने उत्पादन और वितरण प्रक्रियाओं को सुचारू बनाती हैं।

कई आपूर्तिकर्ता मात्रा पर छूट देते हैं। इसलिए, कंपनियाँ थोक में खरीदना पसंद करती हैं और इन छूटों का लाभ उठाने के लिए माल का स्टॉक रखना पसंद करती हैं।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

इन्वेंटरी इसलिए रखी जाती है क्योंकि किसी फर्म के लिए बड़ी मात्रा में माल का उत्पादन करना और इन्वेंटरी रखना कम खर्चीला होता है। यह पैमाने के अर्थशास्त्र का पालन करता है: बड़ा उत्पादन उत्पादन की सीमांत लागत को कम करता है।

कभी-कभी किसी वस्तु की उत्पादन प्रक्रिया ऐसी होती है कि उसके उत्पादन के लिए इन्वेंट्री का निर्माण स्वाभाविक होता है। यह उन वस्तुओं के लिए सच है जिनकी उत्पादन प्रक्रिया पूरी होने में बहुत अधिक समय लगता है। जब तक वस्तु का उत्पादन नहीं होता, तब तक वह इन्वेंट्री में रहती है।

जब कुछ वस्तुओं को बैचों में खरीदा और/या बेचा जाता है, तो स्टॉक रखना अपरिहार्य हो जाता है।

इन्वेंटरी बिक्री अनुपात और कारक

विनिर्माण इन्वेंट्री और बिक्री के अनुपात को इन्वेंट्री बिक्री अनुपात कहा जाता है। यह कई आर्थिक चरों पर निर्भर करता है।

यदि नया माल मंगाने की लागत अधिक है, तो इन्वेंट्री-बिक्री अनुपात भी अधिक होगा।

यदि ऑर्डर किए गए माल की पूर्ति की गति धीमी है, तो इन्वेंट्री-बिक्री अनुपात बढ़ जाएगा।

इन्वेंट्री-बिक्री अनुपात भी बिक्री के स्तर पर निर्भर करता है। जब बिक्री कम होती है, तो इन्वेंट्री-बिक्री अनुपात अधिक होगा। क्योंकि जब बिक्री कम होती है, तो अनिश्चितता अधिक होती है।

अंत में, ब्याज दर है। चूंकि फर्म समय के साथ इन्वेंट्री रखना चाहती हैं, इसलिए उन्हें इन्वेंट्री के लिए सामान बनाने के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसके साथ ब्याज जुड़ा हुआ है। जैसे-जैसे ब्याज दर बढ़ती है, इन्वेंट्री रखने की लागत बढ़ती है। इसलिए, फर्म कम इन्वेंट्री रखेंगी। इसलिए, ब्याज दर में कम वृद्धि के साथ वांछित इन्वेंट्री-बिक्री अनुपात में गिरावट की उम्मीद की जानी चाहिए।

7.5.1 प्रत्याशित बनाम अप्रत्याशित इन्वेंट्री निवेश

इन्वेंटरी का निर्माण दो प्रकार से हो सकता है: प्रत्याशित और अप्रत्याशित। फर्म हमेशा आपूर्ति श्रृंखला को सुचारू बनाने के लिए कुछ इन्वेंट्री रखना चाहती हैं। स्वेच्छा से, फर्म भविष्य की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इन्वेंट्री रखना चाहती हैं। यह इन्वेंट्री किसके द्वारा बनाई जाती है

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

फर्म जानबूझकर ऐसा करती है, इसलिए इसे प्रत्याशित या वांछित इन्वेंट्री कहा जाता है। जब भविष्य में उच्च मांग के बारे में फर्म की उम्मीद गलत साबित होती है, तो इन्वेंट्री का जो स्टॉक अपने आप बनता है, उसे अप्रत्याशित या अवांछित इन्वेंट्री कहा जाता है।

जबकि प्रत्याशित इन्वेंट्री निवेश कुल मांग में वृद्धि करता है, अप्रत्याशित इन्वेंट्री निवेश अप्रत्याशित रूप से कम कुल मांग का परिणाम है। इस प्रकार, इन्वेंट्री का उच्च निर्माण या तो घटती कुल मांग या बढ़ती कुल मांग से जुड़ा हो सकता है। इसलिए, बढ़ती इन्वेंट्री के दो अलग-अलग निहितार्थ हो सकते हैं। फिर इन्वेंट्री में वृद्धि का कारण महत्वपूर्ण है।

7.5.2 व्यापार चक्र में इन्वेंटरी

कुल मांग के किसी भी अन्य घटक की तुलना में व्यापार चक्र में इन्वेंट्री में अधिक उतार-चढ़ाव होता है। मंदी के दौरान, कुल मांग गिरती है, और परिणामस्वरूप, बिना बिके इन्वेंट्री बनती है। इससे अप्रत्याशित इन्वेंट्री बढ़ जाती है। बिक्री के लिए इन्वेंट्री का अनुपात बढ़ गया। परिणामस्वरूप, फर्म उत्पादन में कटौती करती हैं और अपनी इन्वेंट्री के स्टॉक के माध्यम से बिक्री को पूरा करती हैं।

दूसरी ओर, जब अर्थव्यवस्था में सुधार होने लगता है, तो फ़र्म मांग में वृद्धि की आशा करती हैं। फिर फ़र्म बढ़ती मांग की प्रत्याशा में अधिक उत्पादन और अधिक इन्वेंट्री बनाना शुरू कर देती हैं। प्रत्याशित और अप्रत्याशित इन्वेंट्री संभावनाओं के संयोजन के परिणामस्वरूप व्यापार चक्र उत्पन्न होता है। इन्वेंट्री का व्यवहार आउटपुट के लिए समायोजन तंत्र को दर्शाता है।

7.5.3 जस्ट-इन-टाइम इन्वेंट्री निवेश

जस्ट-इन-टाइम इन्वेंट्री उत्पाद की मांग के अनुसार आपूर्ति को सिंक्रनाइज़ करने की अवधारणा है। इन्वेंट्री को बिक्री या कुल मांग के अनुरूप अधिक बारीकी से रखा जाता है। जस्ट-इन-टाइम इन्वेंट्री प्रबंधन एक अवधारणा है जिसे जापान से उधार लिया गया है। यह हमें इन्वेंट्री को कम करने में मदद करता है क्योंकि मांग को पूरा करने के तुरंत बाद आपूर्ति तैयार हो जाएगी। इसके बाद इन्वेंट्री की एक छोटी राशि की आवश्यकता होती है, और इसलिए इन्वेंट्री निवेश की एक छोटी राशि की आवश्यकता होती है। यह उत्पादन के प्रत्येक चरण में आवश्यक सभी इनपुट को सटीक समय पर एक साथ लाता है जब उनकी आवश्यकता होती है। नतीजतन, इन्वेंट्री में निवेश कम हो गया है। व्यावसायिक तरीकों और प्रौद्योगिकी के सुधार के साथ, कम इन्वेंट्री बनाए रखना संभव है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पाठ में पूछे जाने वाले प्रश्न

7. फर्में इन्वेन्सोटी रखती हैं, क्योंकि

क) वे धारण करना चाहते हैं,

ख) सुचारू आपूर्ति श्रृंखला के लिए,

ग) इन्वेंटरी रखने के लिए अधिक स्थान के लिए।

8. जब इन्वेंटरी बढ़ रही हो,

क) मंदी है,

b) अर्थव्यवस्था में तेजी है, c) या तो a) या b)

7.6 सारांश

निवेश वह व्यय है जो पूंजी में वृद्धि करता है। व्यवसाय के निश्चित निवेश के नवशास्त्रीय सिद्धांत में यह देखा गया है कि निवेश की दर इस बात से निर्धारित होती है कि फर्म किस गति से अपने पूंजी स्टॉक को वांछित पूंजी स्टॉक की ओर समायोजित करती हैं। पूंजी की किराये की लागत वांछित पूंजी स्टॉक निर्धारित करती है। उच्च ब्याज दर पूंजी की किराये की लागत को बढ़ाती है और इसलिए वांछित पूंजी स्टॉक को कम करती है।

आवास निवेश का सिद्धांत आवास के स्टॉक की मांग से शुरू होता है।
मांग पर धन, वैकल्पिक निवेशों पर उपलब्ध ब्याज दरों और बंधक दरों का प्रभाव पड़ता है। आवास की कीमत आवास के स्टॉक और आवास की मांग के बीच की बातचीत से निर्धारित होती है। आवास निवेश मौद्रिक और राजकोषीय नीति से भी प्रभावित होता है। इन्वेंटरी निवेश व्यापार चक्र में उतार-चढ़ाव करता है। फर्म हमेशा इन्वेंटरी बनाए रखना चाहती हैं। मंदी भी इन्वेंटरी बना सकती है। इन्वेंटरी के लिए कुछ निवेश की आवश्यकता होती है और फर्म को इसकी लागत चुकानी पड़ती है। यह निवेश इन्वेंटरी चक्र का अनुसरण करता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

7.7 शब्दावली

त्वरक मोड: वह परिसंपत्ति जिसका निवेश व्यय उत्पादन में परिवर्तन के समानुपाती होता है तथा पूंजी की लागत से प्रभावित नहीं होता; यह इन्वेंट्री निवेश के व्यवहार का आश्चर्यजनक रूप से अच्छा वर्णन करता है।

व्यापार चक्र: अर्थव्यवस्था के विस्तार और संकुचन का पैटर्न व्यापार निश्चित निवेश: उत्पादन में प्रयुक्त मशीनरी, उपकरण और संरचनाओं में वार्षिक वृद्धि।

ऋण राशनिंग: प्रचलित ब्याज दर पर व्यक्तियों द्वारा उधार ली जा सकने वाली धनराशि को सीमित करना।

वांछित पूंजी स्टॉक: पूंजी स्टॉक जो लाभ को अधिकतम करता है।

इन्वेंटरी चक्र: बिक्री में परिवर्तन के प्रति इन्वेंटरी निवेश की प्रतिक्रिया, जो समग्र मांग में और अधिक परिवर्तन का कारण बनती है।

इन्वेंटरी निवेश: उपलब्ध माल के स्टॉक में वृद्धि।

निवेश: नई पूंजी की खरीद, विशेष रूप से व्यापार क्षेत्र द्वारा।

निवेश सब्सिडी: निजी निवेश की लागत के एक हिस्से का सरकारी भुगतान।

निवेश कर क्रेडिट: यह कर क्रेडिट कंपनियों को तब दिया जाता है जब वे अपनी कमाई का पुनर्निवेश करती हैं।

जस्ट-इन-टाइम इन्वेंट्री प्रबंधन: इन्वेंट्री प्रबंधन रणनीति: कंपनियां माल का उत्पादन होते ही उसे बाहर भेजकर, तथा केवल आवश्यकता होने पर ही पुर्जे मंगाकर, यथासंभव कम समय के लिए इन्वेंट्री रखती हैं।

पूंजी का सीमांत उत्पाद (एमपीके): पूंजी की एक इकाई जोड़ने से प्राप्त उत्पादन में वृद्धि, जिसमें अन्य कारक इनपुट स्थिर रखे जाते हैं।

निवेश का क्यू-सिद्धांत: निवेश सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि जब परिसंपत्तियां अपनी पुनरुत्पादन लागत के सापेक्ष मूल्यवान होंगी तो निवेश अधिक होगा। परिसंपत्ति मूल्य और लागत के अनुपात को क्यू कहा जाता है।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

पूंजी की किराया लागत: समय की एक निश्चित इकाई के लिए पूंजी के उपयोग की लागत, आमतौर पर एक साल।

आवासीय निवेश: आवास में निवेश।

7.8 पाठ्य-अध्याय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. सी) एमपीके = आरसी
2. बी) नकारात्मक रूप से संबंधित
3. क) सकारात्मक रूप से संबंधित,
4. क) वित्तीय बाजार
5. सी) ऊर्ध्वाधर 6.

बी) ऊपर की ओर ढलान

7. बी) सुचारू आपूर्ति श्रृंखला के लिए,
8. c) या तो a) या b)

7.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. किराया लागत विधि की सहायता से वांछित पूंजी स्टॉक का निर्धारण करें।
2. कर नीतियां पूंजी के वांछित स्टॉक को कैसे प्रभावित कर सकती हैं?
3. वांछित स्टॉक तक पहुंचने के लिए पूंजी स्टॉक समायोजन तंत्र का वर्णन करें पूंजी।
4. आवास के स्टॉक आपूर्ति वक्र और प्रवाह आपूर्ति वक्र के बीच अंतर बताएं।
5. आवास के बाजार मूल्य निर्धारण की विधि का वर्णन करें।
6. आवास क्षेत्र में निवेश की दर बताएं।
7. आवासीय निवेश में क्यू-सिद्धांत की व्याख्या करें।
8. आवास निवेश में मौद्रिक नीति की भूमिका की व्याख्या करें।

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

9. किसी फर्म को इन्वेंटरी रखने की आवश्यकता क्यों होती है?

10. प्रत्याशित और अप्रत्याशित इन्वेंट्री निवेश के बीच आलोचनात्मक अंतर बताएं।

11. व्यापार चक्र में इन्वेंटरी की व्याख्या करें।

12. जस्ट-इन-टाइम इन्वेंट्री क्या है? समझाइए।

7.10 संदर्भ

डोर्नबुश, आर, फिशर, एस. (1994). मैक्रोइकॉनॉमिक्स, 6वां संस्करण, मैकग्रॉ-हिल.

7.11 सुझाए गए पठन सामग्री

ब्रैनसन, डब्ल्यू. (2013). मैक्रोइकॉनॉमिक्स: थ्योरी एंड पॉलिसी, तीसरा संस्करण, ईस्ट वेस्ट प्रेस.

© दूरस्थ एवं सतत शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर,
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

Machine Translated by Google

978-81-19169-91-7

Department of Distance and Continuing Education
Campus of Open Learning, School of Open Learning, University of Delhi